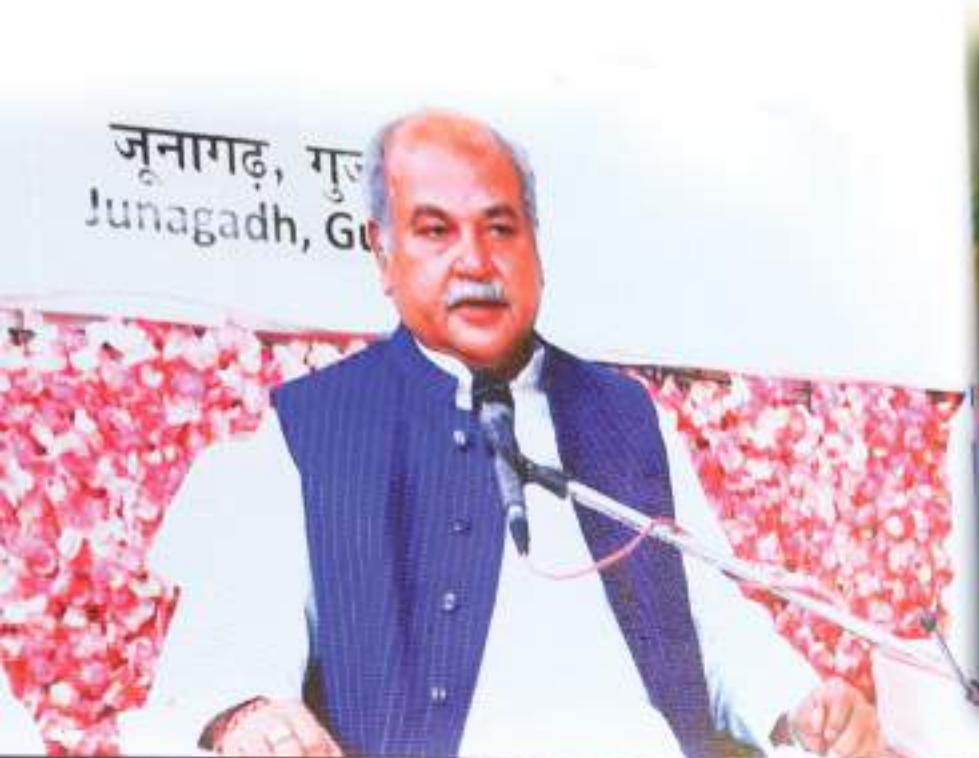


भारतीय नारियल पत्रिका



24वाँ विश्व नारियल दिवस, राष्ट्रीय पुरस्कारों का वितरण
और नाविबो के छठे राज्य केंद्र का लोकार्पण

भारतीय नारियल पत्रिका

भाग XXXIII, संख्या : 2
जुलाई - सितंबर 2022
कोची- 11



नारियल विकास बोर्ड

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बैंगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई, असम के गुवाहाटी और विहार के पटना में हैं। बोर्ड के पांचः राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओडिशा के भुवनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकाता, और प्रदेश के बिहारवाड़ा, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघशासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नेर्यमंगलम (केरल), बिहारवाड़ा (आंध्र प्रदेश), कोडागांव (छत्तीसगढ़), मधेपुरा (विहार), अभयपुरा (असम), पित्तापल्ली (ओडिशा), मंडचा (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र), धली (तमिलनाडु), साउथ हिच्चाचेरा (त्रिपुरा) तथा फुलिया (पश्चिम बंगाल) में हैं। इसके अलावा बोर्ड का बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र दिल्ली में है। केरल के आलुवा के पास वाप्रक्कुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

बोर्ड के मुख्य प्रकार्य

- नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों का विपणन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना।
- नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना।
- नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अपनाने को प्रोत्साहित करना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मूलक भाव मिलने हेतु उपाय अपनाना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के आयात और निर्यात नियंत्रित करने हेतु उपायों की सिफारिश करना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना।
- नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के कृषि, प्रौद्योगिकीय, औद्योगिक या आर्थिक अनुसंधानों को सहायता देना, प्रोत्साहन देना, बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना।
- केन्द्रीय सरकार तथा बड़े पैमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के विपणन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन संबंधी आँकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना।
- नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैं: रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विपणन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निर्दर्शन, बाज़ार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी।

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं प्राणी कीटों व रोगों से ग्रस्त नारियल बागानों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निर्दर्शन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, बाज़ार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और अंगीकरण।

शुल्क

वार्षिक	40 रु.
एक प्रति	10 रु. नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा
आजीवन (30 वर्ष)	1000 रु. सर्वथी क्रेबीपीएस, काक्कनाट में मुद्रित

इस अंक में

04 संदेश

05 पूर्वोत्तर भारत में नारियल की खेती -
समस्याएँ एवं संभावनाएँ

डा.शरण कुमार रिजाल

08 नारियल बागों में अंतरफसलों का कैफेटेरिया
अनिताकुमारी पी., जितन बाजु, अंजु कृष्णन एवं कल्पनामोल के.

16 नाविबो फार्म, नेचर्मंगलम - केरल में गुणवत्तापूर्ण
नारियल पौधों की मांग की पूर्ति के लिए प्रतिबद्ध
जोर्ज पीटर, बाजी सी.एस.और रश्मी डी.एस.

22 नाशीकीटों का समुचित प्रबंधन करें और नारियल
की उपज बढ़ाएं
अधिष्ठेक शुक्ला

27 नारियल बागों में मासिक कार्य

40 समाचार

62 बाज़ार समीक्षा

65 बाज़ार रिपोर्ट



संदेश

प्रिय पाठकों,

सितंबर महीना इसके गवाह बने कि संपूर्ण जगत का नारियल समुदाय विश्व नारियल दिवस मनाने और नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियों के विकास हेतु नींव डालने के लिए प्रत्यक्ष और वर्चुअल तरीके से भारत में सम्मिलित हुआ। अच्छी कृषि पद्धतियाँ विषयक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला ऐसे समय पर भारत में आयोजित हुईं जब कृषि प्रणाली को अधिक प्रभावी, समावेशी, सुदृढ़ और सुस्थिर कृषि - खाद्य प्रणाली में परिवर्तित करने की ओर विश्व भर में ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। सभी के लिए बेहतर उत्पादन, बेहतर पोषण, बेहतर पर्यावरण और बेहतर जीवन ही इसका लक्ष्य है। खाद्य सुरक्षा और पोषण की ओर बढ़ते इस सफर में आहार की गुणवत्ता और संरक्षा सर्वाधिक महत्व रखता है, न सिर्फ आहार के लिए जो हम खाते हैं, बल्कि पर्यावरण और किसान बन्धु के लिए भी, जो हमें आहार खिलाते हैं। इंटरनेशनल कोकनट कम्यूनिटी के नेतृत्व में संपन्न यह कार्यशाला कृषि, विनिर्माण और स्वच्छता के क्षेत्र में अच्छी पद्धतियों की सुसंगत प्रणाली के विकास के लिए समुचित मंच के रूप में उभर आयी।

कार्यशाला में विशेषज्ञों ने फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, भारत, श्रीलंका, मलेशिया, थाईलैंड और वियतनाम जैसे प्रमुख नारियल उत्पादक देशों के नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियों की वर्तमान स्थिति पेश की। द्वीपीय देशों में और महाद्वीपीय देशों में अपनायी जाने वाली पद्धतियों में काफी अंतर प्रकट हुआ था और अतः समन्वित मानदंड तैयार करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया। सभी जैविक और अजैविक संघटक जैसे सूर्यप्रकाश, पानी, हवा, मिट्टी में निहित पोषकतत्व, वनस्पति एवं जीव जगत का विवेकपूर्ण उपयोग करते हुए सुस्थिर नारियल उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निर्दर्शन और अंतरण करने से सुनिश्चित रूप से जीवंत नारियल क्षेत्र विकसित होगा जो लाखों नारियल किसानों को खाद्य सुरक्षा, आजीविका सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करेगा। देशी और विदेशी जननद्रव्यों का विस्तारण एवं संरक्षण और सूक्ष्म प्रवर्धन सहित गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों के उत्पादन के लिए तकनीकों का विकास करने से नारियल बागानों की आर्थिक व्यवहार्यता ही नहीं बढ़ेगी बल्कि लघु जोतवाले नारियल किसानों के लिए किफायतमंद आय भी सुनिश्चित होगी। तुड़ाई उपरांत प्रबंधन एवं लघु प्रसंस्करण से शुरू करके बुनियादी स्तर पर प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन सुसाध्य बनाते हुए उपभोक्ताओं की बदलती आवश्यकताओं और स्वास्थ्य एवं जीवनशैली मांगों के अनुरूप नूतन प्रसंस्कृत उत्पादों की ओर कदम बढ़ाने से किसानों में उद्यमिता विकास ही नहीं होगा बल्कि वे अलग तरीके से सोचने, कुशलता से काम करने, चुनौतियों का सामना करने और अप्राप्य लक्ष्य तक पहुँचने के लिए भी काबिल बन जाएंगे।

नारियल की खेती में लघु और सीमांत किसानों की अधिकता ग्रूप प्रमाणन का विकल्प खोल देता है जो बोर्ड द्वारा बनाए गए किसान समूहों के मंच के ज़रिए मुक्किन बनाया जा सकता है। यह महसूस हुआ है कि एक ऐसी समग्र प्रणाली जो खेती में अच्छी पद्धतियों, एचएसीसीपी नीतियों, प्रबंधन प्रणालियों, पता लगाने की क्षमता और वापस करने की प्रणाली आदि सहित खाद्य व्यापार में खाद्य संरक्षा का प्रबंध करने पर नियंत्रण रखता है, नारियल के लिए लाभकर साबित होगा। किसानों को इससे अवगत बनाना होगा कि अच्छी कृषि पद्धतियाँ अपनाने से हमेशा अधिमूल्य मिलना संभव नहीं होता है, किंतु यह विश्व बाज़ार की ओर अवसरों की नई दुनिया खोल देती है जो अन्यथा उनके लिए अप्राप्य रहता है।

आइए, हम एकसाथ मिलकर काम करें ताकि नारियल क्षेत्र को समग्र और समावेशी रूप में विकसित कराया जा सके ताकि लघु जोत वाले लाखों किसानों को ही नहीं बल्कि धरती माँ को भी इसका फायदा मिल सके जो मानवराशि के लिए ईश्वर का वरदान इस चमत्कारी फसल की वासभूमि है जिसे कल्पवृक्ष कहना एकदम सही है।

संपादक



पूर्वांतर भारत में नारियल की खेती - समस्याएँ एवं संभावनाएँ

डा.शरण कुमार रिजाल

मुख्य तकनीकी अधिकारी(सेवानिवृत्त), केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान

नारियल प्रायद्वीप भारत का एक महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय फल है। इसकी खेती सीमित स्थानों में, खास तौर पर दक्षिणी/पूर्वी और पश्चिमी तटीय क्षेत्रों में होती है। परंतु इसका उपयोग पूरे देश के लोग करते आए हैं। आज से करीब 40 साल पहले नारियल के पेड़ बिहार, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, असम, नागालैंड, मणिपुर आदि राज्यों में विरले ही दिखाई पड़ते थे। परंतु वर्तमान में इन क्षेत्रों के प्रत्येक गली, शहर व कस्बों में नारियल का पेड़ एक आम दृश्य बन गया है। पूर्वी क्षेत्र में सूखे नारियल का प्रयोग पूजा-अर्चना, मिठाई बनाने के लिए, पान-मसाला में तथा मिस्री-गुड़ आदि के साथ सीधे खाने के लिए होता है जबकि कच्चा फल याने डाब का पानी अत्यंत लोकप्रिय पेय है। नारियल के पके हुए पूर्ण फल व गरी तथा डाब महँगे भाव पर खरीदा जाता है। यहाँ के प्रमुख त्योहारों (दुर्गा पूजा, बिहु, दीपावली, याउसंग, छठ पूजा आदि) के समय तो नारियल का भाव आसमान छू लेता है। सामान्य तौर पर नारियल का भाव प्रति फल 40 रु. होता है जो त्योहार के समय 70-80 रु. पर बिकते हैं। इतने में भी माँग के अनुसार आपूर्ति न होने के कारण नारियल बाहर से लाया जाता है। इस तथ्य से इसका महत्व और माँग का अनुमान लगाया जा सकता है।

भारत में पिछले 100 वर्षों में नारियल के क्षेत्रफल में 11.13 प्रतिशत और उत्पादन में 62 प्रतिशत की अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गई है। इसी के साथ ही विगत 15-20 वर्षों से सरकार

के विभिन्न निकाय जैसे नारियल विकास बोर्ड, राज्य सरकार की बागवानी/कृषि विभाग, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल, असम कृषि विश्वविद्यालय आदि, सक्रिय गैर-सरकारी संस्थाएँ तथा कंपनियों ने उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में नारियल की खेती, प्रसंस्करण तथा विपणन को बढ़ावा देने में बड़ी भूमिका निभाई है। इसके फलस्वरूप विगत 15 वर्ष याने 2006-07 से 2020-21 तक असम में नारियल का खेतीगत क्षेत्र 19000 हेक्टर से बढ़कर करीब 22000 हेक्टर हो गया है और उत्पादन में 1530 लाख फल से प्रति वर्ष लगभग 1600 लाख फल की बढ़ोत्तरी हुई है। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में नारियल की खेती करने वाला दूसरा प्रमुख राज्य त्रिपुरा है और वहाँ नारियल का खेतीगत क्षेत्र करीब 3.5 हजार हेक्टर से करीब 4.70 हजार हेक्टर और उत्पादन 70 लाख फल से 185 लाख फल तक पहुँच गया है। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में नारियल उत्पादों के मूल्य का अनुमान 30 करोड़ रुपए लगाया गया है, जो इस उभरते हुए क्षेत्र में नारियल का महत्व दर्शाता है। मिज़ोरम के कोलसिब, मार्मित और लुड्लै, अरुणाचल प्रदेश का पासिघाट, मेघालय के तुरा और गारो पहाड़, मणिपुर के जिरिबाम और टाइगर हिल्स, नागालैंड के जालुकि और दिमापुर तथा त्रिपुरा के प्रायः छह जिले नारियल की खेती के लिए उपयुक्त पाए गए हैं। इन सभी क्षेत्रों में सरकार के अनुसंधान एवं विकास निकायों ने नारियल की

● नारियल खेती

खेती के लिए आवश्यक रणनीति बनाकर कार्य आरंभ भी किया है।

इसप्रकार उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में नारियल की अहमियत और खेती की संभावनाओं के बारे में हमें जानकारी मिलती है। लेकिन इन संभावनाओं के साथ साथ यह क्षेत्र काफी समस्याओं का भी सामना कर रहा है। इस लेख में आगे इन सभी प्रमुख बिंदुओं पर संक्षिप्त चर्चा की गई है।

संभावनाएँ

1) क्षेत्र विस्तार से उत्पादन में वृद्धि

उत्तर-पूर्व भारत के छह राज्य - असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिज़ोरम, मणिपुर और नागालैंड के कई क्षेत्रों का मौसम, नारियल की खेती के लिए अनुकूल पाया गया है। यहाँ अनुमानित अतिरिक्त 20,000 हेक्टर ज़मीन में इस फसल की खेती शुरू करने की सिफारिश हुई है। फसल लगाने के 10 वर्ष बाद उत्पादन प्राप्त होने से मौजूदा माँग और आपूर्ति पूरी होगी और क्षेत्र आत्मनिर्भर हो जाएगा, जिससे संबंधित उद्योग और व्यापार भी बढ़ेगा। इस क्षेत्र के जनजातियों के प्रत्येक गाँव/कस्बे में दूर तक फैली सामुदायिक जमीन उपलब्ध होती है। इसमें नारियल की खेती की जा सकती है, जिससे रोज़गार के नए अवसर सृजित होने के साथ साथ स्थानीय लोगों की आय भी बढ़ जाएगी।

2) नर्सरी/पौधशाला की स्थापना

इस क्षेत्र में नारियल के पौधों का बहुत अभाव है। कृषकों को अच्छी गुणवत्ता वाले पौधे न मिलने के कारण निजी नर्सरी पर निर्भर होना पड़ रहा है। हालांकि नारियल विकास बोर्ड तथा अन्य सरकारी निकाय नर्सरी स्थापना के लिए कई योजनाएँ कार्यान्वित कर रहे हैं, जिनके तहत लाभार्थी-कृषकों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान की जाती है। इससे स्थानीय किसान लाभान्वित हो जाते हैं और साथ ही साथ व्यापार-वाणिज्य और अभिवृद्धि की नई राह भी मिल जाती है।



नारियल नर्सरी

3) नारियल के पत्तों से केंचुआ खाद/वर्मीकम्पोस्ट

वर्तमान समय में इस क्षेत्र में, नारियल के सिर्फ दो भागों याने डाब पानी और पके फल की गरी का ही उपयोग होता है। अन्य भाग जैसे पत्ते, फल के छिलके, तना, फल का खोल/सीप आदि बागानों में ऐसे ही फेंके जाते हैं। जैविक कृषि के लिए उपयोगी केंचुआ खाद अर्थात् वर्मीकम्पोस्ट बनाने के लिए नारियल के पत्ते का उपयोग किया जा सकता है और समुचित विधि अपनाकर 90 दिन में उच्चकोटि के वर्मीकम्पोस्ट में परिणत किया जा सकता है। एक वयस्क नारियल पेड़ से 5-6 पत्तियाँ गिर जाती हैं। इनसे करीब 600 ग्रा. सूखे पत्ते प्राप्त होते हैं जिससे 1.3 कि.ग्रा. सूखी वर्मीकम्पोस्ट मिल जाती है जिसका वर्तमान मूल्य 1800 रुपए के आसपास है।

4) नारियल के रेशों से कोकोपीट

कोकोपीट बहुत ही लोकप्रिय है और यह नारियल के सूखे फल के छिलके से बनाया जाता है। आधुनिक सघन/शहरी खेती में कोकोपीट का व्यापक प्रयोग होता है और इसकी मांग तेज़ी से बढ़ रही है। उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में कोकोपीट की आपूर्ति दक्षिण भारत/महाराष्ट्र से होती है जिसके विपरीत हम कोकोपीट उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं, एक समृद्ध व्यापारी भी बन सकते हैं।

5) नारियल के पुष्पक्रम से नीरा

नारियल का पुष्पक्रम एक नाव के आकार का करीब 1.2 मीटर लंबा और 40 से.मी. चौड़ी आकृति का होता है, जो धीरे-धीरे बड़ा होकर खुलता है और इसी दौरान इसके अंदर पौष्टिकतत्वों से भरपूर स्वादिष्ट, मीठा रस जमता है। इसमें छेद करने से वह रस बाहर निकलता है, जिसे नीरा कहते हैं। पुराने समय में इसको खुले में एक बर्टन में एकत्रित किया जाता था, जो तुरंत किण्वित हो जाता था। अब एक ऐसी विधि विकसित की गई है जिसमें ठंडे में इसका एकत्रीकरण और भंडारण होता है। इस तकनीक से नीरा खराब नहीं होता है और स्वास्थ्य-पेय के रूप में विपणन होने के साथ ही इसका प्रसंस्करण करके गुड़ तैयार किया जाता है, जो अधिक दिन तक सुरक्षित रहता है। नीरा का एकत्रीकरण, भंडारण तथा प्रसंस्करण में स्थानीय युवाओं के लिए रोज़गार, आय और व्यापार की बेहतर संभावनाएँ सृजित होती हैं।

इसी तरह नारियल के पत्तों की तीलियों से झाड़ु, तने से कई प्रकार के फर्नीचर तथा अन्य उपयोगी सामग्रियाँ बनायी जाती हैं। उत्तर-पूर्व से हजारों युवक रोज़गार की खोज में





नारियल बाग में अंतरफसलों की खेती

दक्षिणी राज्यों में पलायन करते हैं। नारियल आधारित ऐसे ही कई उद्योग स्थापित कर इसे रोका जा सकता है।

समस्याएँ

1) शीतकाल में ठंड का प्रकोप

सर्दी के समय (दिसंबर से फरवरी तक) यहाँ का तापमान कभी-कभी बहुत कम (5 डिग्री सेल्सियस) हो जाता है जिसके कारण कच्चे फलों, पत्तों, फूलों आदि में काले धब्बे आने के कारण उस भाग को क्षति पहुंचती है। ऐसे फल गिर जाते हैं और फूल सूख जाते हैं। फलस्वरूप उत्पादन में कमी होती है।

2) रोग का प्रकोप

गैनोडर्मा/जड़मुझ्झा रोग, तना स्वरण रोग, कली सड़न आदि रोग इस क्षेत्र के प्रमुख रोग हैं। गैनोडर्मा रोग में सर्वप्रथम निचली स्तर के पत्ते भूरे होकर सूख जाते हैं। धीरे धीरे ऊपर के पत्ते भी सूख जाते हैं और अंत में सारे पत्ते और कली भी सूख जाती हैं। अक्तूबर से अप्रैल तक यह रोग दिखाई पड़ता है। जड़ें पूरी तरह सड़ जाती हैं जिसके कारण पत्तों पर यह लक्षण दिखाई देता है। असम के कई इलाकों में इस रोग के कारण बहुत सारे नारियल पेड़ नष्ट हो गए हैं। कली सड़न रोग में सर्वप्रथम कली को नुकसान पहुंचता है और यह सड़ जाता है। यह रोग मानसून की शुरुआत में आरंभ होता है और कम उम्र के पेड़ों में इस रोग का प्रकोप अधिक देखा जाता है।

3) कीटों का प्रकोप

इस क्षेत्र में लाल ताड़ घुन (रेड पाम वीविल) तथा एरियोफिड माइट सबसे प्रमुख घातक कीट हैं। अधिकतर किसान लाल ताड़ घुन के लक्षण को रोग मानकर भ्रमित हो जाते हैं। क्षतिग्रस्त पेड़ के पत्तों का पीला पड़ जाना, तने पर

नारियल खेती ●

कीट द्वारा चबाने की आवाज आना, तने में छेद होना और छेदों से चबे हुए रेशे/तरल पदार्थ का बाहर निकलना कीट की क्षति के कुछ प्रमुख लक्षण हैं। पिछले कुछ वर्षों से इसका प्रकोप बढ़ गया है। कच्चे/नन्हे फलों के ऊपरी भाग पर घुमावदार पैटर्न में काले खुरदरे-से दाग एरियोफिड माइट का प्रथम लक्षण है। इस कीट के असंख्य छोटे नगन आँखों के लिए अदृश्य बच्चे नरम फल का बाहरी रस चूस कर उसे कमज़ोर बना देते हैं। यह इतना छोटा कीट है कि आम आँखों से नज़र नहीं आता है और यह अदृश्य कीट फल का रस चूस लेता है। इसके प्रकोप से उत्पादन कम हो जाता है।

4) नारियल खेती संबंधी वैज्ञानिक-तकनीकी

ज्ञान का अभाव

उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में नारियल के लिए स्थानीय जलवायु अनुकूल वैज्ञानिक एवं तकनीकी खेती पद्धतियों का अभाव है। स्थानीय कृषि विज्ञान केंद्र, बागवानी विभाग भी नारियल की खेती किए जाने वाले सभी इलाकों में वैज्ञानिक एवं तकनीकी खेती पद्धतियों का प्रसार करने में पूरी तरह सक्षम नहीं है। नारियल खेती से संबंधित बहुत सारे अंधविश्वास और गलतफहमियां अभी भी विद्यमान हैं।

5) नारियल की तुड़ाई-उपरांत प्रसंस्करण/

मूल्य वर्धन का अभाव

उत्तर-पूर्व में नारियल की तुड़ाई, एकत्रीकरण, भंडारण तथा प्रसंस्करण परंपरागत तरीके से ही चल रहा है। उन्नत प्रौद्योगिकियों का प्रयोग नहीं हो रहा है। हमारे देश में नारियल के पेड़ पर आसानी से चढ़ने के लिए, फल को तोड़ने, छिलके को अलग करने, खोपड़ी को अलग करने, डाब का भंडारण करने जैसे कार्यों के लिए कारगर तकनीकें विकसित हुए हैं। यहाँ नारियल का विपणन केंद्र भी नहीं है, जिससे कि कृषकों को अपने उत्पादों के लिए लाभकर मूल्य भी नहीं मिल पाता है। यहाँ से भुटान, नेपाल, म्यानमार एवं बंगलादेश निकट हैं और इन देशों में नारियल के विभिन्न उत्पादों के लिए अच्छी-खासी माँग हमेशा से है। इससे निर्यात को भी बढ़ावा मिलेगा।

खाद्य-विदें के अनुसार नारियल एक ऐसा उत्पाद है जिससे नारियल सिरका से लेकर कई प्रकार के मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं और इसके स्वास्थ्यपरक एवं पौष्टिक मूल्य भी काफी अधिक है। इससे विटामिन बी-12 भी निकाला जा सकता है। अतः खूबियों से भरे नारियल का खूब लाभ उठाने में पूर्वोत्तर भारत को आगे बढ़ना समय की माँग है। ■

नारियल बागों में अंतरफसलों का कैफेटेदिया

महिला किसान समूह आधारित विजयगाथा

अनिताकुमारी पी., जितिन घाजु, अंजु कृष्णन एवं कल्पनामोल के.
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान
प्रादेशिक केंद्र, कृष्णपुरम डाक, कायंकुलम

नारियल बाग एकीकृत प्रणालियों की पारिस्थितिक इकाइयाँ हैं जो पर्यावरणीय एवं आजीविका के लिए अवसर प्रदान करते हैं। आमतौर पर अधिकतर नारियल बाग लघु और सीमांत जोतें होते हैं जहाँ कृषक परिवार की सुविधानुसार उनकी ज़रूरतों, उनके पसंदीदा भोजन, आय के मुख्य स्रोतों तथा संसाधनों के अनुरूप वासभूमि खेती अपनायी जाती है। अनुसंधान एवं विस्तार हस्तक्षेप वाँछित प्रभाव प्राप्त करने के लिए असरदार परिणाम मिल जाने हेतु परिष्करण एवं अनुकूलन को आवश्यक मानते हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान का किसान प्रथम कार्यक्रम(एफएफपी)

2016 में शुरू हुआ था जिसका कार्यान्वयन केरल में आलप्पुझा जिले के पत्तियूर पंचायत में किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों/महिला किसानों का सशक्तिकरण एवं उनकी आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु सहभागी प्रौद्योगिकी एकीकरण के लिए हस्तक्षेप करना है। इस इलाके में पहचानी गई मुख्य समस्याएं थीं:

- वासभूमि में नारियल एवं अन्य फसलों का खराब या औसत प्रबंधन।
- वासभूमि नारियल बागों में अंतरफसलों की उच्च पैदावार देने वाली किस्मों की खेती के बारे में जागरूकता का अभाव एवं इनको न अपनाना।

- सलाहकारी सेवाएं एवं विस्तार समर्थन तक पहुँच की कमी।
- बाग के उत्पादों के प्रसंस्करण एवं मूल्य वर्धन का अभाव।
- विस्तार सलाहकारी समर्थन और प्रक्षेत्र सेवाओं की अपर्याप्तता।
- प्रौद्योगिकियों की अत्यंत कम स्तर की जानकारी एवं कौशल।
- पंचायत में सक्रिय रूप से कार्यरत किसान संगठनों या किसान समूहों का अभाव।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान - किसान प्रथम कार्यक्रम (एफएफपी)

किसान प्रथम कार्यक्रम विभिन्न राज्यों में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का राष्ट्रीय फ्लैगशिप कार्यक्रम है। किसान प्रथम (बाग/ किसान/ नवाचार, संसाधन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी) कार्यक्रम में छह मोड्यूलों में सहभागिता अनुसंधान तथा विस्तार हस्तक्षेप शामिल हैं। आमतौर पर प्रौद्योगिकियों को फसलों के आधार पर अपनाने के लिए सिफारिश की जाती है। परंतु जैसा कि विभिन्न रिपोर्टों एवं अध्ययनों में सूचित किया गया है, प्रौद्योगिकियाँ अपनाने में बाह्य परिवर्ती कारकों सहित कई घटक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। इसके लिए समाज विज्ञान अनुसंधानकर्ताओं एवं प्रक्षेत्र कार्यकर्ताओं से अनुसंधान आधारित समर्थन एवं प्राप्त प्रक्रिया प्रलेखन नमूनों के साथ साथ प्रौद्योगिकी का स्वयमेव उपयुक्त परिष्करण एवं अनुकूलन की आवश्यकता होती है। ये किसानों द्वारा फसलों का चयन, संसाधन एवं आदान सामग्रियाँ, अभिवृत्तियाँ, सामूहिक दबाव एवं नतीजे, प्रक्षेत्रीय अनुभव, स्थितिजन्य विशेषताओं एवं सांस्कृतिक तत्वों से प्रभावित होंगे। अनुशासित प्रौद्योगिकियों के साथ नवाचारों के एकीकरण की गुंजाइश किसान समुदाय के बीच इनका स्वामित्व एवं स्वीकृति बढ़ाती है। कार्यक्रम के मोड्यूल हैं फसल, बागवानी, पशुधन, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन(एनआरएम), उद्यमिता विकास एवं मूल्यवर्धन और एकीकृत खेती प्रणालियाँ आदि। स्थान विनिर्दिष्ट उद्देश्यों के अनुसार मोड्यूलों का चयन किया जा सकता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा पूर्ण रूप से वित्तपोषित किसान प्रथम कार्यक्रम पत्तियूर पंचायत में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा 2016 में प्रारंभ किया गया हस्तक्षेप है जो अब भी जारी है।



हल्दी की फसल लेते हुए

नारियल की वासभूमि खेती एवं फसल प्रणाली -किसान प्रथम कार्यक्रम के हस्तक्षेपों के पूर्व की स्थिति

पत्तियूर ग्राम पंचायत में किसान प्रथम कार्यक्रम के परियोजना पूर्व सर्वेक्षण से सूचित हुआ कि अधिकांश बाग 25 से 100 सेंट (0.1-0.4 हेक्टर श्रेणी) के थे। अध्ययन में नमूने के तौर पर 740 किसानों को शामिल किया गया। इनमें से 16.1 प्रतिशत किसानों के पास 10 सेंट और उससे कम, 29 प्रतिशत किसानों के पास 11 से 25 सेंट, 24.8 प्रतिशत किसानों के पास 26-50 सेंट, 20.6 प्रतिशत किसानों के पास 51-100 सेंट और 8.7 प्रतिशत किसानों के पास एक एकड़ से अधिक ज़मीन थी। इस परिदृश्य से उत्पादन में संभावित कम बाज़ार अधिशेष की स्थिति से उबारने हेतु सामूहिक या क्लस्टर खेती की उपयुक्तता सूचित हुई। निष्कर्षों से यह भी ज्ञात हुआ कि आमतौर पर बारानी खेती का ही अनुसरण किया जाता है और सिंचाई प्रणालियों का अधिग्रहण अत्यंत कम ही किया गया है। खेती के स्थान विनिर्दिष्ट नीति निर्माण पर ध्यान दिया जाना होगा तथा सामूहिक एवं क्षेत्र आधारित जल परिरक्षण एवं सिंचाई विधियों के लिए रणनीतियाँ विकसित करनी होंगी। वासभूमि बागों के संबंध में उल्लेखनीय एक बात यह थी कि उनमें सब्जियों के छोटे छोटे बगीचे थे। यह हौसला बढ़ाने वाली बात है कि नमूनेदार किसानों के 71 प्रतिशत ने अपनी घरेलू खपत के लिए सब्जियों के बगीचे लगाए हैं जिससे किसान परिवार के लिए ताज़ा एवं जैविक सब्जियाँ सुनिश्चित हो जाती हैं। यह रिपोर्ट की गई कि इनमें से लगभग 11 प्रतिशत किसान घरेलू खपत के लिए अपेक्षित मात्रा से भी अधिक सब्जियों का

● अंतरफसल

उत्पादन करते हैं जिनकी बाज़ार में बिक्री की जाती है। नमूना सर्वेक्षण के अनुसार मात्र 18 प्रतिशत किसानों ने वासभूमि सब्जी बगीचे नहीं लगाए हैं। आँकड़ों से दर्शित हुआ है कि इकाई क्षेत्र से बेहतर उत्पादन के लिए वैज्ञानिक हस्तक्षेपों को अपनाने हेतु विस्तार सलाहकारी सेवाओं की आवश्यकता है। नारियल बागों में अंतरखेती बेमौसम की भारी वर्षा, बाढ़ तथा लंबी अवधि तक गर्मी का मौसम जैसी जलवायु परिवर्तन समस्याओं से बाधित होती है। मुख्य कीट एवं रोग समस्याएँ थीं अदरक का प्रकंद सड़न, हल्दी एवं अरवी में फक्कूदजन्य रोग, सूरन में सूत्रकृमि का प्रकोप, अदरक और हल्दी में तना छेदक, दलहनों में मीहु कीट, निम्नवर्ती इलाकों में सब्जियों पर चूहे एवं केकड़े का आक्रमण, चौलाई में सफेद जंग एवं पर्णचित्ति, कहू़ वर्गीय सब्जियों में फल मक्खियों का प्रकोप आदि। श्रमिकों की कमी और उनको लगाने की उच्च लागत, सरकारी परियोजनाओं एवं समर्थन प्रणालियों के न्यायसंगत वितरण एवं सूचना के लिए सामाजिक व्यवस्थाओं की कमी, मृदा उर्वरता में घटाव, खेती से प्राप्त आय में कमी तथा गर्मियों में पानी की गंभीर तंगी आदि अन्य आम समस्याएँ थीं। पत्तियूर पंचायत में मुख्य रूप से परिवार की खपत के लिए अत्यंत छोटे बागों में अंतरफसल के तौर पर कंदमूल फसलें, सब्जियां, हल्दी/अदरक तथा केले की खेती की जाती थी।

आलप्पुष्टा जिले के भरणिककावु ग्राम पंचायत में किए गए प्रक्षेत्र दौरे एवं सर्वेक्षणों से भी नारियल बागों में अंतरफसलों की समान स्थिति दर्शित हुई। मुख्य रूप से कंदमूल फसलें, मसाला फसलें, केले एवं सब्जियों की छोटे पैमाने पर अंतर खेती की जाती थी जो अधिकांशतः घरेलू उपयोग के लिए

हैं तथा कुछ बागों से घरेलू उपयोग के बाद बिक्री के लिए भी सब्जियाँ बच जाती थीं। खेती के लिए अंतरफसलों का चयन परिवार की पसंद, परिवार सदस्यों के खाने की आदतें, खेती में उनकी रुचि एवं आर्थिक परिस्थिति पर निर्भर था। तकरीबन एक चौथाई किसान ही अपने नारियल बागों में अंतर खेती करते हैं। इस पर संजीदा हस्तक्षेप अपेक्षित हैं क्योंकि आहार में विविधता, पारिस्थितिक संघटक एवं खाद्य उत्पादन आदि चिंताजनक मुख्य विषय है। नारियल आधारित वासभूमि खेती भूख एवं छिपी भूख मिटाने के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आदर्श नमूने भी होती है। सामान्यतया जड़ मुझ्जा रोग से प्रकोपित क्षेत्रों के नारियल आधारित वासभूमि खेती पेड़ों की आयु, बुनियादी संसाधन, अपनाए गए प्रबंधन तरीके तथा अन्य अपेक्षाओं की दृष्टि से काफी अलग अलग होती है।

नारियल बागों में अंतरफसलों की खेती सुधारने के लिए किसान प्रथम कार्यक्रम में विस्तार रणनीतियाँ

किसानों के खेतों में प्रौद्योगिकी के अभिग्रहण की कमी दूर करने और अनुसंधान के उपयोग एवं प्रभाव को सुधारने के लिए विस्तार समर्थन को सामूहिक प्रक्रिया प्रलेखन और क्रियात्मक अनुसंधान के ज़रिए कार्यक्षम नमूने विकसित करने की आवश्यकता है। जनता के प्रतिनिधियों, प्रगतिशील और लघु/सीमांत किसानों, महिला किसान समूहों तथा अन्य हितधारकों को शामिल करते हुए प्रक्षेत्र स्तरीय क्रियात्मक अनुसंधान के ज़रिए सहभागिता रणनीतियाँ विकसित की गई हैं। किसान प्रथम कार्यक्रम में सफलतापूर्वक गतिविधियों के मुद्दे नीचे दिए जाते हैं:



नारियल बाग में जिमीकंद की खेती

पंचायत में प्रौद्योगिकियों के प्रसार तथा क्षेत्र व्यापक अभियहण में नवाचार के रूप में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी (मनरेगा) योजना के साथ समवाय

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना का एकीकरण स्थानीय संसाधन आधारित खेती पद्धति एवं उसके कार्यान्वयन के साथ प्रभावी ढंग से किया जा सकता है जैसा कि 2016 से लेकर किसान प्रथम कार्यक्रम में सफलतापूर्वक निर्दर्शन किया गया है। महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना की महिला सहभागियों को बढ़ावा देने हेतु उत्तरदायी विस्तार हस्तक्षेप के रूप में भूमि की समेकन प्रक्रिया अनिवार्य बन गई क्यों कि उन में से 88.44 प्रतिशत के पास 0.08 हेक्टर से कम भूमि थी। भूमि की समेकन पद्धति से 2017-20 के दौरान प्रति वर्ष 354 एकड़ की बंजर भूमि में विभिन्न फसलों की खेती शुरू की गई। भूमि समेकन पद्धति के ज़रिए वर्ष 2017-20 के दौरान प्रति वर्ष 354 एकड़ बंजर ज़मीन को विभिन्न फसलों की खेती के अधीन लाया गया। नारियल बागों में पेड़ों के बीच खाली पड़ी भूमि को नारियल किसानों के साथ परिचर्चा करके उनकी सहमति प्राप्त होने पर समीपवर्ती बागों का समेकन किया गया तथा समवाय खेती योजनाएं ग्राम पंचायत के महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना अनुभाग के ज़रिए ग्रामीण विकास विभाग को प्रस्तुत की गई। प्रारंभ में कृषि विश्वविद्यालयों के सहयोग से उच्च पैदावार देने वाली किस्मों के पौधों/बीजों का प्राप्त किया गया और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के किसान प्रथम कार्यक्रम द्वारा निःशुल्क प्रदान किए गए। सहभागी मूल्यांकन प्रक्रिया के ज़रिए क्षेत्र में इनकी उपयुक्तता और किसानों के बीच स्वीकृति हेतु किस्मों की जाँच की गई।

समवाय हस्तक्षेपों के ज़रिए उच्च पैदावार देने वाली किस्मों के क्षेत्र में बढ़ोत्तरी

वार्ड स्तर पर हरेक उच्च पैदावार देने वाली फसल के लिए कम से कम एक एकड़ के समीपवर्ती क्षेत्र की एक साथ पहचान करने के ज़रिए अंतर फसलों की उच्च पैदावार देने वाली किस्मों के खेतीगत क्षेत्र में वृद्धि हुई। जनता के प्रतिनिधियों, महिला स्वयं सहायता समूह के किसानों, अन्य किसानों एवं हितधारकों द्वारा किए गए संयुक्त प्रयास से भूमि

के मालिकों के साथ परिचर्चा के फलस्वरूप, उनकी आपसी सहमति प्राप्त की गई और फसलों एवं अंतर फसलों की उच्च पैदावार देने वाली किस्मों जैसी प्रौद्योगिकियों के लिए समीपवर्ती क्षेत्र पहचाने गए। समेकित भूमि में बहुवर्षी मुख्य फसल नारियल के कृषीय प्रबंधन को भी महिला श्रमिकों द्वारा स्वैच्छिक रूप से हस्तक्षेप के अंतर्गत शामिल किया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम से विशेषज्ञों की एक टीम ने व्यक्तिगत प्रक्षेत्र दौरों के बाद किसानों के साथ परामर्श करके एक फसल कैलेंडर तैयार किया था। अतः मनरेगा योजना एवं किसान प्रथम कार्यक्रम का समवाय करने हेतु खेतीयोग्य क्षेत्र, उच्च पैदावार देने वाली किस्में जिन्हें संस्थाओं/विश्वविद्यालयों से प्राप्त की जानी हैं, प्रौद्योगिकी अभियहण के लिए अपेक्षित मानव एवं अन्य संसाधन, क्षेत्र में त्वरित गति से बढ़ोत्तरी करने हेतु हस्तक्षेप आदि के लिए एक कार्ययोजना बनाई गई। संबंधित प्रशासनिक इकाइयों के साथ कार्ययोजनाओं का पुनरीक्षण किया गया।

किसान समुदाय ने माँग की कि विविध प्रकार की स्थानीय समस्याओं या परिस्थितियों के आधार पर कृषि योजनाओं के सहभागी सूक्ष्म नियोजन या हस्तक्षेपों को विकसित किया जाए। हमें पता चला कि पत्तियूर पंचायत के 19 वार्डों की समस्याएँ अलग-अलग थीं याने कि भूमि आधारित मुद्रे (बाढ़ प्रवण, मृदा पौष्टिकतत्वों की स्थिति तथा टुकड़ों में बंटे बागों का आकार) तथा अन्य मामले जैसे कि फसल उपयुक्तता, एकीकृत खेती प्रणाली के अंतर्गत एकीकरण विकल्प, खेती से अत्यंत कम आय, मूल्य श्रुंखला का अभाव, समाज-आर्थिक भिन्नताएं, जनता के स्थानीय प्रतिनिधियों की कम सहभागिता/नेतृत्व आदि। किसान प्रथम कार्यक्रम में कृषीय विस्तार हस्तक्षेप से पंचायत में सहभागिता सूक्ष्मनियोजन गतिविधियों के ज़रिए सबसे निम्न तबके के किसानों या श्रमिकों के समग्र एवं बृहत सशक्तिकरण संभव हो सकता है। इसके लिए स्वप्रवर्तित एवं किसान प्रेरित तरीके से उभरती आवश्यकताओं, विनिर्दिष्ट समस्याओं को सुलझाने, निष्पक्ष एवं पारदर्शी लेन-देन/अनिवार्य आदान सामग्रियों का प्रावधान करने, असफलताओं को निपटने तथा सफल नमूनों को बनाए रखने आदि पर आधारित क्रमबद्ध रूप से विस्तार हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है।



नारियल बाग में चारा धास की खेती-आय के साथ पशुपालन में किसानों को समर्थन

आला फसलों में संभाव्य उपज प्राप्ति के प्रतिबंधों पर काबू पाना

किसान जो अंतरफसल या किसी भी अन्य फसल की खेती कर रहे हैं, उन से संभाव्य अधिकतम उपज प्राप्त करने के बारे में या तो अवगत नहीं है या वे चाहते नहीं है। कृषि नियोजन में मिट्टी के प्रकार एवं उर्वरता की स्थिति, व्यक्तिगत और सामूहिक तौर पर किसानों के ज्ञान एवं अभिग्रहण क्षमता, लचीले दृष्टिकोण, विस्तार सलाहकारी सेवाएँ, प्रक्षेत्र विस्तार कार्यकर्ताओं की सक्षमता तथा प्रक्षेत्र अभिविन्यास एवं ग्राम पंचायतों का खाद्य उत्पादन और संरक्षण में और प्राकृतिक/मानव संसाधानों के दक्षतायुक्त टिकाऊ प्रबंधन में विकेंद्रीकृत दृष्टिकोण आदि शामिल किए जाने होंगे। नारियल आधारित अंतरफसल प्रणाली में फसलों की विविध किस्मों की संभाव्य उपज स्थानविशेष के अनुसार बदलता है तथा अनुसंधान निष्कर्षों से विचलित होता है जैसा कि

किसान प्रथम कार्यक्रम में पाया गया है। अतः लघु और सीमांत नारियल किसानों के बीच निर्दर्शन समीपवर्ती क्षेत्र में किसानों की सहभागिता से होना चाहिए और विशेषज्ञों एवं किसानों द्वारा इसका आपसी अवलोकन एवं मूल्यांकन भी किया जाना चाहिए। इस प्रकार संभाव्य उपज प्राप्त करने में जो प्रतिबंध होते हैं उन पर काबू पाने का निर्दर्शन किया जा सकता है तथा किसानों को नई सीख मिलती है। यह तरीका आर्थिक एकीकरण एवं लाभप्रद निर्वहन के लिए प्रौद्योगिकियों के संयोजनों को अपनाने में उन्हें विवेचनात्मक क्षमता प्रदान करता है।

अतिरिक्त उत्पादन के लिए प्राप्ति तंत्र

वैज्ञानिक प्रबंधन तरीके अपनाकर सामूहिक खेती करने एवं उच्च पैदावार देने वाली किस्मों के अभिग्रहण से अंतरफसलों के उत्पादन में सुधार आया। फौरन खाने योग्य उत्पादों के लिए पड़ोसी बाजार प्राप्त हो सकते हैं क्योंकि उत्पादन के स्रोत जाने पहचाने होते हैं और उपभोक्ता ताजा उत्पादे परसंद करते हैं। प्रथम चरण में हल्दी, नारियल एवं तिल के लिए प्राप्ति योजनाएँ तथा प्रसंस्करण व्यवस्थाओं की आवश्यकता थी। इस हस्तक्षेप को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के साथ ओटनाटु किसान उत्पादक कंपनी के ज़रिए उत्पादक संगठन संवर्धन संस्थान (पीओपीआई) के रूप में नाबाड़ के समर्थन से सक्षम बना दिया था।

अंतरफसलों को अपनाने में महिला स्वयं सहायता समूहों को सामना करने वाली प्रमुख समस्याएं

1. भूमि रहितों/महिलाओं के लिए खेती करने के लिए ज़मीन मिलने की संभावनाएँ बहुत कम या बिलकुल भी नहीं हैं।
2. मनरेगा योजना में प्रौद्योगिकी आधारित कृषि गतिविधियों का अभाव था।
3. खेती एवं खेती कौशलों संबंधी मात्र परंपरागत जानकारी ही उपलब्ध थी।
4. वैज्ञानिकों/अनुसंधानकर्ताओं के साथ संबंध या संपर्क नहीं था।
5. खेती में प्रौद्योगिकी का अभिग्रहण एवं कौशल/जानकारी सशक्तिकरण के ज़रिए आय में वृद्धि की सुसाध्य संभाव्यता होती है।

किसान प्रथम कार्यक्रम में सामाजिक उपागम

1. किसान प्रथम कार्यक्रम हस्तक्षेपों की फसल/बागवानी/प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन मोड्यूलों के लिए मनरेगा योजना में महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा खेती के लिए भूमि का समेकन। प्रत्येक वार्ड के किसानों के नारियल बागों में पेड़ों के बीच खाली पड़ी जगह वार्ड सदस्यों (जनता के प्रतिनिधि) एवं महिला स्वयं सहायता समूहों के पक्षाधिकारियों के बीच बनाए गए पारस्परिक सामाजिक करार पर आपस में निःशुल्क बाँटी गई।

2. प्रशिक्षण कार्यक्रम, पंचायत की मनरेगा योजना इकाइयों के साथ संबंध, नियमित एवं निरंतर दौरे, समस्याएँ सुलझाने के लिए वाट्ट्सएप ग्रूप, प्रत्येक खेती इकाई का विधि प्रदर्शन, फसल की उच्च पैदावार देने वाली किस्मों/महत्वपूर्ण कृषि आदान सामग्रियों सहित समर्थन।

3. विविध मोड्यूलों के सहभागी मूल्यांकन/परीक्षणों में महिला स्वयं सहायता समूहों को साझेदार बनाए गए।

क्षेत्र में समवाय प्रक्रिया का प्रभाव उच्च पैदावार देने वाली किस्मों की खेतीगत भूमि की वृद्धि में ही नहीं बल्कि आय में वृद्धि तथा तकनीकी परिसंपत्तियों के सृजन में भी प्रतिबिंबित हुआ है।

- पत्तियूर पंचायत के 19 वार्डों में मनरेगा योजना के साथ समवाय करके किसान प्रथम कार्यक्रम हस्तक्षेप के लिए कुल 354 एकड़ खेतीगत ज़मीन लायी गई। केरल राज्य की पहल 'हरिता केरलम' द्वारा पंचायत को बंजर भूमि मुक्त घोषित किया गया जो इन हस्तक्षेपों की सफलता सूचित करता है।

- किसान प्रथम कार्यक्रम के समवाय से मनरेगा योजना के महिला लाभभोगियों पर जो तकनीकी प्रभाव पड़ा वह मुख्य रूप से कृषि संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की पहुँच एवं सहभागिता के रूप में था।

- इन प्रयासों के बावजूद भी सारी महिला सहभागी प्रशिक्षण सत्रों में भाग लेने में कामयाब नहीं हुई। मुख्य किसान विशेषज्ञों द्वारा और महिला समूह में एक दूसरे के बीच तथा महिला समूहों के आपस में जानकारियों के आदान-प्रदान से इस कमी की भरपाई की गई। यह पाया गया कि लगभग 64.33 प्रतिशत सहभागियों ने खेती के व्यावहारिक ज्ञान एवं कौशल प्राप्त किए हैं। प्रायः 70 प्रतिशत महिला किसान कक्षाओं से दूर

(ऑफ कैंपस मोड) अपने खेतों में ही प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग ली जा सकीं। उनके द्वारा (1.38 प्रतिशत) भाग लिए गए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अधिकतम संख्या 21 थी तथा 44.44 प्रतिशत ने वर्ष में 5 से अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया।

- प्रशिक्षण दिलाने के लिए पहचानी गई प्रौद्योगिकियाँ हैं: उच्च पैदावार देने वाली किस्मों (विभिन्न फसलों) की खेती, पौधों के बीच उपयुक्त दूरी, क्यारियों की तैयारी, रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग, खेती प्रक्रियाएं, पौधा संरक्षण उपाय, तुड़ाई/कटाई एवं कटाई उपरांत विधियाँ तथा मूल्यवर्धन, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का प्रयोग, जलवायु सक्षम विधियाँ, छोटी मशीनरियों के प्रयोग एवं विषयन में कौशल।

- ग्रूप लीडरों को मुख्य किसान विशेषज्ञों के रूप में विकसित करने हेतु उनके लिए खेत के बाहर आयोजित प्रशिक्षणों के अलावा फार्म पर आयोजित सत्रों के रूप में संबंधित कार्य स्थल पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रशिक्षण विधि में इस तरह का बदलाव लाने से प्रक्षेत्र स्तर पर उभरती आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यक्रम में सुधार किया जा सका।

- लाभभोगी महिलाओं में से तकरीबन 97 प्रतिशत ने तीन से अधिक प्रौद्योगिकियों को अपनाया, यानी उच्च पैदावार देने वाली किस्में, पौधों के बीच की दूरी, रासायनिक उर्वरक एवं पौधा संरक्षण के लिए जैविक आदान सामग्रियाँ आदि।

- महिला किसानों द्वारा प्राप्त उत्पादकता या उपज में सुधार यह सूचित करता है कि भले ही 5.56 प्रतिशत को कम उपज प्राप्त हुई थी फिर भी हस्तक्षेपों के पश्चात बेहतर कृषि पद्धतियों एवं उच्च पैदावार देने वाली किस्मों को अपनाने से अधिकतर (94.44 प्रतिशत) महिला किसानों को 30-50 प्रतिशत अधिक उपज प्राप्त हुई थी।

- कार्यक्रम का परोक्ष प्रभाव यह था कि लाभार्थियों के परिवारों के आहार में विविधता लाकर आहारक्रम सुधर गया क्योंकि मोटा अनाज (मिलेट) एवं सब्जियों सहित विविध प्रकार की फसलों की खेती करने तथा ग्रूप के सारे सदस्यों के बीच अतिरिक्त उत्पादन बराबर बाँटने के फलस्वरूप यह संभव हुआ। इससे कृषि के कार्यों में ग्रूप के सदस्यों के परिवार सदस्यों की इच्छुकता एवं भागीदारी बढ़ गई।



कुलथी की खेती - ओणाट्टुकरा इलाके की खोई हुई विरासत फसल को जीवंत करते हुए

- सबसे प्रमुख असर यह था कि नारियल, हल्दी एवं रागी के अतिरिक्त उत्पादन का उपयोग करने के लिए पंचायत में मूल्यवर्धन इकाइयाँ स्थापित हुईं। पाँच ग्रामीण युवकों ने 'पत्तियूर फार्मस' ब्रैंड के अंतर्गत हल्दी पाउडर, तिल का तेल एवं नारियल तेल के प्रसंस्करण एवं विपणन के लिए लघु उद्योगों की स्थापना की।

कृषी विवेश में अतिरिक्त निवेश सुनिश्चित करना

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के किसान प्रथम कार्यक्रम को खेती करने के लिए उच्च पैदावार देने वाली किस्मों की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता सुनिश्चित करने में रुकावटों का सामना करनी पड़ी। स्थान विशेष के लिए किस्मों या फसलों की उपयुक्तता भी एक समस्या थी। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के चुनिंदे 25 प्रतिशत महिला समूहों की सहभागिता से उच्च पैदावार देने वाली किस्मों/फसलों का सहभागिता मूल्यांकन नियोजित एवं कार्यान्वित किया गया। इस महत्वपूर्ण कदम का पर्यवेक्षण एवं अनुबोधन महिला ग्रूप लीडरों की उप समिति, इलाके के जनता के प्रतिनिधि, वैज्ञानिकों और कृषि विभाग, ग्रामीण विभाग के सेवानिवृत्त तकनीकी व्यक्तियों एवं क्षेत्र के फार्म क्लबों को सौंपा गया।

विमोचित उच्च पैदावार देने वाली किस्मों की रोपण सामग्रियों/बीजों का प्रापण सीधे संगत अनुसंधान संस्थाओं से किया गया तथा शुरुआती मात्रा के तौर पर 25 प्रतिशत ग्रूपों को निःशुल्क प्रदान किया गया। गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों को बाँटने के अलावा अतिरिक्त निवेश बाँटने के लिए ग्रूप के सदस्यों के बीच से तथा विभिन्न ग्रूपों के बीच से सहमति प्राप्त हुई। किसान प्रथम कार्यक्रम में रसायनिक उर्वरक एवं पौधा संरक्षण रसायन 60:40 अनुपात में याने 60 प्रतिशत



वासभूमि नारियल खेती में अंतरफसलों का कैफेटेरिया



नारियल बाग में मकई की खेती

किसान प्रथम कार्यक्रम द्वारा एवं 40 प्रतिशत महिला ग्रूपों द्वारा प्रदान किए गए। जैविक खाद किसान परिवारों से स्थानीय रूप से एकत्र की गई। निराई किए गए खरपतवारों एवं जैव अपशिष्टों को जलाने के बजाय उनको विधि का निर्दर्शन तथा प्रशिक्षण के ज़रिए अवश्य पुनःचक्रण, पलवार सामग्रियाँ एवं कंपोस्ट में बदला गया और इस प्रकार जैविक आदान सामग्रियों की लागत कम की गई।

सीखे गए सबक

वैज्ञानिकों द्वारा गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों का उत्पादन सुगम बनाने हेतु विकसित उत्तरदायी विस्तार दृष्टिकोण से निम्नलिखित कदमों के ज़रिए नई किस्मों के खेतीगत क्षेत्र में बढ़ोत्तरी की जा सकती है:

- उत्तरदायी विस्तार दृष्टिकोण हस्तक्षेपों के लिए कृषि विशेषज्ञ, स्थानीय जनता के प्रतिनिधिगण, खेती हेतु महिला स्वयं सहायता ग्रूप, प्रगतिशील किसान तथा आम जनता के प्रतिनिधियों को शामिल करते हुए सामाजिक उत्तरदायी ग्रूप गठित करना आवश्यक है।

- भूमि समेकन एवं मनरेगा योजना के साथ समवाय के ज़रिए पहचाने गए समीपवर्ती क्षेत्र में कारगर श्रमशक्ति के साथ खेती करने से कृषि क्षेत्र का विस्तार किया जा सकता है।

- संबंधित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की संस्था एवं किसान प्रथम कार्यक्रम टीम द्वारा तकनीकी समर्थन, पर्यवेक्षण

नारियल विकास बोर्ड राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित



भारत के माननीय राज्य सभा उपाध्यक्ष श्री हरिवंश नारायण सिंह से राजभाषा कीर्ति पुरस्कार स्वीकार करते हुए नाविबो मुख्य नारियल विकास अधिकारी डा.बी. हनुमंते गौडा। भारत के माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा एवं श्री निशिथ प्रामाणिक भी चित्र में दर्शित हैं।

हिंदीतर भाषी क्षेत्रों के केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में से वर्ष 2021-22 में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु नारियल विकास बोर्ड को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (तृतीय पुरस्कार) प्राप्त हुआ। हिंदी दिवस के अवसर पर 14 सितंबर 2022 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम, सूरत, गुजरात में संपन्न भव्य समारोह में भारत के माननीय राज्य सभा उपाध्यक्ष श्री हरिवंश नारायण सिंह के करकमलों से नारियल विकास बोर्ड के मुख्य नारियल विकास अधिकारी डा.बी.हनुमंते गौडा ने पुरस्कार ग्रहण किया। माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह समारोह के अध्यक्ष थे।

और नियमित प्रक्षेत्र दौरे, गतिविधियों से पूर्व एवं उनके दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम अनिवार्य हैं।

- रोपण सामग्रियों के आगे उत्पादन हेतु प्रारंभ में गठित ग्रूपों को भी समझौता ज्ञापन के साथ सहमति देनी होगी और पंचायत के सारे 19 वाड़ों में ज़िम्मेदारी के साथ एवं त्वरित रूप से किस्मों का वितरण किया जा सका।

- महिला किसानों एवं नारियल किसानों के बीच किस्मों एवं रोपण सामग्रियों के बारे में उत्तरदायी विस्तार रणनीति से

सक्षम जानकारी एवं कौशल का होना अनिवार्य होता है। इससे सामाजिक सहमति एवं विश्वास के ज़रिए प्रचलित प्रौद्योगिकी निर्दर्शन एवं प्रक्षेत्र परीक्षण से सफलतापूर्वक आगे बढ़ सकते हैं।

- प्रक्षेत्र स्तर पर समन्वित कार्य जब नियमित रूप से और समय पर हो जाते हैं तो जाँच (चेक) किस्मों की तुलना में फसलों की उपज में प्रतिशत वृद्धि आसानी से प्राप्त की जा सकती है। ■

नाविबो फार्म, नेर्यमंगलम - केदल में गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों की मांग की पूर्ति के लिए प्रतिबद्ध

जोर्ज पीटर, वरिष्ठ क्षेत्र अधिकारी, बाजी सी.एस., क्षेत्र अधिकारी और
रश्मी डी.एस., सहायक निदेशक, प्रबोड फार्म, नेर्यमंगलम

आमुख

केरल में वैज्ञानिक नारियल खेती का निर्दर्शन करने और किसानों को गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों की आपूर्ति सुनिश्चित करने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए नेर्यमंगलम में वर्ष 1991 के दौरान नारियल विकास बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन (प्रबोड) फार्म की स्थापना की गयी थी जो केरल के कोची से लगभग 70 कि.मी. दूरी पर है। फार्म एक खूबसूरत घाटी में स्थित है, जहाँ से केरल का प्रमुख पर्यटन स्थान मून्नार जाने का पर्वतीय मार्ग शुरू होता है। फार्म 20 हेक्टर भूमि में स्थित है जो 1991 में केरल सरकार द्वारा नारियल विकास बोर्ड को पट्टे पर दिया गया था। इस भूमि में से 14.95 हेक्टर क्षेत्र को फार्म के रूप में पूरी तरह से विकसित

किया गया है और शेष 5 हेक्टर क्षेत्र चट्टानी जंगली इलाका है। फार्म में नारियल की विभिन्न किस्मों और अन्य उपयुक्त वार्षिक एवं बहुवर्षीय फसलों का रोपण किया गया है। फार्म में विभिन्न किस्मों के गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों का भी उत्पादन हो रहा है और किसानों तथा अन्य एजेंसियों को उचित दर पर इनकी आपूर्ति की जाती है।

फार्म में मौजूद ताड़ों की वर्तमान आबादी 752 लंबे, 593 बौने और 157 संकर ताड़ों सहित 1542 नारियल पेड़ हैं। पुराने और जीर्ण ताड़ों को हटाने के बाद ब्लॉक दो और पाँच में पुनर्रोपण कार्य चल रहा है। 1158 ताड़ उत्पादन चरण में हैं और संकरण प्रयोजन हेतु मातृ वृक्षों के रूप में 334 ताड़ों का अनुरक्षण किया जा रहा है।

मृदा एवं जलवायु

नारियल पेड़ एक उष्णकटिबंधीय ताड़ होने के नाते केरल की जलवायु परिस्थितियों में अच्छी तरह बढ़ता है। प्रक्षेत्र की मिट्टी बलुई दोमट, मखरली और लाल मिट्टी है जो नारियल की खेती के लिए उपयुक्त है। केरल राज्य में सबसे अधिक औसत वर्षा नेर्यमंगलम में प्राप्त होती है। इसलिए इस जगह को केरल का चिरापुंजी कहना समीचीन है। हालाँकि नेर्यमंगलम को उच्च वर्षापात मिलने वाला क्षेत्र माना जाता

था किंतु एरणाकुलम जिले में वर्षापात के दिनों में गंभीर घटाव का रुख दर्शित हो रहा है (आईएमडी अध्ययन - केरल राज्य में वर्षापात में पायी गयी भिन्नता और परिवर्तन)। मिट्टी का पीएच औसतन 5 और 6 के बीच है, साल में 256.6 दिनों तक बारिश मिलती है और वर्षण का 1696 मि.मी. (66.77") तक एकत्र किया जाता है। तापमान 20° सेल्सियस और 32.8° सेल्सियस के बीच है। फार्म में रोपित प्रजातियों के ब्यौरे सारणी 1 में दर्शाया गया है।

सारणी 1: नारियल पेड़ों की आबादी (सितंबर 2021)

क्लॉक सं.	किस्म	रोपण वर्ष	रोपण प्रणाली	क्षेत्र(हे.)	पेड़ों के बीच की दूरी	फलदायी ताड़ों की संख्या
I	बौनी X लंबी(चावककाट हरी बौनी X पश्चिम तटीय लंबी)	2017	चौकोर	0.926	8 मी. x 8 मी.	75
IA	चावककाट नारंगी बौनी	1994	चौकोर	0.200	7 मी. x 7 मी.	15
	बौनी X लंबी	1994	चौकोर	0.005	7 मी. x 7 मी.	2
	पश्चिम तटीय लंबी	पुराना		0.001		2
II				0.400		पुनरोपण हो रहा है
III	चावककाट हरी बौनी	1994	चौकोर	1.200	7 मी. x 7 मी.	192
IV	लक्ष्मीप साधारण और बौनी X लंबी	1994		0.005		7
V				0.930		पुनरोपण हो रहा है
VII	विदेशी	1993	चौकोर	0.900	8 मी. x 8 मी.	121
	लक्ष्मीप माइक्रो	1993	चौकोर	0.080	8 मी. x 8 मी.	10
	तिप्पूर लंबी	1993	चौकोर	0.250	8 मी. x 8 मी.	34
	पूर्व तटीय लंबी	1993	चौकोर	0.200	8 मी. x 8 मी.	29
VIII	पश्चिम तटीय लंबी	1993	दोहरा रोपण	0.900	15 मी. x 15 मी.	56
IX	पश्चिम तटीय लंबी	1994	आयताकार	0.650	9 मी. x 8 मी.	27
X	पश्चिम तटीय लंबी	1999	आयताकार	0.610	9 मी. x 8 मी.	66
	चावककाट नारंगी बौनी	1999	आयताकार	0.400	9 मी. x 8 मी.	45
XA	मलयन हरी बौनी	2008	आयताकार	0.500	9 मी. x 8 मी.	30
XI	पश्चिम तटीय लंबी	1999	आयताकार	0.600	9 मी. x 8 मी.	68
	चावककाट हरी बौनी	1999	आयताकार	0.300	9 मी. x 8 मी.	20
XII	पश्चिम तटीय लंबी	1997	गोलाकार	1.250		33
	चावककाट हरी बौनी	1997	गोलाकार	0.025		6
	बौनी X लंबी	1997	गोलाकार	0.010		4
XIII	चावककाट हरी बौनी	1997	चौकोर	0.500	7 मी. x 7 मी.	71
XIV	पश्चिम तटीय लंबी	1997	त्रिकोणाकार	1.500	7.6 मी. x 7.6 मी.	186
XV	गंगाबोंदम	2014	आयताकार	0.610	8 मी. x 7 मी.	39
				12.952		1138

बागान के ब्यौरे

वर्तमान में फार्म को 15 खंडों में बांटा गया है और इन सालों में नेर्यमंगलम की भूमि की स्थलाकृति के आधार पर विभिन्न रोपण प्रणालियों के अनुसार नारियल की विभिन्न किस्मों का रोपण करके इन्हें विकसित किया गया है। यहाँ रोपित मुख्य किस्में हैं - पश्चिम तटीय लंबी, चावककाट हरी बौनी (सीजीडी), चावककाट नारंगी बौनी (सीओडी), विदेशी किस्में और संकर। अक्टूबर, 2016 को केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान समिति के दौरे के दौरान दिए गए सुझावों के अनुसार पहले खंड में 150 उन्नत संकर पौधों - 'कल्पसंकरा' (सीजीडी x डब्ल्यूसीटी) का पुनर्रोपण किया गया है जो जड़ मुर्झा रोग सहनशील रिपोर्ट किया गया है। संकर खंड में वर्ष 2019 से फलन शुरू हुआ है।

नारियल उत्पादन एवं उत्पादकता

केरल में आमतौर पर पूरे राज्य में वासभूमि फसल के रूप में नारियल उगाया जाता है। अर्थशास्त्र और सांख्यिकी विभाग, केरल राज्य से प्राप्त सांख्यिकी के अनुसार नारियल के क्षेत्र, उत्पादन और उत्पादकता में घटाव का रुख प्रकट हो रहा है। एरणाकुलम जिले में भी ताड़ के उत्पादन एवं उत्पादकता में यही रुख प्रतिबिंबित हो रहा है।

नेर्यमंगलम फार्म में वर्तमान में 1158 फलदायी ताड़ हैं। फार्म को प्रति ताड़ 47 फलों की औसतन उत्पादकता के साथ प्रति वर्ष औसतन 53100 नारियल की उपज मिल रही है। वर्ष 1992-93 के दौरान लगाए गए बौने ताड़ 30 वर्ष की आयु के हो रहे हैं और उपज में भारी गिरावट नज़र आ रही है और इसलिए फार्म में चरणबद्ध तरीके से पुनर्रोपण किया जा रहा है।

गत 5 वर्षों के दौरान फार्म में तुड़ाई किए गए नारियल के ब्यौरे सारणी 2 में दर्शाया गया है।



चावककाट नारंगी बौनी (सीओडी)

सारणी 2: विगत 5 वर्षों में प्रबोउ फार्म, नेर्यमंगलम में तुड़ाई किए गए नारियल					
वर्ष	लंबा	बौना	संकर	संकरित फल	कुल तुड़ाई किए गए नारियल
2016-17	34929	17634	558	10309	63430
2017-18	26695	10041	1369	11187	49292
2018-19	38089	18666	2315	4814	63884
2019-20	31736	18468	1929	-	52133
2020-21	28745	8582	2537	3462	39864

अपनायी गयी खेती पद्धतियाँ

फार्म में मुख्य रूप से केरल कृषि विश्वविद्यालय द्वारा अनुशंसित खेती पद्धतियों का अनुसरण किया जा रहा है। यह फार्म पेरियार नदी के किनारे पर स्थित है, इसलिए वहाँ पानी की कोई समस्या नहीं होती है और प्रखर गर्मी के महीनों के दौरान स्प्रिंक्लर विधि से पौधों की सिंचाई की जाती है। हर वर्ष नारियल ताड़ को 50 कि.ग्रा. घूरे की खाद और अनुशंसित मात्रा में रासायनिक उर्वरक दिए जाते हैं। हरेक वर्ष 100 ग्राम की दर पर सूक्ष्म पोषकतत्वों का मिश्रण भी दिया जाता है। इसके अलावा, ताड़ों का स्वास्थ्य सुधारने के लिए नारियल टॉनिक, ट्राइकोर्डमा, बैसिलस प्रजाति का प्रयोग आवश्यकता के आधार पर किया जा रहा है।

किसानों के लिए निर्दर्शन के भाग के रूप में जलवायु परिस्थितियों के आधार पर प्रमुख कीटों एवं रोगों को रोकने हेतु रोगरोधी उपाय भी अपनाए जाते हैं। मशीनी फंदे का उपयोग- गैंडा भृंग के लिए मछली जाल का प्रयोग शुरू करने से फार्म में बहुत बड़ी हद तक कीटों का प्रबंधन करने में अत्यधिक सफलता हासिल हुई है।



चावककाट हरी बौनी

सारणी 3: 2018 से 2020 तक नारियल की किस्म वार तुड़ाई

वर्ष	मौजूदा ताड़	फलदायी ताड़	2018-19		2019-20*		2020-21**	
			उत्पादन (फलों की संख्या)	प्रति ताड़ उत्पादकता	उत्पादन (फलों की संख्या)	प्रति ताड़ उत्पादकता	उत्पादन (फलों की संख्या)	प्रति ताड़ उत्पादकता
लंबा	752	634	38089	60	31736	50	28745	45.37
बौना	595	306	18666	61	18468	60	8282	28.00
संकर	162	80	2315	29	1929	24	2537	32.00
संकरित फल	218	218	4814	23			39864	0
कुल	1727	1238	63884	52	52133	42.60	43326	32.00

*वर्ष 2018 के बाढ़ के कारण 2018-19 के दौरान संकरण बंद किया गया। **पुनर्रोपण के लिए प्लॉट सं. II और V से बैने ताड़ों को हटा दिया गया।



नारियल के छिलके से पलवार

वाणिज्यिक नसरी और नारियल पौधों की आपूर्ति

प्रबीउ फार्म का मुख्य उद्देश्य अच्छी गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों का उत्पादन है, इसलिए केरल के किसानों को वितरित करने हेतु प्रमाणित पौधों की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए नाविबो, प्रबीउ फार्म, नेयमंगलम कड़ा प्रयास करता है। उत्पादन पूर्णतः केरल में ही आपूर्ति करने के लिए किया जा रहा है, इसलिए केरल सरकार के राज्य भर के विविध पंचायतों में कार्यान्वित की जा रही विभिन्न योजनाओं जैसे कि निर्दर्शन प्लॉट और जनकीयासूत्रणम(जन योजना) के तहत किसानों को प्रमाणित सभी पौधे वितरित किए जा रहे हैं।

केरल में नारियल के जड़मुझा रोग को नियंत्रित करने के लिए नाविबो ने बड़े पैमाने पर पुनर्रोपण एवं पुनरुज्जीवन कार्यक्रम कार्यान्वित किया था और इस योजना के तहत फार्म ने केरल के किसानों को पौधों की आपूर्ति करने में भी अहम भूमिका निभाई है।

विगत 5 वर्षों में बोए गए बीजफलों के ब्यौरे सारणी 4 में दर्शाया गया है।

सारणी 4: प्रबीउ फार्म, नेयमंगलम में बोए गए बीजफलों के ब्यौरे

वर्ष	अपना बीजफल	बाहरी स्रोतों से खरीदे गए बीजफल	कुल बोए गए फल
2016-17	38946	37007	75953
2017-18	29371	60000	89371
2018-19	38531	88150	126681
2019-20	19793	64000	83793
2020-21	19678	106000	125678
कुल	146319	355157	501476

विगत 5 वर्षों में फार्म में उत्पादित पौधों के ब्यौरे सारणी 5 में दर्शाया गया है।

सारणी 5: 2016 से 2021 तक प्रबीउ फार्म, नेयमंगलम में नारियल उत्पादन

वर्ष	उत्पादित पौधों की संख्या
2016-17	162082
2017-18	51516
2018-19	30738
2019-20	47054
2020-21	96889
कुल	388279

कृषि विभाग, केरल सरकार के फ्लैगशिप कार्यक्रम 'नारियल परिषद' के तहत वर्ष 2019-2020 में एरणाकुलम, कोट्टयम, पत्तनमतिट्टा, इटुक्की और आलप्पुऱ्गा आदि पांच प्रमुख जिलों में नारियल पौधों की आपूर्ति करने में फार्म की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और योजना के तहत 46,853 पौधों की आपूर्ति की गई है।



ब्लॉक 1 में जिमीकंद की अंतर खेती

सारणी 6: 2020-2021 के दौरान आपूर्ति किए गए पौधों के ब्यौरे - नारियल परिषद कार्यक्रम

क्र.सं.	जिला	आपूर्ति की गई किस्में	वितरित पौधों की संख्या
1	कोटट्यम	पश्चिम तटीय लंबी	17140
2	पतन्नतिट्टा	पश्चिम तटीय लंबी	16290
3	एरणाकुलम	पश्चिम तटीय लंबी	623
		बौना	4800
4	इटुक्की	पश्चिम तटीय लंबी	3250
5	आलपुऱ्गा	पश्चिम तटीय लंबी	4750
कुल			46853

चालू वित्तीय वर्ष के दौरान यह फार्म 50,000 पौधों की आपूर्ति के लिए कटिबद्ध है जिसमें से 38,362 पौधों की आपूर्ति पहले ही की जा चुकी है।

फार्म अपशिष्टों का पुनर्चक्रण और जैविक खाद उत्पादन

फार्म प्रति वर्ष 60 टन वर्मीकम्पोस्ट की उत्पादन क्षमता के साथ वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन इकाइयों का अनुरक्षण कर रहा है। केले का फसल अपशिष्ट, केले के तने (स्यूडोस्टेम) के छोटे छोटे टुकड़े और नारियल के पत्ते को वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन में प्रभावी रूप से पुनर्चक्रित किया जाता है।

इसके अतिरिक्त, वर्ष 2018-19 में तकनीकी समिति के दौरे के दौरान दिए गए सुझावों के अनुसार कयर गूदा खाद भी बनाई जाती है। गोबर के अलावा वर्मीकम्पोस्ट और जैविक खाद के प्रयोग से ताड़ों का सामान्य स्वास्थ्य तो सुधर गया है और साथ साथ रोगों के प्रति अधिक रोगरोधी क्षमता भी प्राप्त की है।

अंतर खेती

फसल प्रणाली निर्दर्शन के सिलसिले में फार्म के नारियल बागान में अंतर खेती की जा रही है। अंतर खेती का एक महत्वपूर्ण फायदा यह है कि इससे फार्म को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है और उपलब्ध भूमि का तथा पानी एवं सूर्य प्रकाश सहित अन्य प्राकृतिक संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है। फार्म में केला और जिमीकंद जैसी वार्षिक अंतर फसलों की खेती की जा रही है। नारियल ताड़ों के साथ विभिन्न खंडों में काली मिर्च, काजू, जायफल, कोको, सुपारी और रम्बूटान जैसी बहुवर्षी अंतर फसलों का भी रोपण किया गया है। अंतर फसलों से फार्म को प्रति वर्ष एक से पाँच लाख रुपए तक अतिरिक्त आय प्राप्त हो रही है।

संकरण कार्यक्रम

राज्य में संकरण पौधों की बड़ी मांग के मद्देनज़र फार्म में संकरण कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिसके तहत बौने x लंबे पौधों का विशेष रूप से उत्पादन किया जा रहा है। फार्म में मातृ वृक्षों के रूप में 218 पेड़ों का चयन किया गया है और इसके लिए प्रशिक्षित मज़दूरों को लगाया गया है। इस वर्ष के दौरान फार्म ने केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कायंकुलम के परामर्श से परीक्षण के तौर पर ज़मीनी परागण उपकरण का प्रयोग शुरू कर दिया है।

विस्तार गतिविधियाँ

फार्म का अपना एक प्रशिक्षण केंद्र है जिसका उपयोग किसानों के लिए प्रशिक्षण तथा विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने, फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री प्रशिक्षण चलाने



वीएचएसई विद्यार्थियों के लिए नौकरी प्रशिक्षण



एफओसीटी प्रशिक्षण

सारणी 7. प्रबीउ फार्म, नेर्यमंगलम में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.सं.	प्रशिक्षण का नाम	प्रशिक्षण की अवधि (कुल दिन)	प्रशिक्षणों की संख्या	प्रशिक्षणार्थियों की संख्या
2016-17				
1	ओजेटी-वीएचएसई	1	12	437
2	एटीएमए(आत्मा)-एक दिवसीय किसान दौरा	1	3	54
2017-18				
1	ओजेटी-वीएचएसई	1	9	307
2	ओजेटी-वीएचएसई	2	1	26
3	ओजेटी-वीएचएसई	3	1	45
4	ओजेटी-वीएचएसई	4	1	45
5	'एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन' पर किसानों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण	1	1	40
6	किसान दौरे - एटीएमए	1	1	30
2018-19				
1	एटीएमए(एकीकृत फसल प्रबंधन- अंतर्राज्य प्रशिक्षण कार्यक्रम)	1	2	40
2	ओजेटी-वीएचएसई, मूवाटटुपुषा	1	1	59
3	ओजेटी-वीएचएसई, पल्लारिमंगलम	1	2	48
4	ओजेटी-वीएचएसई, वालकम	1	1	25
5	ओजेटी-जीवीएचएसएस, कटवूर	1	2	41
6	एटीएमए सेल, करूर, तमिलनाडु	1	1	21
7	ओजेटी-जीवीएचएसएस-पूर्व माराठी	1	1	20
8	ओजेटी-जीवीएचएसएस-नेर्यमंगलम	2	2	90
9	वीएचएसई-नेटुकण्डम	1	1	23
10	किसान प्रशिक्षण-केबी, करिंकुनम	1	1	10
2019-2020				
1	ओजेटी-वीएचएसई, तोटुपुषा	1	2	60
2	ओजेटी-वीएचएसएस-वालकम			24
3	मणिपुर से किसानों एवं अधिकारियों का प्रदर्शन दौरा	1	1	10
4	ओजेटी-वीएचएसई, मूवाटटुपुषा	1	1	28
5	ओजेटी-वीएचएसई, कटवूर/ पल्लारिमंगलम/कोलंचेरी	1	1	111
6	एटीएमए-मटतिकुलम/नागपट्टिनम/ तिरुवरूर-तमिलनाडु	1	3	70
7	जेएनवी, नेर्यमंगलम	1	1	6
8	एक दिवसीय किसान संगोष्ठी	1	2	60
9	एफओसीटी-फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री प्रशिक्षण	6	1	20

और अन्य विस्तार गतिविधियों के लिए किया जाता है। विभिन्न वोकेशनल हायर सेकंडरी स्कूलों के अनुरोध के आधार पर फार्म में वीएचएसई एग्रिकल्चर विद्यार्थियों के लिए नौकरी प्रशिक्षण (ओजेटी) आयोजित किया जाता है।

क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम

फार्म ने वर्ष 2018-19 और 2019-20 में 586 किसानों को 19,505 पौधे वितरित कर केरल में क्षेत्र विस्तार योजना का कार्यान्वयन सुगम बनाया है।

निष्कर्ष

प्रदर्शन सह बीज उत्पादन (प्रबीउ) फार्म, नेर्यमंगलम केरल में किसानों को गुणवत्तापूर्ण पौधों की आपूर्ति में निर्णायक भूमिका अदा करता है और फार्म को सुधारने और सशक्त बनाने हेतु आवश्यक सभी संसाधनों के बीच सामंजस्य लाने में सदा प्रयासरत है जिससे निश्चय ही राज्य में नारियल क्षेत्र लाभान्वित होगा। ■

नाथीकीटों का समुचित प्रबंधन करें और नारियल की उपज बढ़ाएं

अभिषेक शुक्ला

कीट विज्ञान विभाग, न.म.कृषि महाविद्यालय
नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी- 396 450, गुजरात

भारत में नारियल को 24 से भी अधिक कीट नुकसान पहुँचाते हैं, जिनमें से पत्तों को नुकसान पहुँचाने वाले कीटों में कृष्ण शीर्ष इल्ली, नारियल के कोंपल भाग को नुकसान करने वाला गेंडा भृंग तथा नारियल के नव विकसित फलों को नुकसान करने वाले चूहे मुख्य हैं। इस लेख में नारियल के इन्हीं कीटों तथा अन्य नाशीजीवों के बारे में सविस्तार चर्चा की जा रही है जो नारियल उत्पादक किसानों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

गेंडा भृंग: इस कीट का वैज्ञानिक नाम ओरिक्टस रिनोसेरस है। यह कीट नारियल के अतिरिक्त खजूर, तेल ताड़ आदि को भी नुकसान पहुँचाता है। वयस्क गेंडा भृंग नारियल के वृद्धि बिन्दुओं के मध्य भाग में छेद करके उसमें घुस जाते हैं तथा उसे खाकर भारी नुकसान पहुँचाते हैं। यहाँ पर ये नव विकसित उत्तकों, वृद्धि बिन्दुओं को काट कर उन्हें क्षति पहुँचाते हैं साथ ही इन स्थानों से निकलने वाले रस को चूस लेते हैं। वृद्धि बिन्दुओं को काटने के फलस्वरूप नव विकसित पत्तियों की कोंपलों को भी नुकसान होता है। जब इस प्रकार की पत्तियाँ खुल जाती हैं तब इनका आकार अंग्रेजी के 'V' आकार जैसा दिखाई पड़ता है। मादा कीट सड़े गले कार्बनिक पदार्थों जैसे गोबर की ढेरी आदि में अपने अंडे देती है तथा इन अंडों से निकलती लार्वा इसी सड़े गले कार्बनिक पदार्थ को खाकर अपना विकास करती है। अंडों से 8-10 दिनों में सूँडियाँ बाहर निकलती हैं। ये सूँडियाँ 82-207 दिनों तक कार्बनिक पदार्थ को खाकर पूर्ण विकसित हो जाती हैं। इसके उपरांत ये 8-12 दिनों के लिए प्रसुप्त रहती हैं। इस स्थिति को पूर्व-प्यूपा अवस्था कहा



जाता है। इस दौरान ये खाना छोड़कर शांत रहते हैं व बाद में ये प्यूपावस्था में बदल जाते हैं। प्यूपाकाल 17-28 दिनों तक का होता है। पूर्ण विकसित वयस्क 18-27 दिनों तक इसी प्यूपा के खोल में रहता है। इसके बाद ये इस खोल को काट कर बाहर निकल आता है तथा उड़ कर अपने पोषी पौधों जैसे नारियल आदि पर चला जाता है व उसके वृद्धि बिंदु को काट कर खाने लगता है। वयस्क भृंग रात्रिचर होता है तथा रात के समय बहुत ही सक्रिय होता है। दिन के समय ये कीट पेड़ों तथा अपने प्रजनन क्षेत्रों में छुप कर बैठे रहते हैं तथा नज़र नहीं आते हैं। वयस्क गेंडा भृंग का जीवन काल 4-9 माह का होता है तथा प्रत्येक मादा अपने जीवन काल के दौरान 55-101 अंडे देती है। एक वर्ष में इस कीट की एक पीढ़ी ही पूर्ण होती है।

एकीकृत कीट प्रबंधन उपाय

1. नारियल के वृद्धि बिन्दुओं पर इस कीट की उपस्थिति के निशान दिखाई देने पर उन्हें निकालके इसमें उपस्थित गेंडा भृंगों को मार देना चाहिए।
2. नारियल के सड़े-गले अपशिष्टों को एकत्रित करके नष्ट कर देना चाहिए।

3. प्रायः ये कीट खाद के ढेरों व नारियल के अपशिष्टों पर प्रजनन करते हैं। ऐसा पाया गया है कि अगर इन ढेरों को लताओं से ढक दिया जाए तो इन्हें रोका जा सकता है।
4. पौधों के शिखर (क्राउन) में उपस्थित वयस्क भृंगों को लोहे के हुक द्वारा बाहर निकाल कर नष्ट करना चाहिए।
5. भृंगों को हुक द्वारा बाहर निकालने के बाद छिद्रों को बालू व वनस्पति खली (नीम खली/चालमोगरा खली/पोंगम खली) तुल्य मात्रा में मिलाकर भर देना चाहिए। ये काम वर्षा से पहले व बाद में करना चाहिए।
6. यह कीट अपनी अंडा, लार्वा व प्यूपा अवस्था गोबर अथवा कम्पोस्ट के ढेर में व्यतीत करता है। अतः खाद के ढेर चयनित स्थान या कम्पोस्ट के गड्ढे में डालकर कार्बरील (0.15%) के घोल से उपचारित करके इन अवस्थाओं को नष्ट कर देना चाहिए। कीटनाशक घोल की मात्रा इतनी होनी चाहिए कि ढेर में 60 सें.मी. गहराई तक कीटनाशक घोल पहुंच जाए। कीट प्रजनन स्थानों का उपचार नियमित अंतराल पर करना चाहिए।
7. मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि नामक कीटभक्षी फफूंद तथा ओरिक्टस वायरस इस कीट के नियंत्रण हेतु प्रभावी होते हैं। अतः इन का इस्तेमाल समय-समय पर करना चाहिए। मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि को खाद या कम्पोस्ट के गड्ढे में मिलाना चाहिए जबकि ओरिक्टस वायरस को फैलाने के लिए कुछ वयस्क कीटों को इससे प्रकोपित करके स्वस्थ कीटों के बीच छोड़ना चाहिए ताकि उनमें भी ये रोग फैल सके।
8. मेंढक, टोड, छिपकली, सूअर, चूहे आदि इसके प्राकृतिक शत्रु हैं। वयस्क कीट के बड़े आकार के कारण ये इस का आसानी से शिकार कर लेते हैं।

लाल ताड़ धुन: इस कीट द्वारा नारियल किसान को आर्थिक नुकसान तो होता ही है साथ ही साथ किसान तथा उसके परिवार को नारियल पेड़ के मरने से मानसिक रूप से भी बहुत अधिक वेदना पहुंचती है। क्योंकि इससे उनके दिन प्रति दिन की ज़रूरतें जैसे कि पोषण, ईंधन, घर की छत, धार्मिक तथा सांस्कृतिक ज़रूरतें भी काफी हद तक प्रभावित होती हैं। भारत में लगभग 12 प्रतिशत नारियल की फसल इस कीट से नुकसान पहुंचने वाले आयु समूह अर्थात् 5-20 वर्ष



लाल ताड़ धुन

के अंतर्गत आते हैं जो कि बहुत अधिक चिंता का विषय है। यह कीट भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका, मलेशिया तथा फिलीपीन्स में पाया जाता है। यह नारियल का अत्यंत विनाशकारी कीट है। भारत में ये कीट महाराष्ट्र, असम, केरल, तमिलनाडु तथा ओडिशा में नारियल के वृक्षों को भारी क्षति पहुंचाते हैं। ये धुन खूबू को भी नुकसान पहुंचाते हैं। इस कीट की सूँड़ी पौधों के कोमल भागों को खाकर हानि पहुंचाती है। इस कीट की संख्या अधिक होने पर पौधों के विकासोन्मुख भागों में छेद बन जाता है जिससे पौधों को गंभीर नुकसान पहुंचता है। इस कीट का वयस्क धुन हल्के लाल-भूरे रंग की बेलनाकार लंबे तुंड (snout) युक्त होता है। मादा धुन पौधों के कोमल भागों में अपने तुंड से छिद्र बनाती हैं तथा अंडे देती है। एक मादा अपने 3-4 माह के जीवनकाल में 200 से 500 अंडे देती है। इन अंडों से 2-5 दिनों में कोमल सफेद रंग की लट निकलती है। पूर्ण विकसित लट लगभग 65 मि.मी. लंबी तथा पीलापन लिए होती है। सूँड़ी का चरण लगभग 2-4 हफ्ते का होता है। पूर्ण विकसित सूँड़ी कोकून बनाकर प्यूपा में बदल जाती है और 15-20 दिनों में इससे वयस्क धुन निकल आता है।

निम्नलिखित लक्षणों से नारियल में इस कीट की उपस्थिति का पता चलता है:-

1. तने तथा डंठल के मूल भाग पर पाए जाने वाले छिद्रों तथा सुरंग द्वारा।
2. सूँड़ी द्वारा तने को लगातार खाने से एक विशिष्ट प्रकार की आवाज़ निकलती है। इसके आधार पर कीट की उपस्थिति का पता चल सकता है।
3. कीट द्वारा बनाई गई सुरंगों में से भूरे रंग में गोंद के समान पदार्थ बाहर निकलता रहता है।

● कीट नियंत्रण

4. कीट ग्रस्त सुरंगों से बुरादा निकलता रहता है तथा इससे सिरके के समान खमीरी गंध आती रहती है।
5. गंभीर रूप से कीट प्रकोपित नारियल के चारों तरफ मृत वयस्क कीट और प्यूपा के खोल पड़े होते हैं।
6. लंबे समय तक कीट प्रकोप की दशा में तने का टूट जाना तथा डंठल का मुड़ जाना भी इसके प्रकोप के लक्षण है।

एकीकृत कीट प्रबंधन उपाय

1. यांत्रिक नियंत्रण: जहाँ तक संभव हो इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि तने पर किसी भी प्रकार का घाव न बने। बागों की पूरी तरह से सफाई करनी चाहिए। नारियल के तने के आसपास की ज़मीन की अप्रैल-मई में गहरी जुताई करना ज़रूरी है। कीट प्रकोपित सूखे भागों और मृत नारियल के पौधों को जलाकर खत्म कर देना चाहिए। तने से 120 से.मी. की दूरी छोड़ते हुए डंठल को काट देना चाहिए ताकि डंठल के माध्यम से धुन का प्रवेश रोका जा सके। तने पर बने घावों को कार्बरिल (10%) तथा रेत के मिश्रण (1:1) से भर देना चाहिए।

2. फेरोमोन जाल द्वारा नियंत्रण: इस कीट को एक साथ बड़ी संख्या में पकड़के नाश करने हेतु फेरोमोन जाल (फेरोलूर) बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। फेरोमोन जाल में कुछ मात्रा में कीटों का भोजन जैसे कि नारियल के टुकड़े आदि रखने से इसकी क्षमता बढ़ जाती है तथा अधिक मात्रा में नर व मादा कीटों को पकड़ा जा सकता है तथा इन्हें 0.5% कार्बोफ्यूरोन की मदद से मारा जा सकता है। प्रति हेक्टर 1 जाल लगाने से कीटों को बड़ी संख्या में पकड़ा जा सकता है।

3. रासायनिक नियंत्रण: प्रकोपित ताड़ों पर प्रकोपित स्थानों में इमिडाक्लोप्रिड 0.002 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली.) या इंडोक्सोकार्ब 0.04 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 2.5 मि.ली.) का यथासमय प्रयोग करने से सूँडियाँ मर जाती हैं और कीट प्रकोप से ताड़ मुक्त होकर उस पर नई कॉपल निकलने लगती है। यदि धुन तने से प्रवेश करता है तो तने पर लगा छेद सीमेंट/कोल तार से बंद करें और बरमा की सहायता से सबसे ऊपर का छेद तिरछा बनाकर कीप से इस छेद में कीटनाशी घोल डाल दें।

कृष्ण शीर्ष इल्ली: इस कीट की सूँडी का सिर बड़ा तथा काले रंग का होने के कारण इसे कृष्ण शीर्ष इल्ली कहा जाता है।



कृष्ण शीर्ष इल्ली

अंडों से निकली छोटी सूँडियाँ प्रारंभिक अवस्था में नारियल की पत्तियों को नीचे से खा कर उन्हें नुकसान करती हैं। बाद में ये आकार में बड़ी हो जाती हैं तथा इनके मुखांग भी मज़बूत हो जाते हैं जिससे ये पत्तियों की मुख्य शिरा को छोड़ कर संपूर्ण हरे भाग को चबा-चबाकर खाने लगती है। खाने के साथ साथ ये अपने शरीर से रेशमी धागे भी निकालती है जिसमें इसके द्वारा उत्सर्जित मल भी जमा हो जाता है। इसके कारण ये गुच्छों के रूप में दिखाई देने लगते हैं। सूँडियों द्वारा पत्तियों के हरे भागों को खाने से वह भाग भूरा होकर सूख जाता है। इसके परिणामस्वरूप नारियल के उत्पादन पर विपरीत असर पड़ता है। नारियल का विकास भी अवरुद्ध हो जाता है तथा इसमें कमी आ जाती है। इस कीट का प्रकोप सामान्य तौर पर पूरे वर्ष के दरमियान घटते-बढ़ते देखा जा सकता है। इस कीट का प्रकोप वर्षा ऋतु (जुलाई से सितंबर) के दौरान अधिक मात्रा में देखा जाता है। सर्दी के दौरान इस कीट का प्रकोप सामान्य से घट कर बहुत साधारण हो जाता है जबकि गर्मी के मौसम (मार्च से अप्रैल) के दौरान इसके प्रकोप में वृद्धि दर्ज की जाती है तथा मई माह के बाद प्रकोप बहुत कम हो जाता है।

एकीकृत कीट प्रबंधन उपाय

1. नारियल बागों में नियमित रूप से सिंचाई करने से कीट प्रकोप कम की जा सकती है।
2. रोगप्रकोप की गुजाइश वाले क्षेत्रों में कीट की मौजूदगी का पता लगाने के लिए ताड़ के पत्तों का नियमित रूप से अनुवीक्षण करते रहना चाहिए।
3. 2-3 पुराने और सूखे पत्तों को काट दें जिन पर विविध अवस्था वाले कीट बसे हों और उन्हें पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए। इल्लियों/प्यूपों की आबादी कम करने के लिए उन पत्तों को जला देना चाहिए।

4. कीट प्रकोपित क्षेत्रों से कीट मुक्त क्षेत्रों में नारियल पत्तों को नहीं ले जाना चाहिए और इसप्रकार क्षेत्र विशेष में संगरोध सशक्त बनाना चाहिए।
5. यदि कीट, विकास की तीसरी अवस्था वाले या इससे अधिक आयु के लार्व के रूप में हो तो लार्वा परजीवी गोनियोज़स निफेंटिडिस(प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर) एवं ब्राकोन ब्रेकिर्निस(प्रति ताड़ 30 परजीवी) को अधिक संख्या में बाग में छोड़ देनी चाहिए। पूर्वप्यूपा परजीवी (एलैसमस निफेंटिडिस) और प्यूपा परजीवी (ब्रेकिमेरिया नोस्टोय) को हर 100 पूर्व प्यूपे और प्यूपे के लिए क्रमशः 49 प्रतिशत और 32 प्रतिशत की दर पर छुड़ाने से प्रभावी रूप से इस कीट का प्रबंधन मुम्किन हुआ है।
6. परजीवियों को छुड़ाने से पहले इन्हें पर्याप्त मात्रा में शहद देना चाहिए और पोषक गंधों (गैलरी के वाष्पशील पदार्थ) से सुगम्य बनाना चाहिए ताकि पोषक कीटों की खोज करने की क्षमता बढ़ जाए।
7. ताड़ का स्वास्थ्य सुधारने के लिए पर्याप्त सिंचाई और अनुशंसित मात्रा में पोषकतत्वों का प्रयोग सुनिश्चित करें।

नारियल का एरियोफिड माइट: इस कीट का वैज्ञानिक नाम ऐसेरिया गुरुर्वानिस है। यह कीट सर्वप्रथम सन् 1965 में अमेरिका के मेक्रिस्को राज्य में देखने को मिला। तदुपरांत यह अन्य नारियल उत्पादक क्षेत्रों में भी फैलता गया। भारत में ये माइट सन् 1997 के दौरान नारियल उगाने वाले दक्षिणी राज्यों में पायी गयी तथा इस माइट का अतिगंभीर नुकसान देखने को मिला। इस कीट का जीवन-चक्र, नुकसान के प्रकार तथा



माइट प्रकोपित नारियल

नियंत्रण उपायों के विषय में इस लेख में विस्तार से जानकारी दी जा रही है जो उपयोगी सिद्ध होगी। नारियल की प्रारंभिक अवस्था में अर्थात् एक माह पुराने फलों पर इसका प्रकोप शुरू होता है तथा ये परिदलपुंज के नीचे घुस कर नुकसान पहुंचाते हैं। ये अपने सुई के समान मुखांगों की मदद से नारियल की छाल में से रस चूस लेते हैं। कभी कभी इसके गंभीर प्रकोप से अविकसित नारियल के फल पेड़ से गिर जाते हैं। यदि नारियल के परिदलपुंज भाग पर सफेद या हल्के पीले रंग के त्रिभुजाकार धब्बे दिखाई दें तो ये इस कीट के प्रकोप की शुरुआत की निशानी माननी चाहिए। इसके बाद जैसे-जैसे ये नारियल बड़े होते हैं वैसे-वैसे ये निशान भी बड़े होते जाते हैं तथा अंत में गहरे भूरे रंग के हो जाते हैं व इनमें दरारें पड़ जाती हैं तथा कई बार इसमें से गोंद के समान पदार्थ भी बाहर निकलता है। इस माइट का नुकसान दो से पांच महीने के नारियल में अधिक देखने को मिलता है। इस प्रकार से माइट प्रकोपित नारियलों का बाजार भाव घट जाता है साथ ही साथ उनकी गुणवत्ता पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है व खोपरे का वज़न भी बहुत कम हो जाता है। ये माइट पंखरहित अति सूक्ष्म होते हैं जो नगन आँखों से दिखाई नहीं देती है, इनका शरीर लंबा नावाकार होता है। इनके शरीर की लंबाई 200-250 माइक्रोन तथा चौड़ाई 38-45 माइक्रोन अर्थात् एक मिलीमीटर के 1000वें भाग के बराबर होती है। इसके शरीर का पिछला भाग मोटा होता है जबकि अग्र भाग पर दो जोड़ी टाँगें व सुई के समान तीखे मुखांग पाए जाते हैं। इस कीट की मादा अपने जीवन काल में 20 से 100 अंडे देती है। ये अंडे दो से तीन दिन में परिपक्व होते हैं। अंडे से वयस्क अवस्था तक का जीवन-चक्र 10-12 दिनों में पूरा होता है।

एकीकृत माइट प्रबंधन उपाय

1. प्रत्येक पेड़ को 50 किलोग्राम गोबर की खाद प्रति वर्ष मिलनी चाहिए।
2. प्रत्येक पेड़ को 5 किलोग्राम नीम खली प्रति वर्ष मिलनी चाहिए।
3. हमेशा रासायनिक उर्वरकों की सिफारिश की गयी मात्रा का ही प्रयोग करना चाहिए।
4. नीम तेल-लहसुन-साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत गाढ़ता पर (10 लीटर पानी में नीम तेल 200 मि.ली., साबुन 50 ग्राम

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति का निरीक्षण संपन्न



निरीक्षण बैठक की झलक

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति ने तिरुवनंतपुरम में 27 सितंबर 2022 को नारियल विकास बोर्ड का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान समिति ने नाविबो की राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों की समीक्षा की। श्री सुशील कुमार गुप्ता, सांसद (राज्य सभा) समिति के कार्यपालक संयोजक रहे। श्रीमती संगीता यादव, सांसद (राज्य सभा) समिति की दूसरी सदस्य रही। निरीक्षण बैठक में डा.रामेश्वरलाल मीना, अवर सचिव, श्री मनोज कुमार, हिंदी अधिकारी, श्री मो.आरिफ, समिति रिपोर्टर और श्री अनिल कुमार, समिति सहायक उपस्थित रहे।

बोर्ड की ओर से डा.एन.विजयलक्ष्मी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, डा.बी.हनुमंते गौडा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, श्री आर.मधु, सचिव और श्रीमती बीना एस, सहायक निदेशक(रा.भा.) उपस्थित थे। मंत्रालय की ओर से श्री अमित प्रकाश, निदेशक(रा.भा.), श्री अनिल कुमार लखानी, सहायक निदेशक(रा.भा.) और श्री सुशील कुमार, प्रभारी सहायक निदेशक ने निरीक्षण बैठक में भाग लिया।

- और लहसुन 200 ग्राम का मिश्रण) या 0.004 प्रतिशत की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम छिड़कना या 10 मि.ली. की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम तुल्य मात्रा में पानी के साथ जड़ों द्वारा साल में तीन बार याने मार्च-अप्रैल, अक्टूबर-नवंबर और दिसंबर-जनवरी के दौरान देना अनुशंसित है। रोगरोधी उपाय के रूप में गर्मियों में तापमान बढ़ने से पहले का प्रयोग भी उचित होता है।
5. नीम दवा के साथ साथ प्रति ताड़ प्रति लीटर 20 ग्राम की दर पर 1.6×10^8 सीएफयू माइट पर रोगजनक फ़ूँद (एकरोपैथोजन) हिरसुटेल्ला थोमसोनी निहित टैल्क आधारित दवा का प्रयोग।

6. अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग, जैवभार का पुनर्चक्रण, नारियल थालों में हरी खाद फसलें उगाना और इनमें फूल निकलने पर उन्हें उखाड़कर वहीं मिट्टी में मिला देना, गर्मी के समय सिंचाई और समुचित उपायों से मिट्टी और जल संरक्षण करने से ताड़ों का स्वास्थ्य सुधरता है और कीट का प्रकोप कम हो जाता है।

चूहे: नारियल में चूहे पेड़ के शिखर पर समूहों में रह कर नारियल के छोटे तथा कोमल भागों में छेद बना कर उनके अंदर का पानी पी जाते हैं तथा गरी को भी खा जाते हैं। नारियल के घने घटादार बागों में इसका प्रकोप अधिक होता है तथा नुकसान भी अधिक होता है क्योंकि ये एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर आसानी से पहुंच जाते हैं।

एकीकृत चूहा प्रबंधन उपाय

1. गैल्वेनाइज्ड लोहे के पतरे (26 गेज) अथवा 30 से.मी. चौडे एल्युमिनियम के पतरे को नारियल के तने के चारों तरफ ज़मीन से 2-2.5 मी. ऊंचाई पर लगाएं अथवा
2. नारियल के बाग में चूहे पकड़ने के पिंजरे रखें जिसमें ये पकड़ में आ जाए।
3. ब्रोमोडियोलोन मोम की टिकिया 50 ग्राम प्रति पेड़ अथवा जिक फास्फोइड का 2 प्रतिशत विष चुगा रखने से नारियल में चूहों का नियंत्रण हो सकता है।

इस प्रकार से नारियल उत्पादक अपने बाग में हानिकारक नाशीजीवों का प्रबंधन करके अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। ■

नारियल बागों में मासिक कार्य

अक्तूबर

रोपण

निचले क्षेत्रों में, नारियल पौधों का रोपण किया जा सकता है। पौधों के गड्ढों में बारिश के पानी का जमाव रोक दें। उत्तर पूर्वी मानसून की शुरुआत के साथ तमिलनाडु जैसे क्षेत्रों में नव रोपण शुरू किया जा सकता है।

खाद प्रयोग

सिंचित परिस्थितियों में, यदि सितंबर के दौरान रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग नहीं किया गया हो तो अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई भाग का प्रयोग किया जा सकता है। जून के दौरान लगाए गए नारियल पौधों के लिए रासायनिक उर्वरकों का (सामान्य सिफारिश का दसवाँ भाग याने 100 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटेश और 200 ग्राम रॉक फोस्फेट) पहला प्रयोग किया जा सकता है। हमेशा यह अनुशंसा दी जाती है कि सामान्य सिफारिशों का अनुसरण करने के बजाय मिट्टी की जाँच करके इसके परिणाम के अनुसार रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करें।

जहाँ भी बोरोन की कमी पायी जाती है थालों में 100 ग्राम बोरेक्स का प्रयोग करें। मैग्नीशियम की कमी के कारण जिन ताड़ों के पत्तों का रंग पीला दिखने लगा है, ऐसे ताड़ों के लिए दूसरे उर्वरकों के साथ साथ 0.5 कि.ग्रा मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग किया जा सकता है।

सिंचाई

पूर्वी और उत्तर-पूर्वी राज्यों में नारियल की खेती किए जाने वाले गैर परंपरागत क्षेत्रों में सुरक्षित सिंचाई के रूप में न्यूनतम तापमान 20° सें. से कम हो जाने पर नारियल ताड़ों की सिंचाई शुरू की जा सकती है। सिंचाई शुरू करने से पहले नारियल पेड़ के थालों में 1.8 मीटर के घेरे में कम से कम 15 सें.मी. की ऊँचाई तक मोटा पलवार लगाना चाहिए। नारियल की खेती किए जाने वाले शेष क्षेत्रों में मिट्टी में नमी की उपलब्धता और मानसून खत्म होने के आधार पर सिंचाई शुरू की जानी चाहिए।

हरी खाद प्रयोग

उत्तर पूर्व मानसून का लाभ प्राप्त होने वाले तमिलनाडु जैसे क्षेत्रों में सनई (क्रोटलेरिया जनसिया) या ढैंचा (सेसबानिया एकुलेटा) या लोबिया (विगना अनगुइकुलेटा) या जंगली नील (टेफ्रोसिया परपुरिया) जैसी हरी खाद फसलें उगायी जा सकती हैं। एकल फसल के रूप में नारियल की खेती किए जाने वाले बागों में पेड़ों के बीच की जगह में हरी खाद फसलों की अनुशंसित बीजदर है: सनई-प्रति हेक्टर 20 कि.ग्रा., ढैंचा-प्रति हेक्टर 30 कि.ग्रा., लोबिया-प्रति हेक्टर 25 कि.ग्रा. और जंगली नील-प्रति हेक्टर 15 कि.ग्रा.।



हरी खाद फसल की खेती

यदि अंतर फसलों की खेती की जा रही है तो 1.8 मीटर घेरे के नारियल थालों में हरी खाद फसलें उगाई जा सकती हैं। लोबिया और ढैंचा के लिए प्रति थाला बीज दर 100 ग्राम है जबकि अन्य हरी खाद फसलों के लिए प्रति थाला 75 ग्राम बीज बो सकते हैं।

खेती प्रक्रियाएं

यदि सितंबर में नहीं किया गया हो तो बागान को खरपतवार मुक्त रखने के लिए अंतर जगह की जुताई/खुदाई की जानी चाहिए। यह ध्यान रखा जाए कि जुताई करते समय नारियल पेड़ों को कोई धाव न लगें।

नर्सरी प्रबंधन

नर्सरी की निराई गुड़ाई करें। पाँच महीने आयु के अनंकुरित फलों और मृत अंकुरों को नर्सरी से निकाल दें। नारियल पत्तों

से या सूखे घास से या फिर थालों में हरी खाद फसलों की खेती करके सजीव पौधों से पलवार लगाया जा सकता है। नारियल पौधों के लिए सिंचाई की जानी चाहिए। उत्तर-पूर्वी मानसून अच्छी तरह मिलने वाले क्षेत्रों में बीजफलों की बुआई की जा सकती है।

पलवार लगाना

यदि सितंबर के दौरान पेड़ों के थालों में पलवारा नहीं लगाया गया हो तो अब पलवार लगाएं। पलवार लगाने के लिए नारियल बाग में उपलब्ध गिरे सूखे नायिल पत्तों का उपयोग किया जा सकता है।



नारियल के पत्तों से पलवार

नारियल में कीट और रोग प्रबंधन

लगातार शुष्क और नम अवधि के साथ बीच बीच में वर्षण के कारण फलों पर कीटों और रोगों का प्रकोप अधिक होता है जिसके लिए व्यवस्थित हस्तक्षेप की ज़रूरत होती है। लगातार बारिश मिलने वाले और छोटी अवधि में शुष्क गरम मौसम होने वाले क्षेत्रों में अपक्व फलों का गिराव और बुतामों का झड़ना गंभीर होते देखा गया है। सामान्य रूप से इस चरण में बहुत कम संख्या में फल लगते हैं। जलवायु संवेदनशीलता के साथ साथ ये समस्याएं और भी गंभीर हो जाती हैं और इन समस्याओं से निपटने के लिए पौष्टिकतत्वों का विभाजित करके प्रयोग व्यवस्थित करना चाहिए और इन फल कीटों और रोगों से निपटने के लिए सामयिक हस्तक्षेप करना इस महीने के दौरान अनिवार्य है। नारियल एरियोफिड माइट, कोरिड बग जो फल को झुरिदार बनाता है और फल छेदक कीटों का प्रकोप देश के कुछ नारियल उत्पादक इलाकों में रिपोर्ट किया गया है। फल पर होने वाली इन समस्याओं की प्रबंधन विधियाँ आगे बतायी जाती हैं:

नारियल एरियोफिड माइट, एसेरिया गरुर्निस

नारियल एरियोफिड माइट एक आक्रामक कीट है जिसके बारे में सबसे पहले 1998 में रिपोर्ट की गई थी और जाड़े के मौसम पूर्व इसका प्रकोप अधिक होता है। यह मकड़ी परिवार का कीट है जिसके दो युगल पैर होते हैं। इसका आकार इतना छोटा है (200-250 माइक्रोमीटर) कि माइक्रोस्कोप से ही इसको देख सकते हैं। यह 100-150 अंडे डालता है और इसका जीवनचक्र 7-10 दिन में पूरा हो जाता है। परागण के बाद विकासशील फलों पर माइट का प्रकोप तुरंत होता है और यह पत्राभ के अंदर सीमित रहता है और परिदलपुंज के निचले भाग के मेरिस्टमी ऊतकों को खा लेता है। परिदलपुंज के नीचे लंबाकार में सफेद लकीरें दर्शित होती हैं जो कि इसके प्रकोप का पहला लक्षण है। कुछ ही दिनों में परिदलपुंज के चारों ओर पीला मंडल प्रकट होता है जो मस्से जैसा बन जाता है और अंत में वहाँ पर दरारें, छेद और गोंदार्ति(गम्मोसिस) उत्पन्न होता है। बुतामों और अपक्व फलों का झड़ना और फलों की कुरुपता आदि माइट के प्रकोप के अन्य लक्षण हैं।



फलों पर माइट का प्रकोप

प्रबंधन

- सूखे शूकीछद, पुष्पक्रम के अपशिष्ट, गिरे फल आदि को हटाएं और इन्हें मिट्टी में गाढ़ देना या जला देना कीट की आबादी कम करने के लिए अनिवार्य है।
- नीम तेल-लहसुन-साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत गाढ़ता पर (10 लीटर पानी में नीम तेल 200 मि.ली., साबुन 50 ग्राम और लहसुन 200 ग्राम का मिश्रण) या 0.004 प्रतिशत की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम छिड़कना या 10 मि.ली. की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम तुल्य मात्रा में पानी के साथ जड़ों द्वारा साल में तीन बार याने मार्च-अप्रैल, अक्टूबर-नवंबर और दिसंबर-जनवरी के दौरान देना अनुशंसित है। रोगरोधी उपाय के रूप में गर्मियों में तापमान बढ़ने से पहले का प्रयोग भी उचित होता है।

- नीम दवा के साथ साथ प्रति ताड़ प्रति लीटर 20 ग्राम की दर पर 1.6×10^8 सीएफयू माइट पर रोगजनक फॉन्ड (एकरोपैथोजन) हिरसुटेल्ला थोमसोनी निहित टैल्क आधारित दवा का प्रयोग।
- बाग में कल्प हरिता (कुलशेखरम लंबे से चयनित) किस्म पर माइट का प्रकोप अत्यंत कम पाया गया है।
- अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग, जैवभार का पुनर्चक्रण, नारियल थालों में हरी खाद फसलें उगाना और इनमें फूल निकलने पर उन्हें उखाड़कर वहाँ मिट्टी में मिला देना, गर्मी के समय सिंचाई और समुचित उपायों से मिट्टी और जल संरक्षण करने से ताड़ों का स्वास्थ्य सुधरता है और कीट का प्रकोप कम होता है।

कोरिड बग, पैराडैसिनस रोस्ट्रेटस

निम्फ और वयस्क कीट कोमल बुतामों (1-3 महीने आयु के) के मेरिस्टमी क्षेत्र को छेद लेता है और खाए गए स्थानों के चारों ओर विष इंजेक्ट करता है जिससे ऊतकक्षय होता है। काटे गए छेद बढ़कर ऊतकक्षयी घाव बन जाता है और जब झड़कर गिरे बुतामों के परिदलपुंज भाग को हटाया जाता है तो धुरी आकार के धब्बे प्रकट होते हैं। परागण के पहले ही मादा फूलों पर आक्रमण होता है और ये फूल सूख जाते हैं और शिखर पर पुष्पक्रम में ऐसे फूलों को देखा जा सकता है और इसके परिणामस्वरूप बंध्या फलों का उत्पादन होता है। अधिकांश कीट प्रकोपित बुताम और डाब गिर जाते हैं। गुच्छों पर शेष फलों के छिलकों पर झुर्रियाँ और शिकन नज़र आने लगते हैं और फल कुरुरूप हो जाते हैं।

प्रबंधन

- अंडे तथा अवयस्क कीटों का नाश करने के लिए शिखर की सफाई करें।
- एज़ाडिरेक्टिन 300 पीपीएम (निंबिसिडिन) का 0.0004 प्रतिशत की दर पर (प्रति लीटर 13 मि.ली.) छिड़काव करने से कीट का प्रकोप कम होता है। मई-जून और सितंबर-अक्टूबर के दौरान 1-5 महीने की आयु के नारियल गुच्छों पर दो बार छिड़काव करना संतोषजनक रूप से कीट का नियंत्रण करने के लिए अनिवार्य होता है।
- बाग में कोरिड बग के कुदरती शत्रुओं में वीवर चींटी, आयोकोफैला स्मेराग्निना सबसे प्रभावी परभक्षी पाए गए हैं।



कोरिड बग के प्रकोप से नुकसानप्रस्त फल

- दो अंडा परजीवियों जैसे क्राइसोकैल्सिसा ऑविसेप्स और ग्रयोन होमियोसेरी को संभाव्य अंडा परजीवी के रूप में पहचाने गए हैं। बाग से एकत्रित कुल अंडों का 40 प्रतिशत तक परजीवियों का आहार बनते पाया गया है।
- गंभीर प्रकोप के मामले में परागण किए गए गुच्छों पर प्रति लीटर 0.3 मि.ली. की दर पर क्लोरएंट्रानिलिप्रोल या प्रति लीटर 1.0 मि.ली. की दर पर लैम्बडा साइहलोथ्रिन का छिड़काव प्रभावी पाया गया है।

फल छेदक कीट, साइक्लोडस ओम्मा

पोल्लाची (तमिलनाडु) के कुछ बागानों में फल छेदक का प्रकोप पाया गया है। यह एक छिटपुट कीट है जो आमतौर पर बौने जीनप्रसूपों और संकरों में पाया जाता है। नत्रजनयुक्त उर्वरकों के अतिरिक्त पोषण से जो रसीलापन आ जाता है वह भी कीट के प्रकोप का प्रमुख कारण है। परागण के बाद बुतामों को तथा अपक्व फलों को छेदकर इल्ली अंदर घुस जाती है और रात के समय इसके भीतरी भागों को खा जाती है जिसके फलस्वरूप बुताम झड़ जाते हैं। जिन ताड़ों पर कृत्रिम परागण होता है, वे इस कीट के प्रकोप का शिकार जल्दी हो जाते हैं। ताड़ के शिखर के अपशिष्टों पर प्यूपा अवस्था में कीट पाए जाते हैं।

प्रबंधन

- शिखर की सफाई करके अपक्व अवस्था के कीटों को हटाना चाहिए।
- रसीलापन से बचने के लिए नत्रजनयुक्त उर्वरकों का प्रयोग विवेकपूर्ण रूप से तथा आवश्यकता के आधार पर करना चाहिए।
- हस्त चालित स्प्रेयर का प्रयोग करके कीट-रोगाणु बैसिलस थुरिंजियैसिस प्रति लीटर 20 ग्राम की दर पर और नीम तेल 0.5 प्रतिशत (10 ग्राम साबुन पाउडर के साथ 5 मि.ली. प्रति लीटर) का छिड़काव करने से कीट का प्रकोप कम होता है।

कली सड़न या अपक्व फल का गिराव, फाइटोफ्थोरा पामिवोरा

कतिपय नम क्षेत्रों में कली सड़न रोग का शिकार होकर सैकड़ों पेड़ मर जाते हैं। भारत में कली सड़न रोग का प्रकोप एक प्रतिशत से कम रिपोर्ट किया गया है। रोगाणु कलिका क्षेत्र पर वार करता है जिससे कलिका क्षेत्र सड़ने लगता है और ताड़ मर जाते हैं। पीले रंग का होकर कॉपल का मुद्राना इस रोग का पहला प्रकट लक्षण है। कॉपल भूरे रंग का हो जाता है और नीचे की ओर झुक जाता है। प्रकोपित कॉपल को आसानी से खींचकर निकाला जा सकता है क्योंकि इसका मूल भाग पूरी तरह सड़कर बदबू उत्पन्न करने लगता है। 20° - 24° सेल्शियस तापमान और 98-100 प्रतिशत के बीच आपेक्षिक आर्द्रता कली सड़न रोग के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करता है। बारिश के मौसम में इसप्रकार के अनुकूल दिन लगातार बना रहना यह निर्धारित करता है कि रोग का विकास और प्रकोप की तीव्रता कहाँ तक हो सकता है। फाइटोफ्थोरा रोग अत्यंत घातक होने के कारण मानसून के दौरान ताड़ के स्वास्थ्य का खासतौर पर कॉपल वाले क्षेत्र का निकट संवेदन करना अत्यंत अनिवार्य है।

प्रबंधन

- नियमित रूप से शिखर की सफाई और मानसून की शुरुआत में रोगरोधी उपाय के रूप में शिखर पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करना और 35 से 40 दिनों बाद एक बार फिर छिड़काव करना कली सड़न रोग का प्रकोप कम करने के लिए सहायक होता है।



कली सड़न से प्रकोपित ताड़

- बाग की सफाई और बारिश के मौसम में समुचित जलनिकासी सुविधा प्रदान करना।
- मानसून शुरू होने के एकदम पहले सबसे भीतरी पर्ण कक्षों में ट्राइकोडेर्मा (ट्राइकोडेर्मा हार्जियानम सीपीटीडी 28) संपुष्ट कर्यर गूदा खली रखनी चाहिए और दो महीने बाद एक बार फिर यह दोहराना चाहिए।
- एक तेज़ चाकू से कॉपल के पूरे सड़े हुए भाग को काटकर हटाएं और घाव पर 10 प्रतिशत बोर्डो पेस्ट का लेप करें और बारिश का पानी अंदर आने से बचाने के लिए घाव को एक पोलिथीन शीट से ढक दें। सामान्य अंकुर निकलने तक सुरक्षा आवरण को बैसे ही रहने दें।

फलों का गिराव

फलों के गिरने के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि आनुवंशिक/कायिक, पौष्टिक असंतुलन/कमी, परागण ठीक तरह से न होना, कीटों या माइट का प्रकोप, जल जमाव/सूखा या फफूँद का प्रकोप आदि। फल गिराव के कारक प्रमुख फफूँद प्रजातियाँ फाइटोफ्थोरा पामिवोरा और लैसियोडिप्लोडिया थियोब्रोमे हैं। फाइटोफ्थोरा पामिवोरा के प्रकोप से फलों पर जलसिक्त घाव प्रकट होता है। ये घाव भूरे रंग के हो जाते हैं और फल गुच्छों से अलग हो जाते हैं। फाइटोफ्थोरा का प्रकोप बारिश के मौसम में और उच्च आर्द्रता वाले क्षेत्रों में आमतौर पर पाया जाता है।

फलों पर लैसियोडिप्लोडिया थियोब्रोमे का प्रकोप होने पर उस पर गहरे धूसरे रंग से भूरे रंग के घाव प्रकट हो जाते हैं जिसकी सीमाएं लहरिया और विषम होती हैं। जैसे जैसे प्रकोप बढ़ता है फल की मध्यफलभित्ति और भ्रूणपोष सड़कर बदरंग हो जाते हैं। गंभीर प्रकोप होने पर फल शुष्कित, झुर्रिदार और कुरुपित हो जाता है और पकने से पहले ही गिर जाता है। माइट प्रकोपित फलों पर लैसियोडिप्लोडिया का प्रकोप काफी गंभीर हो जाता है और सालभर रहता है। शुष्क इलाकों में भी इसका प्रकोप देखा गया है।

प्रबंधन

- प्रकोपित फलों को निकालकर नष्ट कर देना।
- मानसून शुरू होने से एकदम पहले शिखर की सफाई करें और गुच्छों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

नवंबर

पौधों की सिंचाई

पौधों को ड्रिप या थाला सिंचाई विधि से पानी देना चाहिए। यदि ड्रिप सिंचाई अपनाई जा रही है तो प्रति दिन प्रति पौध औसतन 10 लीटर पानी देना चाहिए। थाला सिंचाई जैसी दूसरी विधियों के ज़रिए चार दिनों में एक बार 40 लीटर पानी देना पर्याप्त होता है।

वयस्क ताड़ों के लिए सिंचाई

उत्तर पूर्व मानसून बारिश मिलने वाले इलाकों को छोड़कर शेष इलाकों के नारियल बागों में सिंचाई शुरू की जा सकती है। उन क्षेत्रों के नारियल बागों में भी सिंचाई की व्यवस्था की जानी चाहिए जहाँ उत्तर पूर्व मानसून से पर्याप्त मात्रा में बारिश प्राप्त नहीं होती है (यदि दस दिनों से अधिक बारिश नहीं मिल रही हो तो)।

यदि थाला सिंचाई विधि अपनायी गयी हो तो प्रति ताड़ 200 लीटर की दर पर चार दिनों में एक बार सिंचाई की व्यवस्था करें।

नारियल के लिए सिंचाई की सबसे उपयुक्त विधि ड्रिप सिंचाई है। पेड़ के तने से एक मीटर के घेरे में समान दूरी में 1'x1'x1' आकार के चार छोटे गड्ढे खोदने चाहिए। गड्ढों को क्यर गूदे से भरना चाहिए। पोलिथीन पाइप की नली के ज़रिए इन गड्ढों की उप सतह पर ड्रिपर/माइक्रोट्यूब स्थापित किया जाना चाहिए। रेतीली मिट्टी में ड्रिपिंग पाइटों की संख्या छह और अन्य प्रकार की मिट्टियों में यह चार होनी चाहिए। ड्रिप सिंचाई प्रणाली से प्रति दिन प्रति ताड़ 30-45 लीटर पानी की व्यवस्था की जानी चाहिए।



नारियल पौधों की सिंचाई

जल निकासी की व्यवस्था

जिन इलाकों में उत्तर पूर्व मानसून प्राप्त होता है उन इलाकों में पर्याप्त जल निकासी की सुविधा सुनिश्चित की जानी चाहिए। मिट्टी के प्रकार और भौम-जल स्तर के अनुसार समुचित आकार के, कम से कम 50 सें.मी. गहरी और चौड़ी जल निकासी नाली या तो हाथ से या यांत्रिक विधि से बनायी जा सकती है। ताड़ों के हरेक दो कतारों के लिए जल निकासी नाली का निर्माण करना होगा।

खाद प्रयोग

नारियल पेड़ों के लिए ड्रिप फेर्टिगेशन शुरू किया जाए। यूरिया और म्यूरिएट ऑफ पोटेश जैसे जल में घुलनशील उर्वरक ड्रिप सिंचाई विधि के साथ दी जा सकती है। नारियल पेड़ों के लिए सामान्य सिफारिश के अनुसार ये उर्वरक (अनुशंसित मात्रा का 50 प्रतिशत याने प्रति वर्ष प्रति ताड़ के लिए 545 ग्राम यूरिया और 1000 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटेश) मासिक फेर्टिगेशन कार्यक्रम के ज़रिए दो तुल्य भागों में दी जा सकती है। किंतु, रासायनिक उर्वरकों की मात्रा मिट्टी की जाँच के परिणामों और लक्षित उपज के आधार पर तय की जानी चाहिए।

जहाँ भी बोरोन की कमी पायी जाती है वहाँ थालों में 100 ग्राम बोरेक्स का प्रयोग किया जाए।

मैग्नीशियम की कमी के कारण जिन नारियल पेड़ों के पत्ते पीले पड़ गए हो उनके थालों में 0.5 कि.ग्रा. मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग किया जा सकता है।

हरी खाद का प्रयोग

उत्तर पूर्व मानसून का लाभ प्राप्त होने वाले क्षेत्रों में हरी खाद के 50 प्रतिशत पौधों में फूल खिलने लगे तो इनकी जुताई करके नारियल पेड़ों के बीच की जगह पर मिट्टी में मिलाया जा सकता है। इसी प्रकार, नारियल थालों में उगाए जाने वाले हरी खाद पौधों को भी उखाड़के मिट्टी में मिला देना चाहिए।

मातृ ताड़ों का चयन

गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियाँ उत्पादित करने के लिए बीजफल एकत्रित करने हेतु मातृ ताड़ों का चयन करें।

लंबी किस्मों में, बीजफलों का एकत्रण उन ताड़ों से किया जाना चाहिए जिनकी आयु 20 वर्ष से अधिक हो, पैदावार बारानी और सिंचित परिस्थितियों में प्रति वर्ष प्रति ताड़ क्रमशः 80 और 120 नारियल से अधिक और फलों का वज्ञन 600 ग्राम तथा खोपरे का वज्ञन 150 ग्राम या इससे अधिक हो। यही नहीं ताड़ पर कम से कम 30 पत्ते होने चाहिए और ये रोगमुक्त हों। पेड़ पर चौडे पर्णाधार के साथ छोटा और मज्जबूत पर्णवृत्त होने चाहिए जो तने से मज्जबूती से जुड़ा हुआ हो। गुच्छे का डंठल छोटा, मोटा एवं मज्जबूत हो और नीचे की ओर लट कने या झुकने की प्रवृत्ति नहीं दर्शानी चाहिए। ऐसे ताड़ों को न चुनें जिस पर बंध्या फल लगता हो या अधिक संख्या में अपक्व फल का गिराव हो।

अधिक आयु के याने 60 वर्ष से अधिक आयु वाले ताड़ों को और खाद के गड्ढे जैसे अनुकूल परिस्थितियों में बढ़ने वाले ताड़ों को भी नहीं चुनना चाहिए। जिन ताड़ों पर एकांतर वर्षों में फल लगता हो, ऐसे ताड़ों को भी नहीं चुनना चाहिए। बौनी किस्मों में 12 साल या इससे अधिक आयु के तथा बारानी और सिंचित परिस्थिति में प्रति वर्ष प्रति ताड़ क्रमशः 60 और 100 से अधिक फल देने वाले ताड़ों से बीजफल एकत्र किया जा सकता है। यही नहीं पेड़ पर कम से कम 30 पत्ते होने चाहिए और फल का वज्ञन 400 ग्राम से अधिक होना चाहिए।

नर्सरी प्रबंधन

- नर्सरी से खरपतवार निकाल देना चाहिए।
- पाँच महीने की आयु के अनुकूलित फलों और मृत अंकुरों को नर्सरी से हटाना चाहिए।
- नारियल के पत्तों या सूखे घास से या हरी खाद फसल उगाकर जीवित पौधों से नर्सरी में पलवार लगाया जा सकता है।
- सिंचाई की व्यवस्था करें।
- कीटों और रोगों के खिलाफ आवश्यकता के अनुसार पौधा संरक्षण उपाय अपनाना चाहिए। यदि दीमक का प्रकोप पाया जाए तो नर्सरी में प्रति लीटर 2 मि.ली. की दर पर क्लोरोपाइरिफोस से मिट्टी को शराबोर करना चाहिए। नारियल नर्सरी को सफेद मक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए नारियल पत्तों पर पानी का छिड़काव किया जा सकता है।

पलवार लगाना

यदि पहले नहीं किया गया हो तो नारियल थालों में पलवार लगाया जा सकता है। पलवार लगाने के लिए नारियल बागों में उपलब्ध सूखकर गिरे नारियल पत्तों का उपयोग किया जा सकता है। बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और पूर्वोत्तर राज्यों जैसे अपरंपरागत इलाकों में मिट्टी का तापमान नियमित रखने के लिए थालों में मोटी परत में पलवार लगाएं। ऐसे क्षेत्रों में निम्न तापमान के प्रभाव को बेअसर करने के लिए सिंचाई शुरू की जा सकती है।

पौधा संरक्षण

वर्तमान में, अभूतपूर्व मौसमीय अनिश्चितताओं के कारण नारियल पर कीटों के नुकसान स्तर पर भारी परिवर्तन देखा गया है। प्रायद्वीपीय और पूर्वोत्तर भारत में आक्रामक कीट रूगोस स्पाइरलिंग सफेदमक्खी (एल्यूरोडिक्स रुगियोपेर्कुलेट्स मार्टिन), कर्नाटक में कृष्ण शीर्ष इल्ली (ओपिसिना एरेनोसेल्ला वाकर) और आँध्र प्रदेश और कर्नाटक में स्लग इल्ली (डार्ना नरेरिया मूर) का प्रकोप इस तथ्य के समर्थन के उत्तम दृष्टिंत हैं। गैंडा भूंग (ओरिक्टस रिनोसेरस लिन.) और लाल ताड़ घुन (रिंकोफोरस फेरुजिनियस ओलिवर) सर्वव्यापी कीट हैं जो भारत के प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में मानसून और मानसून के पश्चात् प्रमुख रूप से पाया जाता है। उत्तर-पूर्व मानसून के दौरान घातक शोषक कीट कोरिड बग (पैराडैसिनस रोस्ट्रेट्स डिस्टंट) का प्रकोप पाया जाता है जिससे हम अनजान रहते हैं। कम से कम 2-3 गुच्छों पर इसका प्रकोप होता है जिससे सारा बुताम गिर जाते हैं और फलहीन गुच्छे रह जाते हैं। कली सड़न रोग, फलों का गिराव, पत्ता सड़न, तना स्वरण और मूल तना विगलन/गैनोडेर्मा मुझ्जा जैसे रोगों से भी नारियल को नुकसान होता है। बदलती जलवायु परिस्थितियों में नारियल पर कीटों और रोगों के प्रकोप पर नियंत्रण पाने के लिए व्यवस्थित रूप से अनुवीक्षण करना अत्यंत अनिवार्य है। रोगों और कीटों के प्रकोप की पहचान करने के लिए नारियल बागों में नियमित निरीक्षण और अनुवीक्षण करना चाहिए और फसल को नुकसान होने से बचाने के लिए आवश्यकता आधारित और समुचित पौधा संरक्षण उपाय अपनाना चाहिए। नवंबर महीने के लिए कीटों और रोगों के प्रबंधन हेतु अनुशंसाएं नीचे दी गई हैं:



एकीकृत कीट प्रबंधन

गैंडा भूंग

- बीटल हुक का प्रयोग करके गैंडा भूंगों को निकालकर यांत्रिक विधि से इन पर नियंत्रण पा सकता है। भूंगों को निकालते समय ताड़ की वृद्धि बिंदु को कोई नुकसान नहीं पहुँचना चाहिए।
- रोगरोधी उपाय के रूप में प्रति ताड़ सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों को 250 ग्राम की दर पर चूर्णित नीम खली/चालमुगरा (हाइड्रोकार्पस प्रजाति/पोंगमिया) समान मात्रा में महीन रेत मिलाकर भरें।
- सबसे भीतर के तीन पर्णकक्षों में 4 ग्राम की नैथलीन गोलियाँ (प्रति ताड़ 12 ग्राम) हरेक पर्णकक्ष में रखकर इसे मिट्टी से ढकना चाहिए।
- क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल ए.आई.0.4 प्रतिशत (5 ग्राम) या फिप्रोनिल (3 ग्राम) या भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित बनस्पति खली (2 ग्राम) निहित छिद्रित सैशे रखें।
- गोबर/कंपोस्ट गड्ढों में भांट (क्लीरोडेंड्रोन इनफोर्मेटम लिन.) नामक खरपतवार मिला दें।
- प्रजनन स्थानों को हरी मस्कार्डिन कवक (मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि) से उपचारित करें।

लाल ताड़ घुन

- ताड़ों को धाव लगने से बचें, क्योंकि इससे भूंग अंडा डालने के लिए आकर्षित हो जाएगा। यदि कोई यांत्रिक क्षति लगी हो तो इसे कोल तार से उपचारित करें।
- पत्तों को काटते समय पर्णवृत्त को तने से 120 सें.मी. की लंबाई में छोड़कर काटना चाहिए ताकि तने पर घुन का प्रवेश रोका जा सके।
- कीटप्रकोप की गंभीर स्थिति में ताड़ों को काटकर जलाने से तने पर बसे विविध अवस्था वाले कीटों का नाश किया जा सकता है।
- गैंडा भूंग की रोकथाम हेतु पर्णकक्ष भरने के उपाय का जो सुझाव दिया जाता है इसे अपनाना अनिवार्य है क्योंकि यह कीट तने पर लाल ताड़ घुन के प्रवेश के लिए रास्ता बना देता है।
- यदि नुकसान शिखर पर लगा हो तो नुकसानग्रस्त ऊतकों

को निकाल देना चाहिए और कीटनाशी घोल, इमिडाक्लोप्रिड (0.02 प्रतिशत) प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली. की दर पर डाल दें। यदि घुन तने से प्रवेश करता है तो तने पर लगा छेद सीमेंट/कोल तार से बंद करें और बरमा की सहायता से सबसे ऊपर का छेद तिरछा बनाकर कीप से इस छेद में कीटनाशी घोल डाल दें।

पत्ता भक्षी इल्ली

- बुरी तरह से कीटग्रस्त और सूखे 2-3 बाहरी पत्तों को काटकर जला दें ताकि कीट का फैलाव रोका जा सके।
- संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों और जैविक खादों के प्रयोग के जरिए मिट्टी और प्रकोपित ताड़ का स्वास्थ्य सुधार सकता है।
- बाग में इस कीट का कुदरती शत्रु जीव काफी अधिक संख्या में रहते हैं, इसलिए आोपिसीना एरेनोसेला के प्रबंधन के लिए सामान्यतया रासायनिकों की सिफारिश नहीं की जाती है। इस कीट के लार्वा और व्यूपा की दशा कई परभक्षियों का आहार है, इसलिए कीट का जैविक नियंत्रण प्रभावी और व्यवहार्य प्रणाली होता है। विविध अवस्था वाले परजीवीयों का, जैसे लार्वा परजीवी गोनियोज़स निफेंटिडिस (बेथिलिडे) प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर, ब्राकोन ब्रेकिर्निस (ब्रैकोनिडे) प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर, पूर्वव्यूपा परजीवी एलैसमस निफेंटिडिस (एलास्मिडे) 49/100 पूर्वव्यूपा की दर पर और व्यूपा परजीवी ब्रेकिर्निया नोस्टोय (कैल्सिडिडे) 32/100 व्यूपे की दर पर, समुचित समय पर बाग में छुड़ाने से प्रभावी रूप से इस कीट का टिकाऊ प्रबंधन मुम्किन पाया गया है। बाग में विविध अवस्था वाले कीटों पर नियंत्रण पाने के लिए परजीवीयों को एक साथ छोड़ना भी अपेक्षित है। परजीवीयों को छुड़ाने से पहले लार्वा मल पर उनका अनुकूलन बाग स्तर पर परजीविता बढ़ाने के लिए उचित है।



पत्ता भक्षी इल्ली

● फसल अनुरक्षण

एरियोफिड माइट

- सबसे बाहरी परागित पाँच नारियल गुच्छों पर नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण दो प्रतिशत गाढ़ता पर (10 लीटर पानी में 200 मि.ली. नीम तेल, 50 ग्राम साबुन और 200 ग्राम लहसुन मिश्रित करके) छिड़क दें।
- या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 1 प्रतिशत एज्ञाडिरेक्टिन निहित नीम दवा का छिड़काव करें।
- या 800 लीटर पानी में पाम तेल (200 मि.ली.) और सल्फर (5 ग्राम) के घोल का छिड़काव करें।
- 10 मि.ली. की दर पर एज्ञाडिरेक्टिन 10,000 पीपीएम + 10 मि.ली. पानी जड़ों द्वारा देना भी प्रभावी है।
- खादों और उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के साथ साथ 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग भी अनुशंसित है।

कोरिड बग

- परागित गुच्छों पर नीम तेल-साबुन घोल (0.5 प्रतिशत) का छिड़काव करें। एक लीटर पानी में 5 मि.ली. नीम तेल और 8 ग्राम धुलाई का साबुन मिलाकर यह घोल तैयार किया जा सकता है।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी

- पत्तों पर रासायनिक कीटनाशी का छिड़काव नहीं करना चाहिए।
- कज्जली फॉन्ड की परत को निकालने के लिए पत्तों पर एक प्रतिशत कलफ घोल का प्रयोग करें।
- गंभीर प्रकोप की स्थिति में, नीम तेल 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें और किसी भी कीटनाशी की अनुशंसा नहीं दी जाती है।
- वयस्क सफेद मक्खियों को फँसाने के लिए ताड़ के तने पर पीला चिपचिपा फँदा स्थापित करें।
- परजीवियों (एनकार्सिया गुआडेलूप) के प्रवर्धन को बढ़ावा दें और परजीवीकृत प्यूपे को सफेद मक्खी के प्रकोप की शुरुआत वाले स्थानों में पुनः छोड़ दें।



रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी

- बाग में ही कज्जली फॉन्ड भक्षी कीट लियोक्रिनस निलगिरियानस के प्राकृतिक आवास का संरक्षण करें।

एकीकृत रोग प्रबंधन

कली सङ्ग्रह

- कोंपल के रोगग्रस्त ऊतकों को पूरी तरह निकाल दें। सड़े हुए हिस्सों को हटाने और अच्छी तरह साफ करने के लिए यदि आवश्यक हो तो कोंपल के निकट के दो या तीन स्वस्थ पत्तों को भी काट दें। प्रकोपित ऊतकों को हटा देने के बाद 10 प्रतिशत बोर्डो पेस्ट लगाएं और घाव को पोलिथीन शीट से ढक दें ताकि बारिश का पानी अंदर न घुस जाए। सामान्य अंकुर निकलने तक सुरक्षित रूप से ढककर रखें।
- निकाले गए प्रकोपित ऊतकों को जलाकर या गहरे गड़े खोदकर मिट्टी में गाढ़ दें।
- आसपास के ताड़ों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

तना स्वरण

- पेड़ के तने के निकट कचरा न जलाएं।
- तने पर घाव लगाने न दें।
- छेनी से रोगग्रस्त ऊतकों को पूरी तरह हटाकर घाव पर 5 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल (100 मि.ली. पानी में 5 मि.ली.) का लेप करें और 0.1 प्रतिशत घोल से प्रति पेड़ 25 लीटर की दर पर थालों को शराबोर करें।
- तने पर स्नाव निकलने वाले भागों पर ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम के टैल्क आधारित दवा के पेस्ट से लेप करें (25 लीटर पानी में 50 ग्राम ट्राइकोडेर्मा मिलाकर पेस्ट तैयार किया जा सकता है)।
- मिट्टी में प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम से संपुष्ट नीम खली का प्रयोग करें और अनुशंसित सिंचाई/नमी संरक्षण विधियाँ अपनाएं।

पत्ता सङ्ग्रह

- कोंपल के सड़े हुए भाग और आसपास के 2-3 पत्तों को हटाएं और कोंपल के चारों ओर सबसे निचले भाग पर प्रति ताड़ 300 मि.ली.पानी में 2 मि.ली.हेक्साकोनाज़ोल 5 ईसी निहित फॉन्डनाशी घोल या प्रति ताड़ 500 मि.ली. पानी में 50 ग्राम की दर पर स्यूडोमोनस फ्लूरसेंस या बैसिलस सब्टिलिस के टैल्क आधारित दवा का प्रयोग करें।

- गैंडा भूंग के प्रकोप की रोकथाम हेतु उपाय अपनाएं।

मूल तना विगलन/गैनोडेर्मा मुझ्हा

- मृत और रोग की गंभीर स्थिति वाले ताड़ों को हटा दें और इन ताड़ों के धड़ और जड़ भागों का नाश करें।
- थाले के चारों ओर 2 मीटर की गहराई और एक मीटर की चौड़ाई में गड्ढे खोदकर रोगग्रस्त ताड़ों को स्वस्थ ताड़ों से अलग करें।
- प्रकोपित बागों में बाढ़ सिंचाई या जुताई न करें ताकि संरोप का फैलाव रोक सके।

- प्रति वर्ष प्रति ताड़ 50 कि.ग्रा. गोबर की खाद या हरे पत्ते का प्रयोग करें।
- प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर नीम खली संपुष्ट ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम का प्रयोग करें और चार दिनों में एक बार ताड़ों की सिंचाई करें और थालों में पलवार लगाएं।
- प्रति ताड़ 2 प्रतिशत की दर पर हेक्साकोनाज्ञोल (प्रति ताड़ 100 मि.ली. घोल) जड़ों द्वारा दें या 40 लीटर घोल की दर पर 0.2 प्रतिशत हेक्साकोनाज्ञोल/1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से मिट्टी को शराबोर करें।

दिसंबर

बीजफलों का एकत्रीकरण और भंडारण

पहचाने गए मातृ ताड़ों से बीजफलों की तुड़ाई सावधानी से की जानी चाहिए और फल के अंदर का पानी सूख न जाए, इसके लिए समुचित रूप से भंडारण करना चाहिए। जहाँ भी ज़मीन ठोस हो, फलों की तुड़ाई करके रस्सी के सहारे उसे नीचे लाना चाहिए।

नर्सरी प्रबंधन

नर्सरी के पौधों के लिए सिंचाई की व्यवस्था की जानी चाहिए। जहाँ भी आवश्यक हो खरपतवार निकाल देना चाहिए। नारियल के पत्तों से या सूखे घास से या फिर थालों में हरी खाद फसलों की खेती करके सजीव पौधों से पलवार लगाया जा सकता है। यदि नर्सरी में दीमक का प्रकोप पाया जाता है तो क्लोरपाइरिफोस (2 मि.ली. क्लोरपाइरिफोस एक लीटर र पानी में घोलकर) से शराबोर करना चाहिए। स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के प्रकोप से बचने के लिए नारियल पौधों के पत्तों के निचले भाग पर पानी का छिड़काव करना चाहिए। नर्सरी से पाँच महीने की आयु के अनंकुरित और मृत पौधों को निकालें।

खाद प्रयोग

- सिंचित बागों में दिसंबर के दौरान उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई भाग का प्रयोग करें।
- जहाँ भी व्यवहार्य हो मासिक कार्यक्रम के अनुसार नारियल बागों में ड्रिप फेर्टिगेशन जारी रखें।
- जहाँ भी बोरोन की कमी पायी जाए नारियल पेड़ों के थालों में 100 ग्राम बोरेक्स का प्रयोग करें।

- मैग्नीशियम की कमी के कारण नारियल पत्ते पीले पड़ जाएं तो थालों में प्रति ताड़ 500 ग्राम मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग करें।

पलवार लगाना और अंतरखेती क्रियाएं

- यदि पहले नहीं किया गया हो तो थालों में पलवार लगाएं। पलवार लगाने के लिए नारियल बागों में उपलब्ध गिरे सूखे नारियल पत्तों का उपयोग किया जा सकता है।
- नारियल बागों में पहले जो टीले बनाए गए थे उन्हें गिरा दें।

छाया प्रदान करना

- नवरोपित और अवयस्क नारियल पौधों को छाया प्रदान करें।



नारियल के पत्तों से नवरोपित पौधे के लिए छाया प्रदान करना

सिंचाई

- दिसंबर के दौरान नारियल बागों में नियमित रूप से सिंचाई शुरू की जा सकती है।
- यदि नारियल थालों में नालों के ज़रिए पानी दिया जा रहा हो तो सिंचाई नालों को साफ करें।

● फसल अनुरक्षण

- यदि थाला सिंचाई अपनायी जा रही हो तो प्रति ताड़ 200 लीटर की दर पर चार दिनों में एक बार सिंचाई की व्यवस्था करें।
- नारियल के लिए सिंचाई की सबसे उपयुक्त विधि ड्रिप सिंचाई है। रेतीली मिट्टियों के लिए ड्रिपिंग बिंदु छह और अन्य प्रकार की मिट्टियों के लिए चार होने चाहिए। वाष्पीकरण दर के आधार पर नारियल की खेती किए जाने वाले विभिन्न इलाकों के लिए ड्रिप सिंचाई विधि के ज़रिए दिए जाने वाले पानी की मात्रा निर्धारित की जा सकती है। केरल में ड्रिप सिंचाई विधि के ज़रिए प्रति दिन प्रति ताड़ 30-35 लीटर पानी और तमिलनाडु एवं कर्नाटक में 35-45 लीटर पानी पर्याप्त होता है।
- नारियल पौधों को पानी देने के लिए ड्रिप या थाला सिंचाई विधि अपनायी जा सकती है। यदि ड्रिप विधि अपनायी जा रही हो तो प्रति दिन प्रति नारियल पौध 10 लीटर की दर पर पानी प्रदान करें। यदि थाला सिंचाई जैसी दूसरी विधियाँ अपनायी जा रही हो तो चार दिनों में एक बार 60 लीटर पानी देना पर्याप्त होता है।
- बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और उत्तर-पूर्वी राज्य जैसे गैर परंपरागत क्षेत्रों में निम्न तापमान के प्रभाव से बचने के लिए सिंचाई शुरू की जा सकती है। ऐसे क्षेत्रों में मिट्टी का तापमान नियमित रखने के लिए ताड़ के थालों में मोटा पलवार लगाना सुनिश्चित करें।

जल निकासी

- जल जमाव की समस्या वाले क्षेत्रों में नारियल बागों में पर्याप्त जल निकासी की सुविधा सुनिश्चित करें।

कीट एवं रोग प्रबंधन

उत्तर पूर्वी मानसून का चले जाना दिसंबर महीने की विशेषता है जबकि जलवायु धीरे धीरे शुष्क हो जाता है और जाड़े के मौसम की शुरुआत के कारण ठंड भी होने लगता है। नारियल के बागान सहित बहुवर्षीय फसलों की खेती प्रणाली में ठंड और सूखे के दौरान कीटों की मौजूदगी अधिक होती है।

नमी के साथ साथ मानसून बारिश के दौरान कीट प्रकोप कम हो सकता है, जबकि सर्दी (दिसंबर) के आगमन के साथ कीट का प्रकोप शुरू हो जाता है और रोगकारक रोगाणुओं

की वृद्धि होती है और इसलिए कड़ी निगरानी और स्थायी रूप से तलाशी करने की ओर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए ताकि समय पर कीटों और रोगों का पता लगाया जा सके और इसका प्रबंधन किया जा सके। पत्ता सड़न, तना स्रवण और मूल तना विगलन जैसे साधारण और सर्वकालिक रोगों का प्रकोप इस अवधि के दौरान भी होता है और इनके प्रकोप को झेलने तथा पेड़ को और नुकसान होने से बचाने के लिए ताड़ को पर्याप्त रूप से स्वस्थ बनाया रखना होगा।

गेंडा भूंग और लाल ताड़ घुन जैसे सर्वव्यापी कीट तथा स्लग इल्ली, रुग्गोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी, कोरिड बग और चूहे का प्रकोप भी इस अवधि के दौरान स्थानीय क्षेत्रों में हो सकता है।

गेंडा भूंग, ऑरिक्टस रिनोसरस

यह एक सर्वव्यापी कीट होने के कारण इसका प्रकोप सभी मौसमों में सर्वदा पाया जाता है और अवयस्क ताड़ों को इससे भारी नुकसान होता है। मई-जून के दौरान रोपित नारियल पौधों को इस अवधि के दौरान कीटों की घुस-पैठ से सुरक्षित रखना होगा। प्रायद्वीपीय भारत में ऑरिक्टस रिनोसेरस नूडिवायरस का प्राकृतिक प्रकोप 0.5 प्रतिशत से अधिक रिकार्ड किया गया है और इसलिए ऑरिक्टस रिनोसेरस नूडिवायरस - घातक नारियल गेंडा भूंग-गुआम(सीआरबी-जी) का प्रकोप हमारे देश में उतनी बड़ी समस्या नहीं रही जिसका प्रकोप दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्रों में बड़ी संख्या में पेड़ों की बरबादी का प्रमुख कारण बन गया था और अंतर्राष्ट्रीय समूह के लिए यह काफी चिंताजनक मामला बन गया था।

प्रबंधन

- रोगरोधी उपचार के रूप में पेड़ के सबसे ऊपर के तीन पर्ण कक्षों में या तो वानस्पतिक खली (नीम खली/चालमुगरा खली/पोंगम खली (250 ग्राम)) उतनी ही मात्रा में रेत मिश्रित करके भरें या 12 ग्राम नेफ्थालीन गोलियाँ रेत मिश्रित करके रखें।
- सुबह सुबह रोजाना ताड़ की छानबीन करें और प्रकोपित क्षेत्र से भूंगों को बीटल हुक से निकाल दें। यह प्रक्रिया अपनाने से कीटों की बढ़ती आबादी कम की जा सकती है।
- अवयस्क ताड़ों के कोंपल क्षेत्र को मछली पकड़ने की जाल से सुरक्षित रखें। इससे गेंडा भूंग को फँसाया जा सकता है।





भाँट

- और कीट का प्रकोप कम करने के लिए सबसे ऊपर के तीन पर्ण कक्षों में 3 ग्राम क्लोरएन्ट्रोनिलिप्रोल/फिप्रोनिल निहित छेदयुक्त सेशे रखें।
- खाद गड्ढों, जो कि भृंग के प्रजनन स्थान हैं, को प्रति घन मीटर 5×10^{11} की दर पर हरी मस्कार्डिन कवक, मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि (एक घन मीटर के एक गोबर खाद गड्ढे में अधिकतम चावल में प्रवर्धित 100 ग्राम मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि का प्रयोग) से उपचार करें ताकि गैंडा भृंग की बढ़ती सूँडियों पर जंतुमारी (एपिज़ोटिक) का प्रकोप करा सके। यह उपाय समूचे इलाके के किसान एकसाथ अपनाने से कीटप्रकोप प्रभावी रूप में कम किया जा सकता है और यह कीटों की संख्या कम करने में परिस्थिति अनुकूल तरीका बन जाता है।
- प्रजनन गड्ढों में भाँट (क्लिरोडेंड्रोन इनफोर्चुनेटम) नामक खरपतवार पौधा मिलाने से हार्मोन संबंधी विसंगतियों के कारण कीट की अवयस्क अवस्था में ही इनका विकास रुक जाता है।

लाल ताड़ घुन, स्किफरस फेर्निनस

गैंडा भृंग का प्रकोप कम होने के फलस्वरूप घातक कीट लाल ताड़ घुन के प्रकोप की संभावनाएं भी कम होती हैं, क्योंकि इस कीट को ताड़ पर जमा होने और अंडा देने के लिए ताड़ पर घाव मौजूद होना आवश्यक है। बौनी किस्म के और 5-15 वर्ष की आयु वाले ताड़ों पर अधिकतर इसका प्रकोप होता है। कीट प्रकोपित पेड़ों पर सभी आयु के कीट पाए जाते हैं। ताड़ का खतरनाक शत्रु होने के नाते इसके प्रबंधन हेतु शीघ्र कार्रवाई निर्धारित की जाती है।

प्रबंधन

- अंडा देने के लिए तैयार घुनों को बाग से दूर रखने के लिए ताड़ पर कोई घाव लगाने न देना अनिवार्य होता है और इसलिए पत्तों को काटते समय तने से कम से कम एक मीटर लंबाई में पर्णवृत्त को छोड़कर काटना चाहिए।

- कीट का प्रकोप कम करने के लिए फसल ज्यामिति और समुचित दूरी बनाए रखना अत्यंत अनिवार्य है।
- प्रकोपित ताड़ों पर प्रकोपित स्थानों में इमिडाक्लोप्रिड 0.002 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली.) या इंडोक्सोकार्ब 0.04 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 2.5 मि.ली.) का यथासमय प्रयोग करने से सूँडियाँ मर जाती हैं और ताड़ प्रकोप से मुक्त होकर उस पर नई कोंपल निकलने लगती है।
- प्रतिरक्षकों और परागणकर्ताओं को उत्तेजित करते हुए नारियल आधारित फसल प्रणाली के ज़रिए फसलों में विविधता (पारिस्थितिकीय जैवइंजीनियरी) रखने से ताड़ से जुड़े वाष्पशील संकेत कम होगा और कीटों की संख्या कम करने में मदद मिलेगी। एकल फसल प्रणाली की अपेक्षा बहुफसल प्रणाली अपनाने से कीट का प्रकोप कम होता है।

स्लग इल्ली, डार्ना नैरेरिया

आँध्र प्रदेश के पूर्व गोदावरी जिले में और कर्नाटक के तुम्कूर में स्लग इल्ली, डार्ना नैरेरिया का प्रकोप हो सकता है क्यों कि इस दौरान नदी के तटों में और खारे पानी वाले इलाकों में लगाए गए नारियल पेड़ों पर इस कीट की आबादी बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण पैदा होता है। कई सैकड़ों इल्लियाँ पेड़ पर एकत्र हो जाएंगी और ताड़ की पत्तियों की निचली सतह को अपना आहार बना लेगी जिससे चमकदार चित्तियाँ उत्पन्न होती हैं और इसके साथ साथ धूसर पर्ण चित्ती रोग का प्रकोप होने से सारी पत्तियाँ जली हुई सी प्रतीत होती है। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पत्तियाँ सूखकर गिर जाती हैं और मात्र मध्यशिरा रह जाता है। उच्च तापमान और ठंडा मौसम इसका प्रकोप बढ़ने के कारण हो सकते हैं।

प्रबंधन

- कीट प्रकोप के प्रारंभ में ही प्रकोपित पत्तों का तुरंत ही पूरी तरह से नाश करना चाहिए ताकि कीटों की संख्या और बढ़ने से रोका जा सके। ध्यान रहे कि इस कीट में ज़हरीले स्कोली मौजूद होने के कारण इनसान की त्वचा के साथ संपर्क में आने पर अत्यंत खुजली उत्पन्न होती है।
- यूलोफिड लार्वा परजीवी पेंडियोबियस इम्ब्राइस से जैविक नियंत्रण करने के साथ साथ प्रकाश जाल की स्थापना और प्रति लीटर 5 ग्राम की दर पर बैसिलस थुरिंजिएनसिस का छिड़काव प्रभावी पाया गया है।

● फसल अनुरक्षण

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी, एल्यूरोडिक्स रुगियोपेर्कुलेटस

इस अवधि के दौरान आक्रामक कीट रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी (एल्यूरोडिक्स रुगियोपेर्कुलेटस) का प्रकोप नए क्षेत्रों में और पहले प्रकोप रिपोर्ट किए गए क्षेत्रों में फिर से होने की संभावना है। ताड़ के पत्तों की निचली सतह पर सफेद मक्खी की कॉलनियों की मौजूदगी और पत्तों की ऊपरी सतह पर काले रंग के कज्जली फफूँद का होना इस कीट के प्रकोप के प्रमुख लक्षण हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पुराने पत्ते जल्दी पीला पड़कर सूख जाते हैं। सफेद मक्खी का प्रकोप पत्तों, पर्णवृत्तों और फलों पर भी होता है और केला, बर्ड ऑफ पैराडाइस, हेलिकोनिया प्रजातियाँ सहित पौधों की एक लंबी श्रेणी पर भी इसका प्रकोप रिपोर्ट किया गया है।

प्रबंधन

- अवयस्क ताड़ों में, जेट की गति में पानी छिड़कने से सफेद मक्खी को निकाला जा सकता है और कीट के आहार लेने तथा प्रजनन की क्षमता कम हो जाती है।
- कीटनाशी का प्रयोग कर्तई नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे कीट का पुनःप्रकोप हो सकता है और कुदरती एफिलिनिड परजीवी एनकार्सिया गुआडेलूपा का संपूर्ण विनाश होता है।
- पीले चिपचिपे फँदे लगाने से और एनकार्सिया गुआडेलूपा का प्रयोग करके जैविक नियंत्रण विधि अपनाने से कीट का प्रकोप 70 प्रतिशत तक कम और परजीविता 80 प्रतिशत तक बढ़ायी जा सकती है।
- बाग में कज्जली फफूँद भक्षी भूंग लियोक्रिनस निलगिरियानस के प्राकृतिक आवास का संरक्षण करने से ताड़ के पत्तों पर जमे सारे कज्जली फफूँदों को खा जाता है और पत्ते साफ हो जाने से ताड़ की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता फिर से बढ़ जाती है।

समय पर कीट के प्रकोप का पता लगाने के लिए ताड़ का बारीकी से अनुवीक्षण और व्यवस्थित छानबीन करना अनिवार्य होता है ताकि कीट पर नियंत्रण पाने के लिए सही विधियाँ अपनायी जा सके और दुगुनी आय अर्जित करने के लिए फसल का नुकसान कम किया जा सके।

पत्ता सड़न रोग,

कोलेटोट्रिकम ग्लोइयोस्पोरिओविड्स, एक्सरोहिलम रोस्ट्रेटम

यह जड़मुझा रोगग्रस्त ताड़ों पर अक्सर पाया जाने वाला रोग है जो सबसे बाहरी कॉपल और निकटस्थ पत्तों पर ऊतकक्षय के रूप में प्रकट होता है। मानसून के बाद दिसंबर महीने के दौरान मुख्यतः यह रोग पाया जाता है। रोगग्रस्त पत्तों का ऊतकक्षय होता है और यह ताड़ से बिना अलग हुए वर्ही पर टिका रहता है। प्रारंभ में यह रोग छोटे छोटे घाव के रूप में प्रकट होता है जो बाद में बड़ा होकर एकसाथ मिल जाता है और सड़न अत्यधिक व्यापक होकर ताड़ की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता पर बुरा प्रभाव डालता है। यह रोग दक्षिण केरल के जड़मुझा रोगग्रस्त क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है।

प्रबंधन

- आवश्यकता आधारित छँटाई और प्रकोपित कॉपल तथा निकटस्थ सबसे बाहरी पत्तों को नष्ट करना होगा।
- प्रकोपित कॉपल वाले क्षेत्र पर 300 मि.ली. पानी में हेक्साकोनाज्ञोल 2 मि.ली. का प्रयोग करें।

तना स्ववण, थिलावियोम्सिस (सेराटोसिस्टिस) पैराडोक्सा

यह केरल के अम्लीय मिट्टियों में अधिकांशतः सीमित रोग है और इस अवधि के दौरान इसका प्रकोप अधिक होता है। तने पर लाल-भूरे रंग के चिपचिपे तरल पदार्थ रिसने लगता है जो सूख जाने पर काले रंग का हो जाता है। प्रारंभिक स्थिति में लंबवत् दरार के साथ रिसने वाले छोटे धब्बे के रूप में यह प्रकट होता है, जो बाद में एकसाथ मिलकर बहुत बड़ा घाव बन जाता है। इसके निचले भाग के ऊतक बेरंग हो जाते हैं और बाद में ये सड़ जाते हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में पत्तों का बाहरी छल्ला पीला हो जाता है और यह सूखकर समय से पूर्व गिर जाता है जिससे ताड़ के संपूर्ण स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। डायोकैलेंड्रा और क्साइलिबोरस जैसे स्कोलिटिड भूंगों के प्रकोप से तना और भी कमज़ोर हो जाता है।

प्रबंधन

- कचरा एवं ताड़ के अन्य अपशिष्ट तने के निकट नहीं जलाएं ताकि तना/जड़ पर घाव लगने से बचाया जा सके।
- पर्याप्त सिंचाई और मृदा एवं जल संरक्षण उपाय अपनाना अनुशंसित है।



- ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम से संपुष्ट 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग और मृदा जाँच आधारित पोषण प्रबंधन तरीका अपनाना चाहिए।
- तने के रिसने वाले धावों पर ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम टैल्क के पेस्ट का प्रयोग भी तना स्ववरण रोग का फैलाव रोकने के लिए प्रभावी पाया गया है।

मूल तना विगलन रोग (गैनोडेर्मा वर्ग)

यह एक विनाशकारी रोग है जो नारियल की खेती किए जाने वाले सभी इलाकों में पाया जाता है और उच्च पौधे वाली मिट्टी में और नम दबाव परिस्थिति में अत्यधिक गंभीर रूप में प्रकट होता है। रोग प्रकोप की प्रारंभिक स्थिति में रोगाणु जड़ तंत्र पर वार करता है जो प्रत्यक्ष रूप से प्रकट नहीं होता है। तमिलनाडु के तंजावुर, आँश्र प्रदेश में पूर्वी गोदावरी ज़िले के कुछ इलाकों और कर्नाटक के अरसिकेरे में यह गंभीर रूप में पाया जाता है। पत्तों का बाहरी छल्ला सबसे पहले पीले रंगे के और फिर धीरे धीरे भूरे रंगे के हो जाते हैं और बाद में तने से जुड़े भाग से नीचे की ओर झुक जाता है जो नीचे की तरफ लंबवत् रूप में लटककर तने के शीर्ष पर लहँगे के समान प्रकट होता है।

समय के साथ रोग का प्रकोप बढ़ जाने से तने का शीर्ष शंकु आकार का हो जाता है और धड़ क्षेत्र पर रिसाव के लक्षण प्रकट हो जाते हैं। तने के मूलभाग पर लाल भूरे रंग का घाव प्रकट होता है, जिससे गाढ़े चिपचिपे पदार्थ रिसने लगता है। ये भूरे धब्बे ज़मीनी स्तर से एक मीटर की ऊँचाई तक फैल जाते हैं और कभी कभी तने से छाल निकलते हुए भी पाया गया है। कभी-कभार प्रकोपित तने पर रोगाणु के फलन काय(बेसिडियोकार्प) का विकास होता है।

प्रबंधन

- तने के निकट कचरा और ताड़ का अपशिष्ट न जलाएं ताकि तना/जड़ को घाव लगने से बचाया जा सके।
- मृत ताड़ और गंभीर रूप से रोगप्रकोपित ताड़ों को काटकर निकालें तथा रोगग्रस्त ताड़ों के धड़ और जड़ भागों का नाश करें ताकि रोग संरोपों को हटाया जा सके।
- रोगप्रकोपित ताड़ों के चारों ओर (तने के निचले भाग से 1.2 मीटर की दूरी में) गड्ढे खोदकर (60 सें.मी. गहरा और

(तंपन सी., सुब्रमणियन पी, भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ और जोसफ राजकुमार, के.रो.फ.अनु.सं. प्रादेशिक केन्द्र, कायंकुलम द्वारा तैयार किया गया है)

डा. बी.हनुमंते गौडा ने मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड का कार्यभार ग्रहण किया

डा. बी.हनुमंते गौडा ने नारियल विकास बोर्ड के मुख्य नारियल विकास अधिकारी का कार्यभार ग्रहण किया। वे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-कृषि विज्ञान केंद्र (भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान), हिरेहल्ली, तुम्कुर, कर्नाटक में वैज्ञानिक (पौध संरक्षण) के पद पर कार्यरत रहे हैं। डा.हनुमंते गौडा ने कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बैंगलूरु से पादप रोगविज्ञान में डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है और उन्हें नारियल किसानों को प्रौद्योगिकी अंतरण में काफी अनुभव प्राप्त है। उनके 25 से अधिक शोध पत्र, तीन पुस्तकें और 29 विस्तार विज्ञप्ति पत्रक/पुस्तिकाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। वे कृषक उत्पादक संगठनों के गठन और जलवायु परिवर्तन पर परियोजनाओं के कार्यान्वयन में सक्रिय रूप से शामिल थे। वे विभिन्न अन्य पुरस्कारों और सम्मानों के साथ साथ सर्वोत्तम विस्तार वैज्ञानिक पुरस्कार से भी सम्मानित हैं।



- 30 सें.मी. चौड़ा) आसपास के स्वस्थ ताड़ों से अलग रखें।
 - प्रति वर्ष प्रति ताड़ छह महीने के अंतराल में ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम(सीपीटीडी 28) टैल्क दवा(50 ग्राम) से संपुष्ट नीम खली(5 कि.ग्रा.) का प्रयोग करने से रोग की तीव्रता कम हो जाती है।
 - 2 प्रतिशत की दर पर हेक्साकोनाजोल जड़ों द्वारा देना (प्रति ताड़ 100 मि.ली. घोल) और 0.2 प्रतिशत हेक्साकोनाजोल या 1 प्रतिशत बोर्ड मिश्रण के 40 लीटर से नारियल थालों में मिट्टी को शराबोर करना अनुशंसित है।
- इस प्रकार, लगातार अनुवीक्षण और रोगरोधी उपचार अपनाए जाने से कीटों और रोगों का प्रकोप कम होता है और समुचित समय पर उचित स्वास्थ्य प्रबंधन रणनीतियाँ अपनाना भी आवश्यक होता है। ■

माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने विश्व नारियल दिवस के अवसर पर गुजरात के जूनागढ़ में नाविबो के राज्य केंद्र का लोकार्पण किया



माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर दीप प्रज्ञवलित करके विश्व नारियल दिवस का उद्घाटन और राज्य केंद्र, जूनागढ़ का लोकार्पण करते हुए

भारत में नारियल की खेती, प्रसंस्करण, विपणन और निर्यात में प्रगति हो रही है: श्री तोमर राष्ट्रीय पुरस्कार और निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कार घोषित

श्री नरेंद्र सिंह तोमर, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने 2 सितंबर 2022 को गुजरात के जूनागढ़ में नारियल विकास बोर्ड के छठे राज्य केंद्र का लोकार्पण किया। श्री तोमर ने 24वें विश्व नारियल दिवस का उद्घाटन किया और नारियल विकास बोर्ड के राष्ट्रीय पुरस्कार और निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कारों की घोषण की।

अपने भाषण में, श्री तोमर ने कहा कि नारियल खेती के साथ साथ देश में नारियल उत्पादों का प्रसंस्करण और विपणन भी बढ़ रही है। भारत नारियल उत्पादों के निर्यात में भी अग्रणी देश बन गया है। नारियल किसान नारियल विकास बोर्ड के ज़रिए सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है और तट्ट्वारा देश की अर्थव्यवस्था में योगदान देने में भी सहायता मिली है।

श्री तोमर ने नारियल विकास बोर्ड के राष्ट्रीय पुरस्कार और निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और विश्व नारियल दिवस के सिलसिले में कोची(केरल) में एकत्रित किसानों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिए संबोधित किया।

श्री तोमर ने कहा कि पूजा-पाठ के लिए और तेल निकालने के लिए नारियल का उपयोग होता आ रहा है और अब नारियल से विविध प्रकार के उत्पाद बनाए जाते हैं। देश में नारियल उत्पादों का बाज़ार बढ़ रहा है और नारियल के निर्यात की दृष्टि से भी हमारा देश आगे बढ़ रहा है। केंद्रीय सरकार राज्य सरकारों के साथ मिलकर नारियल की खेती और प्रसंस्करण बढ़ाने पर कार्य कर रही है। नारियल विकास बोर्ड के ज़रिए विविध योजनाएं ध्यानपूर्वक कार्यान्वित की जा रही हैं। उन्होंने यह भी जोड़ा कि किसानों को गुजरात में नए खुले राज्य केंद्र से कई फायदे मिलेंगे जिससे नारियल



माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर रिबन काटकर राज्य केंद्र, जूनागढ़ के कार्यालय भवन का उद्घाटन करते हुए

के अधीन खेतीगत क्षेत्र बढ़ेगा और किसानों की आय में भी वृद्धि होगी। श्री तोमर ने मुख्य मंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल के नेतृत्व में कार्यरत गुजरात सरकार को कृषि के क्षेत्र में कार्य करने के लिए बधाई दी। इस क्षेत्र की जलवायु नारियल की खेती के लिए अनुकूल है और कृषि विकास से संबंधित योजनाओं से किसान काफी खुश हैं, उन्होंने कहा।

श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने आगे जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़ में किसानों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि यदि गाँव विकसित हो तो देश का विकास होगा और यदि किसानों के घर समृद्ध हो तो हमारा देश भी समृद्ध होगा। उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी यह सपना पूरा करने के लिए सदैव प्रयासरत है।

श्री तोमर ने कहा कि यह हमारे प्रधानमंत्री जी की इच्छा है कि देश में नारियल की खेती बढ़नी चाहिए। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना आम किसानों को सुरक्षा प्रदान करती है, वैसे ही वे, सदैव माँग करते रहते हैं कि देश में प्रसंस्करण इकाइयों की संख्या में बढ़ोत्तरी करें और उत्पादों का निर्यात बढ़ाएं। नारियल

किसानों के लिए भी बीमा सुरक्षा उपलब्ध है, जिसमें प्रीमियम का हिस्सा केंद्र तथा राज्य सरकारों और किसानों द्वारा क्रमशः 50, 25 और 25 प्रतिशत के अनुपात में वहन किया जाता है। उन्होंने किसानों को आवान किया कि वे इसका लाभ उठाएं।

श्री तोमर ने आगे कहा कि देश में ऐसे लाखों किसान हैं जिनकी आय दुगुनी से दस गुनी तक बढ़ गयी है। इस संबंध में उन्होंने उदाहरण के तौर पर कश्मीर के केसर किसानों की ओर इशारा करते हुए कहा कि केसर पार्क के विकास के कारण प्रति किलोग्राम केसर का मूल्य एक लाख से दो लाख तक बढ़ गया है। आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने ऐसे 75000 किसानों को प्रलेखित किया है जिसमें ये किसानों ने बताया है कि उनकी आय में इतनी वृद्धि कैसे हुई है।

श्री तोमर ने कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) के तहत गुजरात में 61.43 लाख किसानों को 11,395.38 करोड़ रुपए प्रदान किए हैं, जबकि देश भर के 11.5 करोड़ किसानों के बैंक खाते में 2 लाख करोड़ रुपए वितरित किए हैं। न्यूनतम समर्थन मूल्य में 1.5 गुनी वृद्धि की गई है और केंद्रीय सरकार ने दलहन और तिलहन फसलों का प्राप्ति भी शुरू किया है। खेती के क्षेत्र में निवेश का किवाड़ खोलते हुए, कृषि अवसंरचना निधि की शुरुआत एक लाख करोड़ रुपए के प्रावधान से की गयी है जबकि कृषि और संबंधित क्षेत्रों के लिए अलग से 50,000 करोड़ रुपए आवंटित किए गए। लघु किसानों की उन्नति के लिए 10000 नए कृषक उत्पादक संगठनों की स्थापना हेतु 6850 करोड़ रुपए का प्रावधान रखा गया है जिसमें से 3000 कृषक उत्पादक संगठनों का गठन हो चुका है।

श्री राघवजीभाई पटेल, कृषि, पशुपालन और गौ प्रजनन मंत्री, गुजरात सरकार, श्री राजेशभाई नारनभाई चूडासमा, सांसद, जूनागढ़, विधायक, जूनागढ़, डा. प्रभात कुमार, बागवानी आयुक्त और अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर मौजूद रहे। नारियल विकास बोर्ड ने इस कार्यक्रम का आयोजन जूनागढ़ प्रशासन के सहयोग से किया था। डा. विजयलक्ष्मी नरेंद्रला भा.प्र.से., संयुक्त सचिव और अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड ने सभा का स्वागत किया।

किसान सम्मेलन में राज्य के विविध भागों से लगभग 1000 किसानों ने भाग लिया।

श्री नरेंद्र सिंह तोमर, माननीय केंद्रीय कृषि मंत्री के करकमलों द्वारा 24वें विश्व नारियल दिवस समारोह का उद्घाटन संपन्न

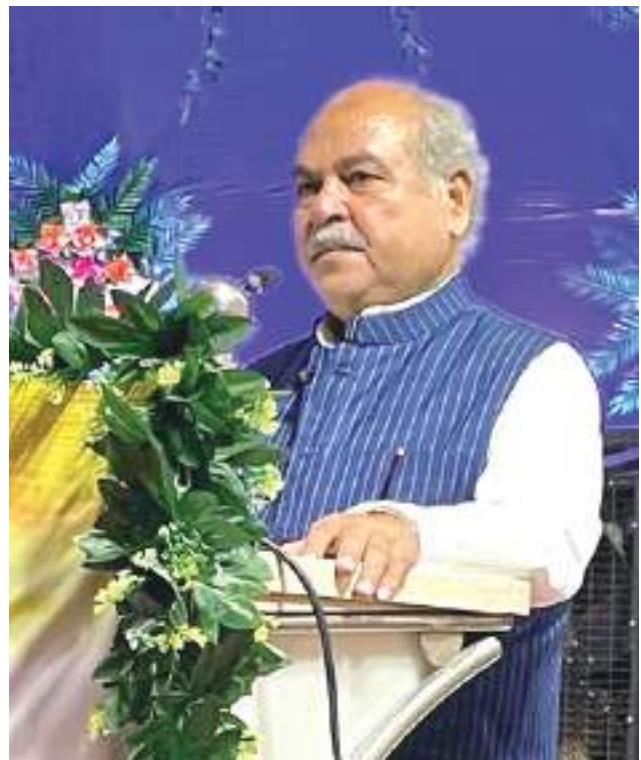
श्री नरेंद्र सिंह तोमर, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने वर्चुअल तरीके से 24वें विश्व नारियल दिवस समारोह का उद्घाटन किया और राष्ट्रीय पुरस्कारों एवं निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कारों की घोषणा की। नारियल विकास बोर्ड ने इस वर्ष का विश्व नारियल दिवस समारोह केरल के कोची में 2 सितंबर 2022 को आयोजित किया।

नारियल किसानों को संबोधित करते हुए, मंत्री ने देश में कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सरकार की कटिबद्धता पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि विश्व के अग्रणी नारियल उत्पादक देशों में भारत भी है और नारियल की उत्पादकता की दृष्टि से भारत विश्व के प्रमुख नारियल उत्पादक देशों के बीच अग्रणी है। मंत्री महोदय ने प्रधानमंत्री की तरफ से बोर्ड के सारे पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी।

डा. एन.विजयलक्ष्मी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड ने सभा का स्वागत किया और देश में नारियल की खेती एवं प्रसंस्करण की वर्तमान स्थिति के बारे में बताया। डा.जेलिफना सी.एलोव, कार्यकारी निदेशक, इंटरनेशनल कोकनट कम्यूनिटी, इंडोनेशिया ने इस अवसर पर भाषण दिया और इंटरनेशनल कोकनट कम्यूनिटी की गतिविधियों एवं विभिन्न नारियल उत्पादों के स्वास्थ्य पहलुओं के बारे में प्रस्तुतीकरण किया।

श्री राजेन्द्र कुमार कटारिया भा.प्र.से., प्रधान सचिव, बागवानी और रेशमपालन विभाग, कर्नाटक सरकार ने भी इस अवसर पर किसानों को संबोधित किया।

श्री के.बाबू, माननीय विधायक, तृप्पूणित्तुरा ने इस अवसर पर भाषण देते हुए केरल में नारियल के महत्व के बारे में बात की और किसानों की आमदनी बढ़ाने में नारियल के मूल्यवर्धन की नई संभाव्यताओं पर ज़ोर दिया। श्री एंटणी आशान परंबिल, अध्यक्ष, मरटु नगरपालिका, श्री सिबी सेवियर, काउंसिलर, मरटु नगरपालिका, श्री नारायणन मास्टर, उपाध्यक्ष, नाविबो, श्री रघुनाथ, बोर्ड सदस्य, दूसरे बोर्ड सदस्य, अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिगण, सारे



माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर विश्व नारियल दिवस के अवसर पर उद्घाटन भाषण देते हुए

पुरस्कार विजेताएं, वैज्ञानिक एवं देश भर के 500 प्रगामी किसान कार्यक्रम में उपस्थित थे। श्री राजीव भूषण प्रसाद, मुख्य नारियल विकास अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापित की। इसके सिलसिले में एक प्रदर्शनी भी लगायी थी जिसमें विभिन्न मूल्यवर्धित नारियल उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। नारियल विकास बोर्ड, इंटरनेशनल कोकनट कम्यूनिटी, केरल कृषि विश्वविद्यालय और तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, उद्यमियों एवं गुणवत्ता प्रमाणन एजेंसियों ने अपने उत्पादों एवं सेवाओं का प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम के उपरांत अच्छी कृषि पद्धतियाँ विषयक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला संपन्न हुई। भारत सरकार और इंटरनेशनल कोकनट कम्यूनिटी ने संयुक्त रूप से 2-4 सितंबर 2022 तक कार्यशाला का आयोजन किया। अंतर्राष्ट्रीय

कार्यशाला में सात प्रमुख नारियल उत्पादक देशों के विशेषज्ञों ने भाग लिया।

इस अवसर पर डा. एन.विजयलक्ष्मी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, डा.जेल्फिना सी.एलोव, कार्यकारी निदेशक, इंटरनेशनल कोकनट कम्पनीटी, श्री राजेन्द्र कुमार कटारिया भा.प्र.से., प्रधान सचिव, बागवानी और रेशमपालन विभाग, कर्नाटक सरकार और श्री के.बाबू, माननीय विधायक तृष्णानित्तुरा ने बोर्ड के राष्ट्रीय पुरस्कार और निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कार वितरित किए।

श्रीमती वाई.पद्मावती, विजयनगरम, आँध्र प्रदेश ने देश के सर्वोत्तम नारियल किसान का पुरस्कार ग्रहण किया। नारियल किसानों की बड़ी श्रेणी के अंतर्गत दक्षिण पश्चिम क्षेत्र के सर्वोत्तम नारियल किसान पुरस्कार श्री के.टी.फासिस, कोषिक्कोट, केरल ने और पूर्व एवं उत्तर पूर्वी क्षेत्र के सर्वोत्तम नारियल किसान पुरस्कार श्री किकातो किनिमी, दीमापुर, नागालैंड ने ग्रहण किया। लघु श्रेणी में दक्षिण पश्चिम क्षेत्र के सर्वोत्तम नारियल किसान पुरस्कार श्रीमती कामाच्ची चेल्लम्माल, दक्षिण अंडमान, अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह ने और पूर्व एवं उत्तर पूर्वी क्षेत्र के सर्वोत्तम नारियल किसान पुरस्कार श्री पंकज दास, कामरुप, असम ने प्राप्त किया।



श्रीमती दीपा अनिल लाल, एरणाकुलम, केरल ने खाद्य उत्पाद/खाद्योत्तर उत्पाद श्रेणी के अंतर्गत सर्वोत्तम नारियल प्रसंस्करणकर्ता पुरस्कार प्राप्त किया और श्री डी.एन.निरंजन कनि, सेलम, तमिलनाडु ने गैर परंपरागत उत्पादों के अंतर्गत सर्वोत्तम नारियल प्रसंस्करणकर्ता पुरस्कार प्राप्त किया।

डा.एम.आर.मणिकंठन, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड, केरल ने नारियल उत्पादों पर निष्कर्ष श्रेणी के अंतर्गत सर्वोत्तम नारियल अनुसंधान कार्यकर्ता पुरस्कार ग्रहण किया और श्री चाल्स विजय वर्गीस, एरणाकुलम, केरल ने मशीनरी/उपस्कर का विकास श्रेणी के अंतर्गत सर्वोत्तम नारियल अनुसंधान कार्यकर्ता पुरस्कार ग्रहण किया।

श्री दयालु के.डी., एरणाकुलम और श्री रतीन्द्र नाथ मल्लिक, कोलकाता ने बड़ा पैमाना श्रेणी में सर्वोत्तम मास्टर कारीगर पुरस्कार ग्रहण किया। श्रीमती माला कुमारी वर्मा, मुंगेर, बिहार ने छोटा पैमाना श्रेणी में सर्वोत्तम मास्टर कारीगर पुरस्कार स्वीकार किया और श्री अक्षय परमानंद पिलांकर, रत्नागिरी, महाराष्ट्र तथा श्री सगीर अहमद, जोरहाट, असम ने उसी श्रेणी में सांत्वना पुरस्कार ग्रहण किया।

डा.शिवकुमार टी., केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम, केरल ने नारियल विकास में सर्वोत्तम नारियल विस्तार कार्यकर्ता पुरस्कार स्वीकार किया। सर्वोत्तम गैर सरकारी संगठन/पंजीकृत सहकारी समिति का पुरस्कार सर्वश्री अंजराकंटी फार्मस सर्वोस को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड, कण्णूर, केरल ने ग्रहण किया।

नारियल विकास बोर्ड ने नारियल ताड़ारोहकों को भी सम्मनित किया और श्री वी.आई.कुरियन, एरणाकुलम, केरल ने परंपरागत तरीके से चढ़ने वाला सर्वोत्तम नारियल ताड़ारोहक-पुरुष श्रेणी में पुरस्कार प्राप्त किया और श्री परेश बैश्य, नलबारी, असम ने उसी श्रेणी में सांत्वना पुरस्कार ग्रहण किया। बोर्ड के एफओसीटी कार्यक्रम में प्रशिक्षित ताड़ारोहक-पुरुष श्रेणी में सर्वोत्तम ताड़ारोहक



का पुरस्कार श्री गिदुगु शेषगिरी राव, पूर्व गोदावरी, आंध्र प्रदेश ने ग्रहण किया और बोर्ड के एफओसीटी कार्यक्रम में प्रशिक्षित ताड़ारोहक-महिला श्रेणी में सर्वोत्तम ताड़ारोहक का पुरस्कार श्रीमती सुनी ली, तिरुवनंतपुरम, केरल ने स्वीकार किया। श्री दिलीप कुमार पी., कासरगोड, केरल ने सर्वोत्तम नीरा तकनीशियन-अखिल भारतीय पुरस्कार प्राप्त किया। सर्वश्री मंगलम कोकनट प्रोड्यूसर्स फेडरेशन ने सर्वोत्तम नारियल उत्पादक फेडरेशन का पुरस्कार ग्रहण किया।

नाविबो प्रबीउ फार्म, पालघर, महाराष्ट्र ने स्थापना के प्रारंभिक चरण में नाविबो का सर्वोत्तम प्रबीउ फार्म पुरस्कार ग्रहण किया और उत्पादन चारण में प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ा, आंध्र प्रदेश ने नाविबो का सर्वोत्तम प्रबीउ फार्म पुरस्कार स्वीकार किया।

नारियल उत्पादों के निर्यात में उत्कृष्टता की पहचान करते हुए निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कार भी प्रदान किया गया। सर्वोत्तम विनिर्माता निर्यातक पुरस्कार बड़ी श्रेणी के अंतर्गत

सर्वश्री युनाइटेड कार्बन सोल्यूशन्स प्राइवेट लिमिटेड, तमिलनाडु, मध्यम श्रेणी के अंतर्गत सर्वश्री जैकोबी कार्बन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, तमिलनाडु और लघु श्रेणी के अंतर्गत सर्वश्री राज कार्बन्स, तमिलनाडु ने पुरस्कार ग्रहण किया।

सर्वश्री फेयर एक्स्पोट्र्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, महाराष्ट्र ने सर्वोत्तम व्यापारी निर्यातक पुरस्कार ग्रहण किया और कोचिन सर्फेक्टन्स प्राइवेट लिमिटेड, कोची, केरल की श्रीमती साजिता बषीर ने सर्वोत्तम महिला विनिर्माता पुरस्कार ग्रहण किया। सर्वश्री गोल्डन ग्लोब एजेंसीस, कोची, केरल की श्रीमती रोना वर्गास ने सर्वोत्तम महिला व्यापारी निर्यातक पुरस्कार स्वीकार किया। सर्वश्री लाला एगो ट्रॉफिक प्राइवेट लिमिटेड, कोची, केरल ने सर्वोत्तम नवाचारी निर्यातक पुरस्कार ग्रहण किया और सर्वश्री बटकरा कोकनट फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, कोषिक्कोट, केरल ने सर्वोत्तम कृषक उत्पादक संगठन पुरस्कार स्वीकार किया।



राष्ट्रीय पुरस्कार 2016-18

1. सर्वोत्तम नारियल किसान - राष्ट्रीय स्तर श्रीमती वाई. पद्मावती, बालाजी नगर, विजयनगरम, आंध्र प्रदेश

श्रीमती वाई. पद्मावती (62) आंध्र प्रदेश के विजयनगरम जिले की प्रगतिशील किसान है। उनके पास 14.24 एकड़ भूमि है, जहाँ 900 पश्चिम तटीय लंबी किस्म के नारियल पेड़ वैज्ञानिक तरीके से लगाए गए हैं। उन्होंने मिट्टी और नमी जैसे मूल संसाधनों का संरक्षण करके एकीकृत फसल प्रबंधन प्रणाली अपनायी है। वे ड्रिप सिंचाई विधि से प्रभावी जल प्रबंधन और उर्वरक अनुप्रयोग के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अपना रही हैं। गत पांच वर्षों से लेकर मात्र जैविक खादों का प्रयोग करके बाग का अनुरक्षण किया जा रहा है।

बाग में 2800 कोको के पौधों की अंतर खेती की गयी है और कोको एवं नारियल के पत्तों के अपशिष्टों का

उपयोग करके कंपोस्ट तैयार किया जाता है। कृषि आदान सामग्रियों की लागत कम करने और कम खर्च में खेती करने हेतु मिट्टी की स्थिति सुधारने और कीटों तथा रोगों के खिलाफ रोगप्रतिरोधिता बढ़ाने के लिए वे अपशिष्ट अपघटक घोल और जीवामृतम का उपयोग कर रही हैं। उनको प्रति वर्ष प्रति पेड़ लगभग 175 नारियल और प्रति वर्ष लगभग चार टन कोको मिल रहे हैं। फार्म से प्राप्त वार्षिक शुद्ध आय 7,45,000 रुपए है। कोको बीज का प्रसंस्करण और निष्कर्षण बाग में ही किया जा रहा है। वे नियमित रूप से कीटों और रोगों का वैज्ञानिक प्रबंधन भी कर रही हैं।



सर्वोत्तम नारियल किसान - दक्षिण पश्चिम क्षेत्र (बड़ा) श्री के.टी.फ्रांसिस, कैताक्कुलत्त हाउस, कोषिक्कोट जिला, केरल

श्री के.टी.फ्रांसिस (60) केरल के कोषिक्कोट जिले का प्रगतिशील किसान है। वे एक कृषक परिवार का सदस्य है और उनके पूर्वज कई साल पहले मध्य तिरुवितांकूर से यहाँ आकर बसे थे। श्री के.टी.फ्रांसिस सेंट मेरीस हायर सेकेंडरी स्कूल, मरुतोकरा, कोषिक्कोट से फिसिकल एजुकेशन अध्यापक के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद पूर्णकालिक किसान बन गए हैं।

श्री के.टी.फ्रांसिस ने अपने बागान में विभिन्न प्रकार की बागानी फसलों को शामिल करते हुए नारियल आधारित बहुमंजिल फसल प्रणाली अपनायी है। अपने तीन एकड़ के बाग में उन्होंने विभिन्न किस्मों के 200 नारियल पेड़ लगाए हैं। उनके बाग की विभिन्न अंतर फसलें हैं सुपारी, मसाले, कोको, कॉफी, कंद फसलें, औषधीय वनस्पतियाँ, फल पौधे, वन मसाले और चारा घास। वे उच्च भूमि धान की खेती भी कर रहे हैं। पशुपालन के अंतर्गत बकरी पालन, मुर्गा पालन, मत्स्यपालन आदि शामिल हैं। उनका बागान प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग का एक उत्कृष्ट दृष्टांत है जो मिश्रित



खेती के ज़रिए मिट्टी की उर्वरता संपुष्ट करने और खेती प्रणाली टिकाऊ रखने में सहायक है और अंतर फसलों तथा मिश्रित फसलों की खेती से उनकी आय में बृद्धि भी होती है।

श्री के.टी.फ्रांसिस ने अपने बाग में जैविक खेती को अपनाया है और नारियल पेड़ों की औसत पैदावार प्रति वर्ष प्रति पेड़ 200 फल है। वार्षिक उत्पादन के अधिकांश हिस्से की बिक्री बीजफल और पौधे के रूप में होती है, छोटे से हिस्से का उपयोग घरेलू प्रयोजनों के लिए किया जाता है और शेष फलों की बिक्री गोल खोपरा तथा नारियल तेल के रूप में की जाती है।

● राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता

उनकी एकीकृत खेती प्रणाली से सालाना उन्हें 14 से 15 लाख रुपए की शुद्ध आय प्राप्त होती है और आय का प्रमुख स्रोत नारियल है। एक पूर्णकालिक किसान होने के नाते पारिवारिक श्रम का काफी हद तक उपयोग करने में वे सफल हुए हैं। उनके बागान में नारियल और सहफसलों पर कीटों एवं रोगों का प्रकोप बहुत कम है। श्री फ्रांसिस की विजयगाथा स्पष्ट रूप से यह सूचित करता है कि यदि हम प्रभावी और नवीन तरीके से संसाधनों का उपयोग करें और फसल सघनता एवं उद्यम विविधीकरण में वैज्ञानिक तरीका अपनाएं तो खेती लाभकर हो सकती है।

श्री फ्रांसिस को केरल सरकार के केरा केसरी पुरस्कार (2017-18), सुपारी एवं मसाला विकास निदेशालय द्वारा स्थापित कोषिककोट जिले का सर्वोत्तम मसाला किसान पुरस्कार 2016, सरोजिनी दामोदरन फाउंडेशन, बैंगलूर का सांत्वना पुरस्कार 2017, केरल सरकार के आत्मा 2016 का सर्वोत्तम मिश्रित किसान और सरोजिनी दामोदरन फाउंडेशन, बैंगलूर के कोषिककोट जिले का सर्वोत्तम जैविक खेती किसान 2018 आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

सर्वोत्तम नारियल किसान- दक्षिण पश्चिम क्षेत्र (लघु) श्रीमती कामाच्ची चेल्लम्माल, बीडनबाद, अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह

दक्षिण अंडमान की श्रीमती कामाच्ची चेल्लम्माल (60) बारानी परिस्थितियों में 2 हेक्टर नारियल बागान में अंडमान साधारण लंबी किस्म के 465 पेड़ों का अनुरक्षण करती हैं। उनके अनुसार नारियल आधारित उच्च सघन बहुफसल प्रणाली और एकीकृत खेती को अपनाना नारियल के कम बाजार भाव के कारण होनेवाली कठिनाइयों को जीतने और उच्चतर आय प्राप्त करने का प्रभावी तरीका है। वे अपने बाग में पेड़ों के बीच उपलब्ध जगह में विभिन्न प्रकार की अंतर/मिश्रित फसलों की खेती कर रही हैं और साथ साथ पशुपालन, मत्स्यपालन एवं मधुमक्खी पालन भी टिकाऊ एवं लाभकर तरीके से अपना रही हैं।

उनके बाग के नारियल पेड़ 40-45 वर्ष की आयु के हैं और पेड़ों को 6.5 मीटर x 6.5 मीटर की दूरी पर लगाया गया है। अनन्त्रास, केला, जिमीकंद, मूँगफली, मिर्च, शकरकंद, कसावा, सब्जियाँ आदि जैसी उपयुक्त अंतर फसलों के विवेकपूर्ण चयन द्वारा पेड़ों के बीच उपलब्ध जगह का प्रभावी ढंग से उपयोग किया गया है। वे विभिन्न प्रकार की जैव खाद जैसे कि कम्पोस्ट और घूरे की खाद का प्रयोग करती हैं। लौंग और जायफल को चार पेड़ों के बीच में मिश्रित फसल के रूप में लगाया गया है और काली मिर्च की बेल को नारियल और सुपारी के पेड़ों पर चढ़ाया गया है। इन बहवर्षी फसलों के अलावा केला, जिमीकंद, अदरक, हल्दी, चौड़ा धनिया, अनन्त्रास, पपीता, कसावा, शकरकंद और बैंगन, मिर्च जैसी सब्जियों और पत्तेदार सब्जियों को अंतर फसल के रूप में उगाया जाता है। वे रजनीगंधा, ग्लैडियोलस और गेंदे की संरक्षित खेती भी



कर रही हैं। उनके फार्म के पशुपालन में दो गाय, छह बकरियाँ, 60 बत्तख और 50 वास्थूमि मुरगियाँ, 2 मछली तालाबें शामिल हैं और इन तालाबों में भारत की प्रमुख मछलियाँ (रोह, कतला और मृगल) पाली जाती हैं। इसके अलावा वे परागण को बढ़ावा देने के लिए 15 मधुमक्खी बक्सों का अनुरक्षण करती हैं और शहद की बिक्री से अतिरिक्त आय अर्जित करती है। श्रीमती चेल्लम्माल द्वारा अपनाई गयी कृषि तकनीकों की एक अनूठी विशेषता यह है कि वे बरसात के मौसम के बाद मिट्टी की नमी को संरक्षित करने के लिए बागान में नारियल के पत्ते और नारियल छिलके से पलवार करती हैं। उन्होंने अपने बाग में एकीकृत कीट प्रबंधन रणनीति अपनायी है जिसमें कीटों की आबादी नियंत्रित रखने में फेरोमोन फंडे की मुख्य भूमिका है।

उनके बाग से प्रति वर्ष 27,550 नारियलों की तुड़ाई होती है और वे विभिन्न संघटकों के लिए खेती लागत के रूप में लगभग 2 लाख रुपए खर्च करती हैं और मात्र नारियल से 1.65 लाख रुपए कमाती हैं। अन्य लाभदायक फसलें हैं अदरक (1.12 लाख रुपए), मिर्च (76,800 रुपए), केला

(52,000 रुपए), पपीता (54,000 रुपए), कसावा और जिमीकंद (प्रत्येक को 30,000 रुपए) आदि। मछली के तालाबों से वे प्रति वर्ष 40,000 रुपए कमाती हैं। नारियल आधारित एकीकृत खेती से प्रति वर्ष प्राप्त शुद्ध आय लगभग

7.75 लाख रुपए है। श्रीमती चेल्लम्माल को वर्ष 2012 में आईसीएआर-सीआईएआरआई द्वारा आयोजित किसान मेले में सर्वोत्तम किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सर्वोत्तम नारियल किसान - पूर्व और उत्तर पूर्वी क्षेत्र (बड़ा) श्री किकातो किनिमी, दीमापुर, नागालैंड

नागालैंड के दीमापुर गांव के किसान श्री किकातो किनिमी के पास 70 एकड़ जमीन हैं जिसमें से 50 एकड़ में लगभग 6000 नारियल पेड़ लगाए गए हैं जिनकी आयु 25 साल है।

नारियल के बीच अंतर फसल के रूप में सुपारी की खेती की गई है। 50 एकड़ के नारियल बाग से श्री किनिमी को प्रति वर्ष 1,10,000 नारियल प्राप्त होते हैं। औसत उत्पादकता प्रति पेड़ 200 नारियल है। समुचित सिंचाई विधि से बाग का अनुरक्षण किया जाता है और बाग का

प्रबंधन जैव खाद, गोबर और नमक का प्रयोग करके किया जाता है।

श्री किकातो किनिमी ने वाणिज्य में स्नातकोत्तर उपाधि हासिल की है। नारियल और उसके विभिन्न उत्पादों की बिक्री से उनकी शुद्ध आय प्रति वर्ष 9,00,000 रुपए है। वे नारियल की तुड़ाई और शिखर की सफाई करने के लिए नारियल पेड़ पर चढ़ने की मशीन का प्रयोग करते हैं।



सर्वोत्तम नारियल किसान - पूर्व और उत्तर पूर्वी क्षेत्र (लघु) श्री पंकज दास, हाजो, कामरूप, असम

असम के हाजो गांव के प्रगतिशील किसान श्री पंकज दास ने अपने 1.5 हेक्टेयर में से 0.75 हेक्टेयर में नारियल पेड़ लगाए हैं जिनसे प्राप्त वार्षिक उपज 5000 - 6000 नारियल है। उनके बाग में अंतर फसल के रूप में बहुवर्षी और मौसमी फसलों की खेती की जाती है। उनकी आय का प्रमुख स्रोत मछली पालन और नारियल है। उनके बाग में नारियल के अलावा अंतर फसल के रूप में सुपारी, आंवला, असम नींबू, केला, लीची और सहजन की खेती की जाती है। उन्होंने मछली पालन, गाय, बकरी, मुर्गी पालन, बत्तख आदि के साथ बहुफसल प्रणाली अपनायी है। उन्होंने अपने फार्म में कई नवाचार विधियाँ अपनायी हैं। दलदल क्षेत्रों और तालाबों में आमतौर पर पाए जाने वाला जलीय पौधा जलकुंभी उनके तालाब और बाग का साधारण खरपतवार है। वे इस खरपतवार का कंपोस्ट बनाकर जैविक खाद के रूप में इस्तेमाल करते हैं। सूखे के मौसम के दौरान खरपतवार को



नियंत्रित करने और पानी का बचाव करने के लिए नारियल के थालों में जलकुंभी से पलवार किया जाता है।

श्री दास नारियल विकास बोर्ड के सर्वोत्तम किसान पुरस्कार 2010 (उत्तर पूर्वी) विजेता हैं। केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने नारियल की खेती में उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों और नवाचारों के लिए वर्ष 2016 के दौरान उन्हें सम्मानित किया था।

सर्वोत्तम नारियल प्रसंस्करणकर्ता - खाद्य उत्पाद/खाद्येतर उत्पाद श्रीमती दीपा अनिल लाल, लाला एग्रो ट्रॉपिकल प्रा.लि., एरणाकुलम, केरल

श्रीमती दीपा अनिल लाल लाला एग्रो ट्रॉपिकल, कोची के निदेशक हैं। यह केरल में स्थित एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी है जो नारियल खोपड़ी से पर्यावरण अनुकूल वस्तुओं

का निर्माता है। कंपनी को 2008 में एक स्पेनिश कंपनी की हिस्सेदारी के साथ प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के रूप में पंजीकृत किया गया था। कंपनी को नारियल खोपड़ी से

● राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता

निर्मित पर्यावरण अनुकूल वस्तुओं के उत्पादन में कई वर्षों का अनुभव है। श्रीमती दीपा अनिल लाल के पति श्री अनिल लाल कंपनी के प्रबंध निदेशक हैं।

कंपनी नारियल की खोपड़ी से आइसक्रीम कप, नारियल खोपड़ी बर्ड फीडर और दस्तकारियों का निर्माण करती है। कच्चा माल तमिलनाडु से खरीदा जाता है और एरणाकुलम जिले के कोटनाट और कालटी की उनकी प्रसंस्करण इकाइयों में इनका प्रसंस्करण किया जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप कंपनी के प्रमुख हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप कंपनी के प्रमुख हैं।



निर्यात बाजार हैं। कंपनी का वार्षिक टर्न ऑवर लगभग 3.5 करोड़ रुपए है।

सर्वोत्तम नारियल प्रसंस्करणकर्ता - गैर परंपरागत नारियल उत्पाद श्री डी.एन.निरंजन कनि, होलिस्टा ट्रान्स्वर्ल्ड प्रा.लि., सेलम, तमिलनाडु

सर्वश्री होलिस्टा ट्रान्स्वर्ल्ड प्रा.लि. की स्थापना श्री डी.एन. निरंजन कनि द्वारा की गयी थी। वे बीबीडी परिवार की दूसरी पीढ़ी के उद्यमी हैं जिन्हें त्वरित बिकते उपभोक्ता सामान (एफएमसीजी) की बिक्री और वितरण में और देश के दूसरा सबसे बड़े ब्रैंड नारियल तेल व्यवसाय में व्यापक अनुभव है। व्यापार के प्रति उनकी शौक और कड़ी मेहनत के रखैये से होलिस्टा को एक प्रतिष्ठित नाम प्राप्त हुआ। कंपनी उच्च मूल्य वर्धित बी2बी और बी2सी नारियल आधारित खाद्य पदार्थों, व्यंजन सामग्रियों और पानीयों का निर्माण व वितरण करती है। वर्ष 2019 के दौरान कंपनी का टर्न ऑवर 13.61 करोड़ रुपए था।



विनिर्माण प्रणालियों(जीएमपी) और अच्छी स्वच्छता प्रणालियों(जीएचपी) का सख्ती से अनुसरण किया जाता है और खाद्य सुरक्षा एवं गुणवत्ता प्रबंधन प्रणालियों का अनुरक्षण किया जाता है। गुणवत्ता नियंत्रण/गुणवत्ता मूल्यांकन विभाग के साथ एक छोटी अनुसंधान व विकास/उत्पाद विकास प्रयोगशाला भी जुड़ी हुई है। होलिस्टा ने जीएफएसआई अनुमोदित कड़ी खाद्य सुरक्षा एवं गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली को अपनाया है। होलिस्टा एफएसएससी 22000 और बीआरसीजीएस मानदंडों का अनुपालन करता है और सारे उत्पाद हलाल प्रमाणित तथा एकड़ीए पंजीकृत हैं।

सर्वोत्तम नारियल अनुसंधान कार्यकर्ता - नारियल उत्पादों पर निष्कर्ष डा. एम.आर.मणिकंठन, प्रधान वैज्ञानिक (एएस एंड पीई), भा.कृ.अनु.प.-कै.रो.फ.अनु.सं., कासरगोड़

डा.एम.आर.मणिकंठन, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.-कै.रो.फ.अनु.सं. को कृषि इंजीनियरी में 24 वर्षों का पेशेवर अनुभव है। उन्होंने 2000 और 2013 के बीच भा.कृ.अनु.प.-सीआईपीएचईटी, लुधियाना में वैज्ञानिक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक के रूप में काम किया है। उनके 71 शोध पत्र राष्ट्रीय और

अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने 18 तकनीकी लोकप्रिय लेख, 26 तकनीकी बुलेटिन/मैनुअल और 11 पुस्तक अध्याय भी प्रकाशित किए हैं। उन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों और विचार-गोष्ठियों में लगभग 70 शोध पत्र

प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने 'खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियाँ, सह-उत्पाद उपयोग और गुणवत्ता आश्वासन', 'रोपण फसलों में उत्पाद विविधीकरण' और 'रोपण फसलों में मशीनीकरण' पर तीन पुस्तकों का संपादन किया है। उन्होंने अब तक खाद्यान्न और तिलहन प्रसंस्करण, नैनोकंपोजिट प्रौद्योगिकी, सूक्ष्मसंपुटीकरण (मैक्रोएन्काप्सुलेशन) और बायोगैस प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में 12 प्रौद्योगिकियों/उपस्कर/प्रक्रिया प्रोटोकोल विकसित किए हैं। उन्हें अपने स्नातकोत्तर और डाक्टरेट अध्ययन के दौरान तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय की योग्यता छात्रवृत्ति और सीएसआईआर अध्येतावृत्ति से सम्मानित किया गया। वे स्नातकोत्तर अनुसंधान के लिए वर्ष 2010 का जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार और वर्ष 2013 के दौरान आईएसएई से विशिष्ट सेवा प्रमाणपत्र से सम्मानित हुए। वर्ष 2013 से वे भा.कृ.अनु.प.-कै.रो.फ.अनु.सं. में कार्यरत हैं। उन्होंने नारियल डीशेलिंग मशीन, सुपारी डीहस्कर सह ग्रेडर, नारियल दूध के अपशिष्ट और वर्जिन नारियल तेल खली आधारित एक्स्ट्रूडेट्स (कल्प क्रंच) और अन्य मूल्य वर्धित उत्पादों, वर्जिन



नारियल तेल खली आधारित मफिन, नारियल आधारित वीगन आइसक्रीम/प्रशीतित नारियल डेलिकसी, नारियल शर्करा आधारित डार्क चॉकलेट, नारियल शर्करा आधारित नूट्रीबार, स्प्रे ड्राइड नीरा पाउडर और नीरा/कन्प्यरसा बोतलिंग प्रौद्योगिकी विकसित करने में योगदान दिया है। वर्ष 2013-2018 के दौरान उन्होंने भा.कृ.अनु.प.-कै.रो.फ.अनु.सं. द्वारा विकसित लगभग 12 प्रौद्योगिकियाँ 110 उद्यमियों को हस्तांतरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

सर्वोत्तम नारियल अनुसंधान कार्यकर्ता - मशीनरी/उपस्कर का विकास श्री चार्ल्स विजय वर्गेस, आलुवा, एरणाकुलम, केरल

केरल में कोची के युवा इंजीनियर श्री चार्ल्स विजय वर्गेस ने नारियल पेड़ का पुष्टक्रम रस नीरा निकालने के लिए नवीन रोबोटिक सैपर का आविष्कार किया है। इस सैपर को पेड़ के शिखर पर पुष्टक्रम पर स्थापित किया जाता है और फिर नीरा या ताड़ी पेड़ पर लगे सैपर से जुड़ी पाइपलाइन के ज़रिए ज़मीन पर रखे बरतन तक पहुंच जाती है। सैपर को कोची स्थित स्टार्ट अप नव डिजाइन एंड इनोवेशन प्रा.लि. द्वारा विकसित किया गया है।

उत्पादित नीरा का ब्यौरा समय समय पर किसान के मोबाइल फोन में रोबोटिक इंटरनेट ऑफ थिंग्स नामक मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से प्राप्त हो जाएगा। श्री चार्ल्स जो इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरी में



स्नातक है, कंपनी के सीईओ हैं। उनकी पत्नी नीनू, उनके युवा इंजीनियर दोस्त विनु, सुजित, अनुप, मनु, पर्यवेक्षक जितिन और टैपर सुकुमारन उनकी टीम के सदस्य हैं।

वर्ष 2017 जुलाई में उन्होंने स्टार्ट अप का पंजीकरण किन्तु, कोची के मेकर विलेज में किया और फिर पूर्ण पेटेंट के लिए आवेदन दिया। उसी वर्ष के दौरान भारतीय

● राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता

पेटेंट और अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट दोनों प्राप्त हुए। आगे उन्होंने 12 नारियल उत्पादक देशों में भी पेटेंट के लिए आवेदन दिए।

इस सैपर से टैपर उत्पादकता कम से कम 72 गुना तक बढ़ायी जा सकती है। एक ही पुष्टक्रम से अधिकतम 3 महीने या उससे अधिक अवधि तक नीरा उतारी जा सकती है क्योंकि

प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों से सैपर के कार्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

श्री सी.ए.वर्गीस के सुपुत्र श्री चाल्स, केरल में आलुवा के निवासी हैं और उन्होंने 2005 में एम.कुमारस्वामी इंजीनियरिंग कॉलेज से बी.टेक और चेत्र से 3डी डिजाइन में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की।

सर्वोत्तम मास्टर कारीगर - बड़ा पैमाना श्री रत्नेन्द्र नाथ मल्लिक, नेलीनगर डाक, हलतू, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

कोलकाता निवासी श्री रत्नेन्द्र नाथ मल्लिक (45) 1999 से नारियल कारीगरी व्यवसाय में लगे हुए हैं। वे अपनी कलाकृतियों के लिए कच्चे माल के रूप में नारियल की खोपड़ी और सोने का उपयोग कर रहे हैं। वे एक ऐसी विधि का अनुसरण कर रहे हैं जिसकी खोज उन्होंने स्वयं की है और नारियल की खोपड़ी की नक्काशी करके हस्तशिल्प वस्तुएं और नारियल खोपड़ी-सोना जड़े फ्यूजन आभूषण बना रहे हैं। श्री मल्लिक ने अपनी शिल्प इकाई के लिए एक लाख रुपए की राशि का निवेश किया है और इस इकाई से उनकी वार्षिक आय लगभग दो लाख पचास हजार रुपए है।

श्री मल्लिक को अपनी नारियल खोपड़ी नक्काशी के लिए वस्त्र मंत्रालय के वर्ष 2012 का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है



और वे 2005-06 तथा 2010-2011 के राज्य पुरस्कार विजेता हैं। नारियल खोपड़ी-सोना जड़े फ्यूजन आभूषण बनाने के क्षेत्र में अपने अद्भुत नारियल खोपड़ी आभूषणों के लिए अग्रणी के रूप में उन्हें लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में सूचीबद्ध किया गया है।

सर्वोत्तम मास्टर कारीगर - बड़ा पैमाना श्री दयालु के.डी., वरापुण्णा, एरणाकुलम, केरल

श्री दयालु के.डी. (49) एक प्रतिभाशाली कारीगर हैं जो वरापुण्णा, एरणाकुलम, केरल के निवासी हैं और नारियल की खोपड़ी से सुंदर सजावटी वस्तुओं का निर्माण करते हैं। विभिन्न आकृतियों और आकारों के लैंप शेड और कई अन्य सजावटी वस्तुएं नारियल की खोपड़ी से बनाई जाती हैं। श्री दयालु पेशे से एक एल्यूमिनियम फैब्रिकेटर हैं। उन्होंने दीपक हैंडिक्राफ्ट्स नाम से एक कंपनी पंजीकृत की है और वे विविध प्रकार के हस्तशिल्पों का निर्माण कर रहे हैं। अधिकांश हस्तशिल्प सीधी की गई नारियल खोपड़ी से बनाई जाती हैं। नारियल की खोपड़ी को तापन से सीधा किया जाता है। वे कच्चे माल को चुनने में भी काफी सावधान रहते हैं। नारियल की खोपड़ी से हस्तशिल्प बनाना दयालु का शौक है। इसके लिए विभिन्न उपकरणों, मशीनरियों और रंगों का उपयोग किया जाता है। दयालु के पास 500 रुपए से लेकर 25,000 रुपए तक



मूल्य की विभिन्न प्रकार की कलाकृतियाँ हैं। उनके उत्पादों के लिए कई राज्यों के हस्तशिल्प व्यापारी जैसे नियमित खरीदार भी हैं। दयालु नियमित रूप से मेलाओं और उत्सवों में भाग लेते हैं जहां उनके उत्पाद जल्द बिक जाते हैं। नारियल की खोपड़ी और नारियल पेड़ के अन्य भागों का उपयोग करके बनाए गए लैंप शेड के लिए उन्हें केरल राज्य हस्तशिल्प पुरस्कार 2015-16 प्राप्त हुआ था।

सर्वोत्तम मास्टर कारीगर - छोटा पैमाना श्रीमती माला कुमारी वर्मा, मुंगेर जिला, बिहार



श्रीमती माला कुमारी वर्मा (45) बिहार के मुंगेर जिले की नारियल कारीगर हैं। उनके पति श्री निकुंज बिहारी भी शिल्पकार और मास्टर कारीगर हैं। वे नारियल की खोपड़ी से आभूषण और कई अन्य मूल्य वर्धित उत्पादों का डिजाइन कर रही हैं। वे 2004 से हस्तशिल्प बनाने में लगी हुई हैं और वे सर्वोत्तम हस्तशिल्प के लिए बिहार सरकार के राज्य पुरस्कार 2010-11 की विजेता हैं। वे नारियल हस्तशिल्प में मास्टर प्रशिक्षक हैं।

सर्वोत्तम मास्टर कारीगर - छोटा पैमाना (सांत्वना पुरस्कार) श्री अक्षय परमानंद पिलांकर, महाजन वाड़ी, जिला-रत्नागिरी, महाराष्ट्र

महाराष्ट्र के रत्नागिरी निवासी श्री अक्षय परमानंद पिलांकर (26) पूरे नारियल, कवर, नारियल खोपड़ी, नारियल छिलका आदि पर नक्काशी, सजावटी कला कार्य (भगवान का चित्र, शादी का चित्र, लॉगो, प्रतीक, ड्रामा मुखौटे, घर का नाम, विभिन्न हस्तशिल्प आदि) कर रहे हैं। वे वर्ष 2011 से स्वतंत्र शिल्पकार के रूप में काम कर रहे हैं। इकाई से उनकी औसत वार्षिक आय एक लाख रुपए है। श्री अक्षय परमानंद पिलांकर ने मुम्बई विश्वविद्यालय से ललित कला प्रतियोगिता में रजत एवं कांस्य पदक और भारती विद्यापीठ, पुणे से सर्वोत्तम चित्रकारी पुरस्कार प्राप्त किए हैं।



सर्वोत्तम मास्टर कारीगर - छोटा पैमाना (सांत्वना पुरस्कार) श्री सगीर अहमद, जोरहाट, असम

श्री सगीर अहमद (42) हरित उद्यमी है और जोरहाट, असम स्थित डाजिल क्राफ्ट का मालिक है जिन्होंने अपशिष्ट उत्पादों का पुनर्चक्रण और पुनःउपयोग करने के लिए नवाचारों एवं सृजनात्मकता का प्रयोग किया है। वे अपशिष्ट नारियल खोपड़ी से आभूषण की जटिल कलाकृतियाँ एवं घर सजावट के कलारूप बना रहे हैं। उनकी कारीगरी से असम में नारियल खोपड़ी के मूल्यवान उपयोग के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद मिल गई है और वह स्वयं सहायता महिला समूहों के लिए आजीविका का स्रोत भी बन गया है। कई ई-कोमर्स वेबसाइट, खुदरा विक्रेताओं और थोक विक्रेताओं के बीच उनके पर्यावरण अनुकूल शिल्प रूपों की बड़ी मांग है जो इन उत्पादों को खरीदते हैं और अपने बिक्री प्लाटफॉर्म के माध्यम से बेचते हैं।



सगीर अहमद नारियल खोपड़ी को मिलाकर अनोखे उत्पाद बना रहे हैं जो पर्यावरण के अनुकूल हैं। वे शौकीन युवाओं को हस्तशिल्प बनाने की विधि सिखाने और उनकी सहायता करने के लिए तैयार हैं।

(अगले अंक में जारी...)



भारत ने नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियाँ विषयक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला की मेज़बानी की

नारियल विकास बोर्ड, भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने इंटरनेशनल कोकनट कम्यूनिटी के सहयोग से 2 से 4 सितंबर 2022 तक कोची, केरल में नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियाँ विषयक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला की मेज़बानी की। कार्यशाला का विषय था: उत्पादन क्षमता, उत्पाद गुणवत्ता और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता बढ़ाने में नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियाँ।

डा. जेलिफ्ना सी.एलोव, कार्यकारी निदेशक, आईसीसी ने 2 सितंबर 2022 को कार्यशाला का उद्घाटन किया और डा.एन.विजयलक्ष्मी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड और श्री राजेन्द्र कुमार कटारिया भा.प्र.से., प्रधान सचिव, बागवानी, कर्नाटक सरकार इस अवसर पर उपस्थित थे।

अपने स्वागत भाषण में डा.एन.विजयलक्ष्मी भा.प्र.से. ने कहा कि नारियल उत्पादन में अच्छी कृषि पद्धतियाँ समय की माँग हैं। नारियल उत्पादन में अच्छी कृषि पद्धतियाँ सामयिक रूप से अपनाने और अनुवीक्षण करने से नारियल सुरक्षित रहता है और नारियल तथा नारियल आधारित मूल्यवर्धित उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ती है जिसके द्वारा नारियल उत्पादों के नियात की संभाव्यताएं बेहतर हो जाती हैं। नारियल खेती में अच्छी कृषि पद्धतियाँ अपनाने से गुणवत्तापूर्ण उत्पादों का उत्पादन ही नहीं बल्कि मिट्टी की स्थिति भी बेहतर होती है और तद्वारा कृषि लागत कम हो जाती है, परिणामस्वरूप किसानों की आजीविका स्तर सुधर जाता है।

डा.जेलिफ्ना सी.एलोव, कार्यकारी निदेशक, आईसीसी ने अपने उद्घाटन भाषण में कार्यशाला के उद्देश्य और आधारभूत

कारण प्रस्तुत किए। उन्होंने कार्यशाला के प्रत्याशित परिणामों पर बात की जैसे कि उन्नत पर्यावरणीय प्रबंधन के साथ टिकाऊ और सहनशील नारियल उद्योग, फलों की गुणवत्ता और उत्पादन क्षमता जिससे कि किसान और उपभोक्ता लाभान्वित हो जाए और तद्वारा नारियल किसानों के आजीविका स्तर में सुधार हो और गुणवत्तापूर्ण नारियल आधारित उत्पाद-बेहतर उत्पादन, बेहतर वातावरण, बेहतर विपणन और बेहतर ज़िंदगी संभव हो-जो कि समय की मांग है।

श्री राजेन्द्र कुमार कटारिया भा.प्र.से., प्रधान सचिव, बागवानी, कर्नाटक सरकार ने अपने भाषण में कहा कि कार्यशाला में ऐसी अच्छी कृषि पद्धतियों के लिए दिशानिर्देश सहित निष्कर्ष निकलना चाहिए जिसका वैश्विक स्तर पर अनुसरण किया जा सके। उन्होंने यह भी बताया कि देशों को प्रयोगशाला से सीधे ज़मीन पर कार्यक्रम का अनुसरण करना चाहिए जिसमें विकसित प्रौद्योगिकियों का बाग में निर्दर्शन किया जाए ताकि किसान इन प्रौद्योगिकियों को आसानी से अपनाया जा सके। उन्होंने यह भी जोड़ा कि इस मंच में अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों द्वारा अपना अनुभव बॉटने से सहभागियों को नवीनतम और अद्यतन प्रौद्योगिकियों के साथ सुसज्जित कराया जा सकेगा।

तीन दिवसीय कार्यशाला के तीन सत्र थे। पहले सत्र में टिकाऊ विकास के लिए नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियाँ और अच्छी कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए नवाचारी विस्तार पद्धतियों पर देशों के प्रस्तुतीकरण केंद्रित थे। डा. मनीष पांडे, निदेशक और अध्यक्ष, भारतीय गुणवत्ता परिषद



कार्यशाला के दृश्य

ने इस सत्र की अध्यक्षता की और डा.के.सेल्वराज, वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, भारत सरकार ने सह अध्यक्षता की। भारत, मलेशिया, श्रीलंका और फिलीपीन्स से प्रत्यक्ष रूप से और इंडोनेशिया, थाइलैंड और वियतनाम से विशेषज्ञों ने वर्चुअल तरीके से इस सत्र में भाग लिया और सामूहिक एवं सांस्कृतिक अवरोधों सहित अपने अपने देशों में अपनायी जा रही विविध अच्छी कृषि पद्धतियों और अनुसरण की जा रही रणनीतियों/नीतियों पर प्रस्तुति की। अच्छी कृषि पद्धतियों की प्रौद्योगिकियों की ताकत, कमज़ोरियाँ, अवसर और खतरे तथा भावी योजनाओं को भी प्रस्तुत किया।

दूसरा सत्र टिकाऊ खेती की ओर अग्रसर होते हुए-अच्छी कृषि पद्धतियाँ और जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता पर था जिसमें एफएक्यू और भारतीय गुणवत्ता परिषद के विशेषज्ञों ने हितधारकों एवं किसानों द्वारा अनुसरण किए जाने योग्य विभिन्न कार्यक्रम और अच्छी कृषि पद्धतियों की प्रमाणन कार्यविधियों को प्रस्तुत किया। डा. पांडे ने विचार करने योग्य चार स्तंभों पर ज़ोर दिया अर्थात् खाद्य सुरक्षा, पर्यावरण प्रबंधन, कामगारों की सुरक्षा सहित किफायती भाव और उत्पादों की गुणवत्ता। डा.लिबर्टी एच.कांजा, विभाग प्रबंधक, फिलीपीन्स कोकनट एथोरिटी ने इस सत्र की अध्यक्षता की।

तीसरा सत्र उत्पादकता और फल की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु प्रगतिशील नारियल किसानों द्वारा अपनाए जा रहे सफल मोडलों पर था जिसमें प्रगतिशील किसानों ने अपने अनुभव बाँटे। डा.सी.तंपान, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान और डा.अंजना अटपट्टु, वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी, सीआरआई, श्रीलंका ने सत्र की अध्यक्षता की। उमापति हाइब्रिड सेंटर, तिरुप्पुर, तमिलनाडु, भारत के श्री राम मोहन और

प्रोफ. नेल्सन पोमालिंगो, अध्यक्ष, नारियल उत्पादक जिले, गोरोंटोलो रीजेंसी, इंडोनेशिया ने अपने अनुभव बाँटे और वैश्विक नारियल बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक बने रहने के लिए अच्छी कृषि पद्धतियों का अनुसरण करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

खुले मंच और परिचर्चाओं में अनुसंधानकर्ताओं, विस्तार कार्यकर्ताओं, हितधारकों और किसानों ने भाग लिया। डा. एन. विजयलक्ष्मी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नाविबो और डा. जेल्फिना सी. एलोव कार्यकारी निदेशक, आईसीसी की समापन टिप्पणियों के साथ सत्र समाप्त हुआ।

टीम ने तमिलनाडु राज्य के तिरुपुर जिले में श्री राम मोहन और श्री ओ.वी.आर.सोमसुंदरम के नारियल बागानों का दौरा किया। सहभागियों को उमापति हाइब्रिड सेंटर में अपनाए जा रहे संकरण तकनीकों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने कुक्कुट पालन सहित एकीकृत खेती प्रणालियाँ अपनायी गयी हैं। उमापति की अपनी नर्सरी भी है जिसमें पॉली बैगों में रामगंगा किस्म के संकर नारियल पौधे पाले जा रहे हैं। श्री राम मोहन नारियल नीरा से नारियल शक्कर और अन्य मूल्यवर्धित उत्पादों का भी उत्पादन कर रहा है।

कार्यशाला आयोजित करने का सामान्य उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के बीच जैविक और अजैविक तनाव की परिस्थिति में बेहतर पारिश्रमिक के लिए उच्च मात्रा में गुणवत्तायुक्त फलों का उत्पादन करने हेतु नारियल बागों में अपनायी जा रही प्रबंधन पद्धतियों का स्तर बढ़ाने के लिए अच्छी कृषि पद्धतियों संबंधी जानकारी का प्रचार-प्रसार करना है।

भारत, इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपीन्स, श्रीलंका, थाइलैंड और वियतनाम जैसे प्रमुख नारियल उत्पादक देशों के कृषि विज्ञानियों और संबंधित विशेषज्ञों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने कार्यशाला में भाग लिया और हाल ही के अपने

अनुसंधान निष्कर्ष और विकास प्रस्तुत किए। कार्यशाला में लगभग 125 सहभागियों ने प्रत्यक्ष रूप से और वर्चुअल तरीके से भाग लिया। प्रस्तुत कार्यशाला आईसीसी सदस्य देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय मंच/नेटवर्क स्थापित करने हेतु कृषि विज्ञानियों, मृदा वैज्ञानिकों और संबंधित विशेषज्ञों के बीच जानकारियाँ बाँटने के स्थान के रूप में कार्य की। इसका उद्देश्य

स्थानीय/राष्ट्रीय नवाचारों और प्रक्रियाओं को त्वरित करना है ताकि नारियल के लिए क्लाइमट स्मार्ट कृषि को बढ़ावा दिया जा सके, आंकड़े और प्रौद्योगिकी के फासले की पहचान की जा सके, अद्यतन अनुसंधान परिणामों के आधार पर बेहतरीन अच्छी कृषि पद्धतियों की अनुशंसाएं विकसित करने हेतु भावी अनुसंधान गतिविधियों के क्षेत्र की पहचान की जा सके।

आईसीसी - तकनीकी कार्य दल बैठक

आईसीसी - कार्य दल (आईसीसी-टीडब्ल्यूजी) और थाई सरकार की वर्चुअल बैठक 16 सितंबर 2022 को संपन्न हुई। डा. हनुमंते गौडा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड और सदस्य तकनीकी कार्य दल, आईसीसी ने बैठक में भाग लिया। टीडब्ल्यूजी बैठक में बंदरों का उपयोग करके नारियल की तुड़ाई करवाने के प्रचार के जवाब में थाईलैंड सरकार द्वारा विकसित जीएपी मंकी फ्री प्लस प्रोटोकॉल के प्रस्ताव पर परिचर्चा हुई।

डा. जेलिफना सी. एलोव, कार्यकारी निदेशक, आईसीसी ने स्वागत भाषण दिया। डा. चूचत वतनवान, निदेशक, बागवानी अनुसंधान संस्थान, कृषि विभाग, बैंकोंक, थाईलैंड ने जीएपी मंकी फ्री प्लस प्रोटोकॉल के बारे में जानकारी दी एवं उसको बढ़ावा देने के लिए थाईलैंड सरकार द्वारा की जा रही पहल के बारे में बताया। टीडब्ल्यूजी के अध्यक्ष और सदस्यों ने



तकनीकी कार्य दल बैठक की झलक

इस विषय पर विस्तृत चर्चा की और इस मुद्दे को निपटने में आईसीसी के समर्थन का आश्वासन दिया। बैठक का समापन आईसीसी की सहायक निदेशक सुश्री मृदुला कोट्टेकाट के समापन टिप्पणी के साथ हुआ।

नारियल विकास बोर्ड की 143वीं बैठक



बोर्ड की 143वीं बैठक के दृश्य

डा. एन.विजयलक्ष्मी भा.प्र.से., मुख्य कार्यपालक अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड की अध्यक्षता में 2 सितंबर 2022 को कोची में नारियल विकास बोर्ड की 143वीं बैठक संपन्न हुई।

श्री के.नारायणन मास्टर, उपाध्यक्ष और बोर्ड के अन्य सदस्यों; डा.अनिता करुण, निदेशक, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, श्री डी.कुप्पुराम, अध्यक्ष, कयर बोर्ड, श्री नगेंद्र प्रसाद भा.प्र.से., बागवानी निदेशक, कर्नाटक सरकार, श्री पी.रघुनाथ, श्री बी.एच.रेणुकमार, श्री एस.वी. मुन्तुरामलिंगम, श्री गुरुस्वामी और श्री एच.एल.अश्वथनारायण ने बैठक में भाग लिया।

डा. एन.विजयलक्ष्मी भा.प्र.से., मुख्य कार्यपालक अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड ने बोर्ड की प्रमुख गतिविधियों और एफपीओ के गठन में हुई प्रगति, नारियल के भाव एवं नारियल उत्पादों के निर्यात संबंधी अद्यतन व्यौरे बैठक में प्रस्तुत किए।

एग्रि इन्डेक्स 2022 व्यापार मेला

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने 15 से 18 जुलाई 2022 तक कोडिस्सिया, कोयम्बत्तूर में संपन्न एग्रि इन्डेक्स 2022 व्यापार मेला में भाग लिया। तमिलनाडु से पाँच नारियल उत्पादक कंपनियों जैसे विनायका, मटत्तुकुलम, एलन्चराल, वेल्लिनिरी और ग्लोबल सीपीसी ने अपने उत्पादें जैसे नीरा, नारियल दूध, विर्जिन नारियल तेल, नारियल तेल, सिरका आदि बोर्ड के स्टाल में प्रदर्शित किए। प्वोर ट्रोपिक, मथुरा फुड्स और शक्ति कोको जैसे नारियल आधारित उद्यमियों ने भी मेले में भाग लिया और अपने उत्पादें जैसे टेट्रा पैकटबंद डाब पानी, नीरा शक्कर, गुड़, फ्लेवर्ड नारियल दूध, डेसिकेटड नारियल, नीरा शहद, विर्जिन नारियल तेल आदि बोर्ड के स्टाल में प्रदर्शित किए।

तमिलनाडु तथा अन्य राज्यों के विभिन्न जिलों से किसानों, विद्यार्थियों तथा उद्यमियों ने नाविबो स्टाल का दौरा किया और नारियल खेती, किस्में, नर्सरी, मूल्य वर्धन तथा बोर्ड की योजनाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त की। उन्होंने नारियल आधारित उत्पादों के निर्यात व्यौरे के बारे में भी पूछताछ की। नाविबो अधिकारियों ने बोर्ड की योजनाओं, नारियल पेड़ की।



एग्रि इन्डेक्स 2022 व्यापार मेला में बोर्ड का स्टाल

बीमा योजना और किसानों एवं उद्यमियों को बोर्ड द्वारा विभिन्न योजनाओं के तहत दी जा रही विभिन्न सहायताओं पर संक्षिप्त विवरण दिया।

श्रीमती टी.बाला सुधाहरि, प्रभारी निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै, श्री के.एस.सेबास्टियन, सहायक निदेशक (विपणन), श्री प्रमोद पी. कुरियन, सहायक निदेशक (विकास), नाविबो, कोची, विकास अधिकारी श्री सी. शशिकुमार और श्री जी.रघोत्तमन तथा श्री विष्णु, प्रसंस्करण इंजीनियर ने प्रदर्शनी में भाग लिया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कायंकुलम ने 94वाँ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-स्थापना दिवस मनाया

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कायंकुलम ने 16 जुलाई, 2022 को नवी पीढ़ी के शोधछात्रों, विद्यार्थियों एवं संकायों के लिए 'उन्नत सूक्ष्मदर्शी तकनीकों' पर कार्यशाला के साथ साथ 'ग्रेगर जॉन मेंडल के स्मरणार्थ द्विशताब्दी व्याख्यान' आयोजित करते हुए 94वाँ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-स्थापना दिवस मनाया।

डा.पी.अनिताकुमारी, कार्यकारी अध्यक्ष ने अपने स्वागत भाषण में देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की भूमिका पर प्रकाश डाला। वर्चुअल मोड में आयोजित कार्यक्रम में अपने उद्घाटन भाषण में डा.अनिता करुण, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड ने कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं विस्तार के क्षेत्र में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के शानदार कार्य को रेखांकित करते हुए कहा कि इसके फलस्वरूप हमारे देश की आर्थिकी आयात करने से बदलकर निर्यातोन्मुख बन गयी है। ग्रेगर जॉन मेंडल के स्मरणार्थ द्विशताब्दी व्याख्यान का उद्घाटन करते वक्त उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि कैसे गणित के प्रयोग के ज़रिए मटर के पौधों पर चलाए गए व्यवस्थित परीक्षण से ग्रेगर जॉन मेंडल द्वारा आविष्कृत वंशानुक्रम नियम संभव हुआ जो वर्तमान युग का जीन एडिटिंग साधन है।

डा.जोसफ जोब, उप-प्रधानाचार्य, सेंट बर्कमान्स कॉलेज, चंगनाशशेरी ने ग्रेगर जॉन मेंडल के स्मरणार्थ द्विशताब्दी व्याख्यान



स्थापना दिवस कार्यक्रम के दृश्य

दिया। डा.रेजी जे. थोमस, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

बैठक के पश्चात सर्वश्री इनबायोटेक माइक्रोसिस्टम्स, कोची द्वारा 'उन्नत सूक्ष्मदर्शी तकनीक' पर कार्यशाला चलाई गई। श्री सी.वी.अजितकुमार, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, इनबायोटेक ने सभी प्रतिभागियों के हितलाभ के लिए सूक्ष्मदर्शी के मूल सिद्धांतों और रेजोल्यूशन, मैग्निफिकेशन, न्यूमेरिकल

एपेचर, कोह्लर इल्युमिनेशन, प्रकाश सूक्ष्मदर्शी से लेकर कन्फोकल सूक्ष्मदर्शी तक विभिन्न प्रकार के सूक्ष्मदर्शी और सर्वोत्तम तस्वीरों को खींचने वाले केमराओं की अनूठी भूमिका पर प्रकाश डाला। डा.ए.जोसफ राजकुमार, प्रधान वैज्ञानिक ने नारियल अनुसंधान में सूक्ष्मदर्शी का अनुप्रयोग विषयक प्रस्तुतीकरण किया। लगभग 100 किसानों ने कार्यशाला में भाग लिया।

नाविबो स्टाल को एग्रो + फुड एंड बीवरेज प्रो 2022 में सर्वोत्तम भारत.बिस पुरस्कार से सम्मानित किया गया

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, बैंगलूरु ने 4 से 6 अगस्त 2022 को डा.एस.पी. मुखर्जी एसी स्टेडियम, पणजी, गोवा में सर्वश्री ट्रिनिटी वेंचुरेस, मुम्बई द्वारा आयोजित 19वां एग्रो + फुड एंड बीवरेज प्रो 2022 में भाग लिया। संगोष्ठी में अपने विशिष्ट प्रदर्शन एवं प्रस्तुतीकरण के लिए बोर्ड को सर्वोत्तम भारत. बिस पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्री श्रीपद येसो नाइक, माननीय केंद्रीय पर्यटन, पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग राज्य मंत्री ने कार्यक्रम के 19वें संस्करण का उद्घाटन किया। डा.प्रमोद सावंत, माननीय मुख्यमंत्री, गोवा सरकार और श्री निलेश काब्राल, लोक निर्माण विभाग, विधि और न्याय, पर्यावरण एवं विधायी मामले मंत्री, गोवा सरकार सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित रहे।

डा.प्रमोद सावंत, माननीय मुख्यमंत्री, गोवा सरकार और श्री निलेश काब्राल, लोक निर्माण विभाग, विधि और न्याय, पर्यावरण एवं विधायी मामले मंत्री, गोवा सरकार ने नाविबो स्टाल का दौरा किया और विभिन्न नारियल उत्पादों पर पूछताछ की। बोर्ड ने विभिन्न विनिर्माण इकाइयों, जिन्हें टीएमओसी योजना के तहत सहायता प्रदान की जाती है, द्वारा उत्पादित विविध मूल्य वर्धित उत्पादों जैसे नेटा-डी-कोको, नारियल दूध, नारियल दूध पाउडर, विर्जिन नारियल तेल और नारियल चिप्स



बोर्ड के स्टाल का दृश्य

प्रदर्शित किए और नारियल खोपड़ी, कयर तथा तने से निर्मित हस्तशिल्प भी प्रदर्शित किए। नाविबो योजनाएं जैसे टीएमओसी, नाविबो-बाज़ार संवर्धन, सीआईटी प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि को प्रदर्शित करने वाले अच्छे सूचनात्मक पोस्टर स्टाल में लगाए गए। नाविबो योजनाएं, नारियल उत्पादें, खेती प्रौद्योगिकियाँ, नीरा विषयक पुस्तिकाएं और बोर्ड के प्रकाशन नाविबो स्टाल में प्रदर्शित किए गए। विर्जिन नारियल तेल निर्माता - सर्वश्री ओल्ड गोवा ओयल एंड फुड प्रा.लि., गोवा ने बोर्ड के स्टाल में अपने उत्पादें प्रदर्शित किए। कयर बोर्ड, स्पाइसेस बोर्ड, एपीईडीए, केएपीपीईसी, आईएआरआई, नई दिल्ली, कुशल भारत, विभिन्न राज्यों के पर्यटन विभाग और निजी कंपनियों ने मेले में अपने उत्पादें एवं प्रौद्योगिकियाँ प्रदर्शित कीं।

एफपीओ के सुदृढ़ीकरण पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कार्यशाला

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम ने 12 अगस्त 2022 को एफपीओ के सुदृढ़ीकरण के लिए नबार्ड द्वारा प्रायोजित एक परामर्शी कार्यशाला संचालित की। श्री जी.गोपकुमारन नायर, मुख्य महाप्रबंधक, नबार्ड ने कार्यशाला का उद्घाटन किया और स्थायी रूप से चुनौतियों का सामना करने के लिए सारे एफपीओ को समर्थ बनाने के लिए वित्तीय एवं तकनीकी सहायता प्रदान करने में नबार्ड की भूमिका के बारे में भाषण दिया। श्री जी.गोपकुमारन नायर ने आटनाटु कृषक उत्पादक कंपनी, पत्तियूर द्वारा विकसित ग्रो मी ग्रीन नामक ब्रैंडड रोटरी प्रेस्ड नारियल तेल का लोकार्पण किया। श्री एस.प्रेमकुमार, महाप्रबंधक, कैनरा बैंक और संयोजक, एसएलबीसी ने एफपीओ प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और एफपीओ के बेहतर कार्य पद्धति एवं स्थायी नकदी प्रवाह के लिए ऋण सुविधाएं प्रदान करने में बैंकिंग संस्थाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला। तकनीकी सत्र डा.जिनु पी.एलेक्स, सदस्य, केरल राज्य योजना बोर्ड द्वारा संचालित किया गया और डा.सी.तंपान, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ तथा छह विशेषज्ञ वक्ताओं ने अपने अनुभव बाँटे।

अपराह्न के सत्र में पैनल परिचर्चा संपन्न हुई। डा.सी.तम्पान, प्रधान वैज्ञानिक, एस.जयशेखर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़, डा. पी.अनिताकुमारी, कार्यालय प्रधान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम, श्री ए.सुरेष और श्रीमती आशा लता, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय मात्रियकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोची, श्री पी.मुरलीधरन, कार्यालय अध्यक्ष, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-कृषि विज्ञान केंद्र, आलप्पुष्टा और श्री रेजी वर्गीस, उप महाप्रबंधक (कोट्टयम), नबार्ड ने प्रतिनिधियों से बातचीत की और समस्याओं का समाधान किया। पैनल परिचर्चा के दौरान डा.ए.अब्दुल हारिस, प्रधान वैज्ञानिक ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण



श्री जी.गोपकुमारन नायर, मुख्य महाप्रबंधक, नबार्ड एफपीओ कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए

फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित खासकर नारियल किसानों के लिए निर्मित दो उर्वरकों (कल्प पोषक और कल्प वर्धनी) को प्रस्तुत किया।

डा.एस.पी.ज्योति, प्रबंध निदेशक, अच्यमपालयम कृषक उत्पादक कंपनी लि., दिंडिगल, डा.रमणी गोपालकृष्णन, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, ओणाट्टुकरा नारियल उत्पादक कंपनी, कट्टानम, श्री विजयन, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, धन उत्पादक कंपनी, पुतुक्काट और श्री जयकुमारन, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, एट्ककाट कृषक उत्पादक कंपनी ने अपने अनुभवों तथा एफपीओ को बनाए रखने के लिए जोखिम उठाने की क्षमताओं को बाँटा।

एग्रि स्टार्ट-अप के प्रतिनिधि श्री जिजो पॉल, रेसनोवा टेकनोलॉजीस प्रा.लि., कोची और श्री देवन चंद्रशेखर, फ्यूस्लेज इनोवेशन्स, कोची ने क्यू आर कोड अंकित पौध टैरिंग, लाल ताड़ घुन की पहचान के लिए सेंसर और खेती में ड्रॉन अनुप्रयोग प्रस्तुत किए जिनके लिए अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त हुई।



एफपीओ प्रदर्शनी का उद्घाटन और एग्रि स्टार्ट-अप के साथ संवाद

शुरू में डा.अनिता करुण, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ ने एफपीओ को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रदान किए जा रहे प्रौद्योगिकी समर्थन पर संक्षिप्त विवरण दिया और प्रभावी लिंक बाँटे। एफपीओ और एग्रि स्टार्ट-अप द्वारा 12 से अधिक उत्पादों प्रदर्शित किए। सर्वोत्तम प्रदर्शनी स्टालों को प्रशंसा प्रमाणपत्र से

सम्मानित किया गया। केरल और तमिलनाडु राज्यों से लगभग 75 एफपीओ का प्रतिनिधित्व करते हुए लगभग 350 किसानों ने भाग लिया।

डा.पी.अनिताकुमारी, कार्यालय प्रधान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम ने सभा का स्वागत किया और प्रधान वैज्ञानिक डा.ए.जोसफ राजकुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कायंकुलम और भारतीय डाक ने विशेष डाक कवर और माई स्टाम्प का लोकार्पण किया

भारत की आजादी का अमृत महोत्सव और कल्प वज्रा प्लाटिनम जयंती समारोह के सिलसिले में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम ने नारियल समुदाय की सेवा के 75 वर्ष पूरा होने के स्मरणार्थ 12 अगस्त 2022 को भारतीय डाक के ज़रिए एक विशेष डाक कवर और 'माई स्टाम्प' जारी किया। श्री पी.प्रसाद, माननीय कृषि मंत्री, केरल सरकार ने समारोह का उद्घाटन किया और नारियल अनुसंधान एवं विकास और पूरे देश में नारियल किसानों के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला।

एड्वोकेट यू. प्रतिभा, माननीय विधायक, कायंकुलम ने बैठक की अध्यक्षता की। श्रीमती शितली बर्मन, भारतीय डाक सेवा, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, केरल सर्किल ने नारियल समुदाय की सेवा के 75 वर्ष पूरा होने के अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम के विशेष डाक कवर और जड़ (मुझ्झा) रोग प्रकोपित इलाकों के लिए सर्वप्रथम विमोचित नारियल संकर - कल्प संकरा को दर्शाती 'माई स्टाम्प' का लोकार्पण किया और माननीय कृषि मंत्री को सौंपा। डा.अनिता करुण, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम ने संस्थान द्वारा नारियल किसानों के लिए विकसित प्रौद्योगिकी का संक्षिप्त विवरण दिया। डा.पी.अनिताकुमारी, कार्यालय प्रधान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम ने



श्रीमती शितली बर्मन, भारतीय डाक सेवा, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, केरल सर्किल माई स्टाम्प का लोकार्पण

सभा का स्वागत किया और संस्थान के अनुसंधान परिणामों पर बात की। श्रीमती पी.शशिकला, अध्यक्ष, कायंकुलम नगरपालिका, श्री षानी कुरुम्पोलिल, अध्यक्ष, कृष्णपुरम ग्राम पंचायत और श्रीमती बिनु अशोक, काउंसिलर, कायंकुलम नगरपालिका ने आशीर्वचन भाषण दिए। डा.रेजी जैकब थोमस, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर डाक टिकट प्रदर्शनी भी आयोजित की गई जिसमें नारियल, भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग युक्त फसलें, जैव विविधता, विभिन्न क्षेत्रों के प्रमुख हस्तियों पर डाक टिकट प्रदर्शित किए गए जिसमें 1000 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। केरल और तमिलनाडु से 75 एफपीओ का प्रतिनिधित्व करते हुए लगभग 350 किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

बोर्ड में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया

नारियल विकास बोर्ड में 14 से 28 सितंबर 2022 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह मनाया गया। 14 सितंबर को अध्यक्ष महोदय की ओर से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपील जारी की गई।

हिंदी पखवाड़े का औपचारिक उद्घाटन 14 सितंबर 2022 को संपन्न हुआ। बोर्ड के सचिव श्री आर.मधु ने परंपरागत दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने बोर्ड के सभी पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि हिंदीतर भाषी क्षेत्रों के केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में से वर्ष 2021-22 में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यनिष्ठादान हेतु नारियल विकास बोर्ड को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (तृतीय पुरस्कार) से सम्मानित किया गया है। उन्होंने सभी पदाधिकारियों से अनुरोध किया कि राजभाषा कार्यान्वयन में और प्रगति लाने के लिए हर संभव प्रयास करें।

बोर्ड के निदेशक श्री हेमचंद्र ने आशीर्वचन भाषण दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो पूरे भारत के लोग आसानी से समझ सकती है। हिंदी सीखना आसान है। हमें पूरे लगन के साथ हिंदी में काम करना चाहिए। उन्होंने खुशी जताई कि बोर्ड में राजभाषा का कार्यान्वयन काफी ज़ोर से हो रहा है।

उद्घाटन सत्र में श्रीमती बीना एस., सहायक निदेशक(रा.भा.) ने सभा का स्वागत किया और श्रीमती विंदु रानी एन., वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने धन्यवाद अदा किया।

तदुपरांत हिंदी पखवाड़े के सिलसिले में 15 सितंबर से 26 अक्टूबर 2022 तक बोर्ड में कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। 8 अक्टूबर 2022 शनिवार को पूर्वा.10.30 बजे से नाविबो के पदाधिकारियों के बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं हाइड्रिड मोड में, प्रत्यक्ष और ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की गईं। बच्चों के लिए प्रतियोगिताएं सब जूनियर, जूनियर और सीनियर आदि तीन श्रेणियों में आयोजित की गईं। सब जूनियर और जूनियर श्रेणी में हिंदी कविता पाठ, हिंदी गान, श्रुतलेखन और हिंदी भाषण प्रतियोगिताएं चलायी गईं। सीनियर श्रेणी में हिंदी कविता पाठ, हिंदी गान, निबंध लेखन और हिंदी भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। तीनों श्रेणियों में भाषण प्रतियोगिता का विषय था 'प्रकृति का वरदान डाब'। सीनियर



बोर्ड के सचिव श्री आर.मधु कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए



श्री आर.मधु, सचिव उद्घाटन भाषण देते हुए श्री हेमचंद्र, निदेशक आशीर्वचन भाषण देते हुए

श्रेणी में निबंध लेखन प्रतियोगिता का विषय था 'खुशहाल भविष्य और जीवन के लिए नारियल की खेती करें'।

15 सितंबर से 26 अक्टूबर 2022 तक बोर्ड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए अनुवाद, हस्तलिपि, हिंदी टंकण, कविता पाठ, हिंदी गान, शब्दावली, टिप्पण व पत्र लेखन, श्रुतलेखन, अवतरण पाठ, प्रश्नोत्तरी, हिंदी वार्तालाप, अंताक्षरी, शब्दशक्ति आदि प्रतियोगिताएं चलाई गईं। मल्टी टास्किंग स्टाफ के लिए 28 सितंबर 2022 को और चालकों के लिए 10 अक्टूबर 2022 को अवतरण पाठ और श्रुतलेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

पखवाड़े का समापन समारोह 31 अक्टूबर 2022 को संपन्न हुआ। समापन सत्र में बोर्ड के सभी पदाधिकारियों ने भाग लिया।

श्री आर.मधु, सचिव, नाविबो कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रतियोगिताओं के सभी सहभागियों और पुरस्कार योजना में भाग लिए सभी पदाधिकारियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि हिंदी संघ की राजभाषा है



श्रीमती बीना एस., सहायक निदेशक (रा.भा.) स्वागत भाषण देती हुई

हुआ है। उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई थी और कहा कि हिंदी के कार्यान्वयन में बोर्ड के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सक्रिय रूप से सहभागी बनें।

तदुपरांत संपन्न पुरस्कार वितरण समारोह में बोर्ड के सचिव श्री आर. मधु ने बोर्ड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बच्चों में से दसवीं और बारहवीं कक्षाओं की परीक्षाओं में हिंदी में सर्वोच्च अंक प्राप्त बच्चों को पुरस्कार प्रदान किया। उन्होंने हिंदी पछवाड़े के सिलसिले में बोर्ड के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को तथा बोर्ड के पदाधिकारियों के बच्चों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं को विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

बोर्ड के निदेशक श्री हेमचंद्र ने टीम प्रतियोगिताओं के विजेताओं को और शब्दशक्ति प्रतियोगिता के विजेता अनुभागों को पुरस्कार प्रदान किए। उन्होंने राजभाषा हिंदी का उत्तम कार्यनिष्ठादान करने के लिए तथा आज का शब्द सबसे सुंदर ढंग से लिखने के लिए पुरस्कार प्राप्त अनुभागों को नकद पुरस्कार प्रदान किए। निदेशक महोदय ने बोर्ड के पदाधिकारियों के लिए हिंदी पछवाड़े के दौरान सर्वाधिक कार्य किए कर्मचारियों को भी पुरस्कार प्रदान किए। उन्होंने हिंदी में मूल काम करने की प्रोत्साहन योजना में सहभागी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रमाणपत्र भी वितरित किए।

और राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में सभी सक्रिय योगदान दें।

अपने आशीर्वचन भाषण में निदेशक महोदय श्री हेमचंद्र ने खुशी ज़ाहिर की कि इस कार्यक्रम का हिस्सा बनने का उन्हें अवसर प्राप्त



पुरस्कार वितरण के दृश्य

श्रीमती बीना एस., सहायक निदेशक(रा.भा.) ने सभा का स्वागत किया और डा.सूर्या प्रत्यूष, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालयों, राज्य केंद्रों और प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्मों में भी हिंदी पछवाड़ा समारोह 2022 का समुचित रूप से आयोजन हुआ। पछवाड़े के सिलसिले में अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और प्रतियोगिताओं के विजेताओं को समापन समारोह में पुरस्कार वितरित किए गए।



बोर्ड में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

बोर्ड के मुख्यालय में 15 अगस्त 2022 को स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। श्री आर. मधु, सचिव, नाविबो ने मुख्यालय के प्रांगण में राष्ट्र ध्वज फहराया। बोर्ड के अधिकारी एवं कर्मचारीगण इस अवसर पर उपस्थित हुए।

कोची के कलमश्शेरी मेट्रो स्टेशन में नीरा बिक्री काउंटर शुरू हुआ

केरल में कोची के कलमश्शेरी मेट्रो स्टेशन में नीरा और अन्य नारियल उत्पादों के बिक्री काउंटर का उद्घाटन श्री पी.राजीव, कानून, उद्योग एवं क्यायर मंत्री, केरल सरकार द्वारा 21 सितंबर 2022 को किया गया। यह बिक्री केंद्र तृश्शूर नारियल उत्पादक कंपनी के स्वामित्व में है। ओल्लूर नारियल उत्पादक फेडरेशन द्वारा उत्पादित नीरा की बिक्री प्रति लीटर 360 रुपए की दर पर काउंटर पर की जाती है। नीरा 500, 250, 200 और 100 मि.ली. पैकों में भी उपलब्ध है। नीरा के अलावा सिरका, नारियल तेल, केश तेल और अन्य मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों भी बिक्री केंद्र में उपलब्ध हैं।



श्री पी.राजीव, कानून, उद्योग एवं क्यायर मंत्री, केरल सरकार नीरा बिक्री काउंटर का उद्घाटन करते हुए

नारियल नुसखे



उसमें करेले को मध्यम आँच पर गोल्डन ब्राउन होने तक भून लें। इसे एक प्लेट में रखें।

एक मिक्सी में नारियल, लहसुन और लाल मिर्च पाउडर को एक साथ बारीकी से पीसकर अच्छा पेस्ट बनाएं। अब एक पान में 2 चम्मच तेल गरम करें, उसी में राई, सूखी लाल मिर्च, करी पत्ते आदि डालकर फ्राई करें। इसमें नारियल का पिसा हुआ मिश्रण डालें और अच्छी तरह मिलाएं। अभी इसमें फ्राइड करेला और फ्राइड नारियल (लंबा टुकड़ावाला) डालें और मिलाएं।

इन्दु नारायण

भारतीय नारियल पत्रिका की एजेंसी संबंधी शर्तें

- भारतीय नारियल पत्रिका का वार्षिक शुल्क 40 रुपए और आजीवन शुल्क 1000 रुपए है।
- एजेंसी के लिए ऐसे व्यक्ति हकदार होंगे जो कम से कम 10 ग्राहकों को दर्ज करते हों।
- एजेंटों को 25 प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा।
- ग्राहकों को दर्ज करने के बाद कमीशन काटकर बाकी रकम अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची-682011 के पक्ष में मनी आर्डर/ डिमांड ड्राफ्ट (एरणाकुलम में देय) द्वारा भेजें। मनी आर्डर का कमीशन एजेंट को चुकाना होगा।
- रकम के साथ साथ ग्राहकों के नाम व पता भी स्पष्ट रूप से लिखकर भेजें। रकम प्राप्त होते ही पत्रिका प्रत्येक ग्राहक को डाक द्वारा भेजी जाएगी।
- हमारे कार्यालय में दर्ज ग्राहकों के नाम व पता एवं पत्रिका भेजने की तारीख से एजेंट को अवगत कराया जाएगा।
- अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची-11 के पते पर संपर्क करें तो एजेंसी का आवेदन प्रपत्र मिल जाएगा।

बाजार समीक्षा

जून 2022

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव जून 2022 के दौरान कोची और आलपुष्टा बाजारों में प्रति किंवटल 14600 रुपए पर और कोशिक्कोट बाजार में प्रति किंवटल 14800 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाजार में महीने के दौरान नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 12467 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 134 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 12333 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाजार में प्रति किंवटल 8450 रुपए, आलपुष्टा बाजार में प्रति किंवटल 8400 रुपए और कोशिक्कोट बाजार में प्रति किंवटल 8750 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाजार में पेषण खोपरे का भाव महीने के दौरान प्रति किंवटल 8200 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

महीने के दौरान कोशिक्कोट बाजार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति किंवटल 13000 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 1000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 12000 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्पुर बाजार में गोल खोपरे का भाव प्रति किंवटल 13000 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 1200 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल 14200 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोशिक्कोट बाजार में सूखा नारियल का भाव प्रति किंवटल 11300 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।



नारियल

महीने के दौरान केरल के नेटुमंगाट बाजार में नारियल का भाव प्रति हजार फल 17000 रुपए पर खुला और प्रति हजार फल 5000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति हजार फल 12000 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाजार में नारियल का भाव प्रति टन 21000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति टन 1000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 22000 रुपए पर बंद हुआ।

कर्नाटक के बैंगलूरू में नारियल का भाव 20000 रुपए पर खुला और प्रति हजार फल 1000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति हजार फल 19000 रुपए पर बंद हुआ।

कर्नाटक के मॅंगलूर बाजार में नारियल का भाव प्रति टन 26000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान प्रति टन 2000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 28000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाजारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल तेल

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाजारों में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय/देशीय भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

फिलीपीन्स, श्रीलंका, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाजारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

जुलाई 2022

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव जुलाई 2022 के दौरान कोची और आलपुऱ्हा बाजारों में प्रति किंवटल 14600 रुपए पर और कोषिककोट बाजार में प्रति किंवटल 14800 रुपए पर खुला और कोची और आलपुऱ्हा बाजारों में प्रति किंवटल 200 रुपए की शुद्ध हानि के साथ बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाजार में महीने के दौरान नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 12333 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 466 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 11867 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाजार में प्रति किंवटल 8450 रुपए, आलपुऱ्हा बाजार में प्रति किंवटल 8400 रुपए और कोषिककोट बाजार में प्रति किंवटल 8750 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

पेषण खोपरे का भाव कोची बाजार में प्रति किंवटल 8450 रुपए, आलपुऱ्हा बाजार में प्रति किंवटल 100 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल 8300 रुपए और कोषिककोट बाजार में प्रति किंवटल 150 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल 8900 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाजार में पेषण खोपरे का भाव महीने के दौरान प्रति किंवटल 8200 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 250 रुपए की शुद्ध हानि के सथ प्रति किंवटल 7950 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

महीने के दौरान कोषिककोट बाजार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति किंवटल 12000 रुपए पर खुला और प्रति



किंवटल 1600 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 13600 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्पुर बाजार में गोल खोपरे का भाव प्रति किंवटल 14200 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 300 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति किंवटल 14500 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिककोट बाजार में सूखा नारियल का भाव प्रति किंवटल 11300 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 300 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल 11000 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

महीने के दौरान केरल के नेटुमंगाट बाजार में नारियल का भाव प्रति हजार फल 12000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाजार में नारियल का भाव प्रति टन 22000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

महीने के दौरान कर्नाटक के बैंगलूर में नारियल का भाव 19000 रुपए पर खुला और प्रति हजार फल 2000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति हजार फल 17000 रुपए पर बंद हुआ।

कर्नाटक के मैंगलूर बाजार में नारियल का भाव प्रति टन 28000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाजारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल तेल

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाजारों में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय/देशीय भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

फिलीपीन्स, श्रीलंका, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाजारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

अगस्त 2022

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव अगस्त 2022 के दौरान कोची और आलप्पुऱ्हा बाज़ारों में प्रति किंवटल 14400 रुपए पर और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 14800 रुपए पर खुला और कोची और आलप्पुऱ्हा बाज़ारों में प्रति किंवटल 200 रुपए और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 350 रुपए की शुद्ध हानि के साथ बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में महीने के दौरान नारियल तेल का भाव प्रति किंवटल 11867 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 267 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 11600 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 8450 रुपए, आलप्पुऱ्हा बाज़ार में प्रति किंवटल 8300 रुपए और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 8850 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति किंवटल 150 रुपए, आलप्पुऱ्हा बाज़ार में प्रति किंवटल 50 रुपए और कोषिककोट बाज़ार में प्रति किंवटल 300 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल क्रमशः 8300 रुपए, 8250 रुपए और 8550 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव महीने के दौरान प्रति किंवटल 7900 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 150 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल 7750 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

महीने के दौरान कोषिककोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति किंवटल 13600 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 550 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 13050 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्पुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति किंवटल 14400 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 500 रुपए की

शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल 13900 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिककोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति किंवटल 11000 रुपए पर खुला और प्रति किंवटल 250 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति किंवटल 10750 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

महीने के दौरान केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 13000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 22000 रुपए पर खुला और प्रति टन 500 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति टन 21500 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के दौरान कर्नाटक के बैंगलूर में नारियल का भाव 19000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 1500 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति हज़ार फल 17500 रुपए पर बंद हुआ।

कर्नाटक के मैंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 28000 रुपए पर खुला और प्रति टन 2000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 26000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

फिलीपीन्स, श्रीलंका, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय/देशीय भाव सारणी में दर्शित है।

बाजार भाव-देशीय

जून 2022

तारीख	नारियल तेल					पेषण खोपरा					खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
	(रु. / क्वि.)										(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुळा	कोषि वकोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुळा (राशि खोपरा)	कोषि वकोट	कंगयम	कोषि वकोट	तिप्पूर	कोषि वकोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर काला नारियल ¹ (1 टन)	
01.06.2022	14600	14600	14800	12467	8450	8400	8750	8200	13000	13000	11300	17000	21000	20000	26000	
04.06.2022	14600	14600	14800	12400	8450	8400	8750	8200	12500	12600	11300	17000	21000	20000	28000	
11.06.2022	14600	14600	14800	12667	8450	8400	8750	8250	13200	13600	11300	17000	22500	22500	28000	
18.06.2022	14600	14600	14800	12667	8450	8400	8750	8300	12600	14000	11300	12000	23000	22500	28000	
25.06.2022	14600	14600	14800	12600	8450	8400	8800	8300	12000	14300	11300	12000	22000	19000	28000	
30.06.2022	14600	14600	14800	12333	8450	8400	8750	8200	12000	14200	11300	12000	22000	19000	28000	

जुलाई 2022

तारीख	नारियल तेल					पेषण खोपरा					खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
	(रु. / क्वि.)										(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुळा	कोषि वकोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुळा (राशि खोपरा)	कोषि वकोट	कंगयम	कोषि वकोट	तिप्पूर	कोषि वकोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर काला नारियल ¹ (1 टन)	
01.07.2022	14600	14600	14800	12333	8450	8400	8750	8200	12000	14200	11300	12000	22000	19000	28000	
09.07.2022	14400	14400	14800	12000	8350	8300	8700	8000	11600	14000	11300	12000	22000	17000	28000	
16.07.2022	14400	14400	14800	11933	8350	8300	8700	7950	11700	13900	11500	12000	22000	17000	28000	
23.07.2022	14400	14400	14800	12000	8450	8300	8900	8100	12800	14500	11500	12000	22000	17000	28000	
30.07.2022	14400	14400	14800	11867	8450	8300	8900	7950	13600	14500	11000	12000	22000	17000	28000	

अगस्त 2022

तारीख	नारियल तेल					पेषण खोपरा					खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल		
	(रु. / क्वि.)										(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुळा	कोषि वकोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुळा (राशि खोपरा)	कोषि वकोट	कंगयम	कोषि वकोट	तिप्पूर	कोषि वकोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर काला नारियल ¹ (1 टन)	
01.08.2022	14400	14400	14800	11867	8450	8300	8850	7900	13600	14400	11000	13000	22000	19000	28000	
06.08.2022	14400	14400	14800	11933	8450	8300	8850	7950	13400	14400	11000	13000	22000	17000	28000	
13.08.2022	14400	14400	14800	11867	8450	8300	8800	7900	14100	14400	11000	13000	22500	20000	28000	
20.08.2022	14400	14400	14600	11600	8450	8300	8700	7700	13000	13500	11000	13000	22500	20000	26000	
27.08.2022	14200	14200	14600	11533	8300	8250	8650	7700	13100	13300	10750	13000	21500	17500	26000	
31.08.2022	14200	14200	14450	11600	8300	8250	8550	7750	13050	13900	10750	13000	21500	17500	26000	

¹ (स्रोत: इंपेपर, केरला कौमुदी)² (स्रोत: स्टार मार्केट बुलेटिन)³ (स्रोत: स्टार मार्केट बुलेटिन)

बाज़ार भाव-अंतराष्ट्रीय

जून 2022

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस \$ / मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस \$ / मे.ट.)				खोपरा (यूएस \$ / मे.ट.)				
	देशीय				अंतराष्ट्रीय				देशीय				
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
04.06.2022	192	250	148	266	1672	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1957	1571	944	830	971	1039
11.06.2022	180	213	146	285	1760	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1918	1605	1017	845	903	1045
18.06.2022	179	235	126	291	1684	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1918	1605	1007	811	903	1051
25.06.2022	177	224	रि.प्रा.न.	279	1637	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1596	896	761	रि.प्रा.न.	1051

जुलाई 2022

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस \$ / मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस \$ / मे.ट.)				खोपरा (यूएस \$ / मे.ट.)				
	देशीय				अंतराष्ट्रीय				देशीय				
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
02.07.2022	175	147	129	277	1600	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1682	1553	875	748	820	1032
09.07.2022	158	134	128	277	1598	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1674	1511	797	699	803	1007
16.07.2022	154	147	133	277	1515	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1703	1503	773	670	803	1001
23.07.2022	153	140	166	277	1439	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1835	1511	768	662	942	1019
30.07.2022	रि.प्रा.न.	140	रि.प्रा.न.	277	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1494	रि.प्रा.न.	674	रि.प्रा.न.	1001

अगस्त 2022

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस \$ / मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस \$ / मे.ट.)				खोपरा (यूएस \$ / मे.ट.)				
	देशीय				अंतराष्ट्रीय				देशीय				
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
06.08.2022	151	144	173	276	1397	1351	रि.प्रा.न.	1926	1497	698	657	984	997
13.08.2022	151	146	179	282	1395	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1940	1489	694	664	928	991
20.08.2022	149	145	181	282	1333	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1773	1455	675	610	967	966
27.08.2022	रि.प्रा.न.	148	178	270	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1800	1447	रि.प्रा.न.	639	941	966

* भारत : नारियल तेल - कंगयम बाज़ार, खोपरा - कंगयम बाज़ार, नारियल - पोल्लाच्ची बाज़ार



नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

मुख्यालय

डा. एन.विजयलक्ष्मी भा.प्र.से.

अध्यक्ष : 0484 2375216

डा. बी.हनुमंते गौडा

मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 2375999

श्री आर. मधु

सचिव : 2377737

कर्नाटक

श्री इ. अरवाडी

प्रभारी निदेशक,

क्षेत्रीय कार्यालय सह प्रौद्योगिकी केन्द्र

नारियल विकास बोर्ड, हूलिमायु,

बंगलेपट्टा रोड, बंगलुरु - 560076.

दृ.भा. : 080-26593750, 26593743

फैक्स : 080-26594768

ई-मेल : ro-bnglr@coconutboard.gov.in

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)

पो.बॉ.सं. 1021, केरा भवन, कोची - 682 011,

केरल, भारत

कार्यालय ईपीएबीएक्स: 2376265, 2376553,

2377266, 2377267

ग्राम्स : KERABOARD

फैक्स : 91 484 2377902

ई-मेल : kochi.cdb@gov.in

वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

असम

निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय

नारियल विकास बोर्ड, उत्तर पूर्वी

राज्य कार्यालय/ प्रशिक्षण/प्रौद्योगिकी केन्द्र,

हाउसफेड काम्पलेक्स, (छठा तल),

वायरलेल बसिष्ठा रोड, लास्ट गेट,

दिसपुर, गुवाहाटी - 781 006

दृ.भा. : (0361) 2220632

फैक्स : 0361-2229794

ई-मेल : ro-guwahati@coconutboard.gov.in

तमिलनाडु

श्रीमती बाला सुथाहरि

प्रभारी निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय,

नारियल विकास बोर्ड, रामस्वामी शालइ,

सं. 47, एफ-1,डा. रामस्वामी शालइ,

के.के. नगर, चेन्नई-600 078

दृ.भा. 044- 23662684, 23663685

ई-मेल : ro-chennai@coconutboard.gov.in,

बिहार

श्री राजीव भूषण प्रसाद

निदेशक,

किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय

नारियल विकास बोर्ड, बीएमपी तालाब के

सम्म, जगदेवपथ, फुलवारी रोड, डाक-बिहार

पशु चिकित्सा महाविद्यालय (बी.वी.सी.),

पटना-800014, दृ.भा. : (0612) 2272742

फैक्स : 0612- 2272742

ई-मेल : ro-patna@coconutboard.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

अन्धमान व निकोबार द्वीप समूह

उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड

मुख्य डाक कार्यालय के पास,

हाउस एम बी सं. 54, गुरुद्वारा लेइन,

पोर्ट ब्लेयर-744 101, दौँक्षण अन्धमान

अन्धमान व निकोबार द्वीप समूह, दृ.भा. : (03192)-233918

ई-मेल : sc-andaman@coconutboard.gov.in

आंध्र प्रदेश

सहायक निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड, डा.नं.

4-123, राजुला बाजार

रामरप्पडु डाक, जिला परिषद हाइ स्कूल के पास

विजयवाड़ा-521108, कृष्ण जिला, आंध्र प्रदेश

टेलीफैक्स नं. 0866-2842323/मोबाइल: 09866479650

ई-मेल: sc-vijayawada@coconutboard.gov.in

बाजार विकास सह सूचना केन्द्र, दिल्ली

सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड

बाजार विकास सह सूचना केन्द्र,120,

हरामगिरि-एनक्लेव, दिल्ली- 110 092,

दृ.भा.: 011-22377805, फैक्स : 011-22377806

ई-मेल : mdic-delhi@coconutboard.gov.in

महाराष्ट्र

डा. अमय देबनाथ

उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड

फ्लैट नं - 203, दूसरा तल, यूकालिट्स बिल्डिंग,

घोडगांव रोड, ठाणे (वेस्ट)-400 610, महाराष्ट्र

दृ.भा. : 022-65100106

ई-मेल : sc-thane@coconutboard.gov.in

पश्चिम बंगाल

उप निदेशक, राज्य केन्द्र,

नारियल विकास बोर्ड, डा.ए.-94 -सेक्टर-1

साल्ट लेक, कोलकाता - 700 064

दृ.भा. : (033) 23599674, फैक्स : 91 33-23599674

ई-मेल : sc-kolkata@coconutboard.gov.in

क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

क्षेत्र कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड,

एग्रिकल्चरल अर्बन हॉलसेल मार्कट (वॉल्ड मार्कट)

आनंदरा पी.ओ., तिरुवनंतपुरम - 695 029

दूरभाष, फैक्स : 0471-2741006,

ई-मेल : fo-tvprm@coconutboard.gov.in

ओडिशा

डा. रजतकुमार पाल

उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड

पितापल्ली, कुमरबस्ता डाक

खुरदा जिला - 752 055, ओडिशा

दृ.भा. : 8280067723

ई-मेल : sc-pitapalli@coconutboard.gov.in

गुजरात

राज्य केन्द्र, जूनागढ़,

बी-विंग, पहला तल, बहुमाली भवन,

राज्य हाइवे 31, दुर्वेश नगर, शाशकुञ्ज,

जूनागढ़, गुजरात - 362001

दूरभाष: 02852990230

सी आई टी. आलुवा

उप निदेशक (प्रौद्योगिकी विकास एवं उद्यमिता)

नारियल विकास बोर्ड, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र,

कीनपुरम, दक्षिण वापककुलम, आलुवा पिन-683105,

दूरभाष: 0484 2679680,

ई-मेल : cit-aluva@coconutboard.gov.in

प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म

आंध्र प्रदेश: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, वेंगिवाडा (गाँव) मकान संभंडा 688, तडिकलापुडी (द्वारा), पश्चिम गोदावरी (जिला),

आंध्र प्रदेश - 533 452, दृ.भा. : (08812) 212359, ई-मेल : f-vegiwada@coconutboard.gov.in

असम: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म नारियल विकास बोर्ड, अभयपुरी, बोंगांव, असम - 783 384

दृ.भा. : 9957694242, ई-मेल : f-abhayapuri@coconutboard.gov.in

बिहार: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, सिंहेश्वर (डाक), मधेपुरा जिला, बिहार - 852 128

दृ.भा. : (06476) 283015., ई-मेल : f-madhepura@coconutboard.gov.in

पश्चिम बंगाल: सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, फुलिया, एस्मीआई फुलिया शाखा के पास, एनएच-34,

बेलमठ डाक, नारियल, पश्चिम बंगाल- 741 402, दृ.भा. : 03473 234002, ई-मेल : f-fulia@coconutboard.gov.in

कर्नाटक: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, पुरा गाँव, लोकसारा (डाक), मंड्या जिला, कर्नाटक- 571478

दृ.भा.: (08232) 298015, ई-मेल : f-mandy@coconutboard.gov.in

कर्ळ: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, नेर्यमंगलम, पिन - 686 693

दृ.भा. : (0485) 2554240, ई-मेल : f-neriamangalam@coconutboard.gov.in

छत्तीसगढ़: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, कौडांगाँव - 494 226, बस्तर जिला

दृ.भा. : (07786) 242443, फैक्स : (07786) 242443, ई-मेल : f-kondagaon@coconutboard.gov.in

ओडिशा: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, पितापल्ली, कुमरबस्ता डाक, खुरदा जिला - 752055

दृ.भा.: 8280067723, ई-मेल : f-pitapalli@coconutboard.gov.in

महाराष्ट्र: सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, प्रबोंड फार्म, पालघर, दापोली गाँव, सतपति डाक, पालघर-401405, महाराष्ट्र

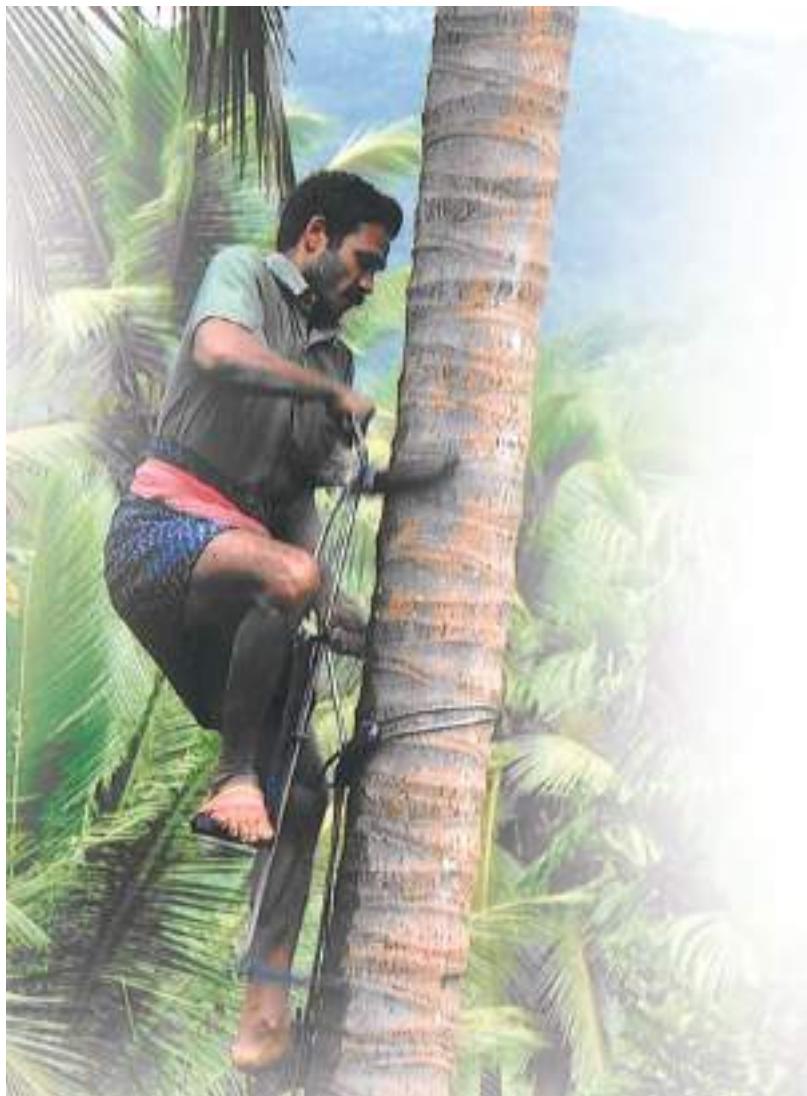
दृ.भा.: 02525 256090, ई-मेल : f-palghar@coconutboard.gov.in

तमिलनाडु: सहायक निदेशक, प्रबोंड फार्म, नारियल विकास बोर्ड, धर्ली, तिरुमूर्ति नगर डाक, उडुमलपेट, तमिलनाडु-642112

दृ.भा.: 04252 265430, ई-मेल: f-dhali@coconutboard.gov.in

त्रिपुरा: सहायक निदेशक, प्रबोंड फार्म, नारियल विकास बोर्ड, हिच्चाचरा, सकबारी डाक, जोलाइबारी(मार्ग), सबरूम, दक्षिण त्रिपुरा-799141

दृ.भा.: 038 23263059, ई-मेल : f-hitchachara@coconutboard.gov.in



आइए....

केरा सुरक्षा बीमा योजना में शामिल हो जाएं

दि न्यू इंडिया एश्योरन्स कंपनी लिमिटेड
के सहयोग से नारियल विकास बोर्ड की पहल

नारियल ताड़ारोहकों और तुड़ाईकर्ताओं
के लिए लाभप्रद दुर्घटना बीमा योजना

आगे की सोचें..
संरक्षित और सुरक्षित रहें

बीमित राशि
5 लाख रुपए
94 रुपए की नाममात्र
वार्षिक प्रीमियम के लिए

- बीमा सुरक्षा**
- चिकित्सा खर्च में राहत
 - दुर्घटना के कारण बेरोजगारी
 - दिव्यांगता
 - मृत्यु
के लिए

कौन शामिल हो सकते हैं ?

कोई भी व्यक्ति जो नारियल
ताड़ारोहण/ तुड़ाई/ नीरा तकनीशियन
के पेशे में लगा हुआ हो

आयु 18-65

आवेदन पत्र के लिए नाविबो
की वेबसाइट

<https://www.coconutboard.gov.in>
देखें/ निकटस्थ कृषि विज्ञान केंद्र
से संपर्क करें

अधिक जानकारी के लिए
कृपया संपर्क करें:

0484 2377266 एक्स्टेंशन: 255
नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन,
एसआरवी रोड, कोची-11

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
कोची, केरल, फोन: 0484-2377266, 67



Coconut Development Board

[MINISTRY OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE,
GOVERNMENT OF INDIA] KOCHI, KERALA. PH : 0484-2377266, 67